Ministry of Women
and Child Development

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

nari shakti puraskar

Compassion, Ability, Courage

नारी शक्ति पुरस्कार

करुणा, क्षमता, साहस

2018

एक नए समाज की ओर
Towards a new dawn

Ministry of Women & Child Development
Government of India
www.wcd.nic.in

Designed & Produced by Nirman Advertising Pvt. Ltd. #9811043192

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

contents

1.	Dr. A. Seema	60-61
2.	Ms. Anshu Khanna	10-11
3.	Ms. Anu Malhotra	12-13
4.	Ms. Anuradha N. Naik	26-27
5.	Ms. Chetna Gala Sinha	38-39
6.	Ms. Darshana Gupta	16-17
7.	Ms. Devaki Amma G.	56-57
8.	Ms. Delia Narayan Contractor	48-49
9.	Ms. Gowri Kamakshi B	32-33
10.	Ms. Hekhani Jakhalu	54-55
11.	Ms. Ipsita Biswas	66-67
12.	Ms. Iti Tyagi	18-19
13.	Ms. Kagganapalli Radha Devi	08-09
14.	Ms. Kalpana Saroj	20-21
15.	Ms. Lalita Vakil	76-77
16.	Dr. Madhuri Barthwal	62-63
17.	Ms. Manju Manikuttan	74-75
18.	Ms. Meenakshi Pahuja	22-23
19.	Dr. Mini Vasudevan	42-43
20.	Ms. Munuswamy Shanthi	50-51
21.	Ms. Neelum Sharma	14-15
22.	Ms. Nomito Kamdar	04-05
23.	Ms. Pamela Chhatterjee	46-47
24.	Ms. Pragya Prasun	52-53
25.	Ms. Priyamvada Singh	58-59
26.	Ms. Pushpa N. M	68-69
27.	Ms. Rahibai Soma Popere	06-07
28.	Ms. Rajni Rajak	78-79
29.	Ms. Reshma Nilofer Naha	24-25
30.	Ms. Rhea Mazumdar Singhal	72-73
31.	Ms. Ruma Devi	64-65
32.	Ms. Seema Kaushik Mehta	34-35
33.	Ms. Seema Rao	80-81
34.	Sister Shivani	82-83
35.	Ms. Smriti Morarka	30-31
36.	Ms. Snehlata Nath	40-41
37.	Ms. Sonia Jabbar	36-37
38.	Dr. Sujatha Mohan	44-45
39.	Ms. Sunita Devi	28-29
40.	Ms. Twinkle Kalia	70-71
41.	Ms. Urmi Basu	02-03

Institutioal

42.	One Stop Center/ Apaki Sakhi Asha Jyoti Kendra	84-85
43.	Qasab - Kutch Craftswomen Producer Co. Ltd.	86-87
44.	Social Welfare and Nutritious Meal Programme Department	88-89

डॉ0 ए.सीमा
व्यक्तिगत

डॉ० ए. सीमा, सेंटर फॉर मैटीरियल्स फॉर इलैक्ट्रॉनिक्स टेक्नोलॉजी (सीएमईटी) में एक वैज्ञानिक हैं। आपने स्तन कैंसर की शुरुआती पहचान और जांच के लिए पहनने योग्य एक स्क्रीनिंग उपकरण विकसित किया है। इसे संचालित करने के लिए किसी विशेषज्ञता की आवश्यकता नहीं होती और इसे परिणाम देने में केवल 30 मिनट लगते हैं। यह एक डिजिटल मैमोग्राम की तुलना में काफी सस्ता तरीका है। यह एक दर्द रहित प्रक्रिया है और महिलाओं की निजता को भी सुनिश्चित करती है। डॉ० सीमा ने स्थानीय स्वःसहायता समूहों और संगठनों की मदद से त्रिशूर और कन्नूर जिलों के विभिन्न हिस्सों में जागरूकता शिविर आयोजित किए हैं।

आपने स्तन कैंसर की जांच के बारे में जागरूकता प्रदान करने और विकसित डिवाइस का उपयोग करके नैदानिक परीक्षणों के लिए लोगों को समझाने हेतु दूरदराज के क्षेत्रों में घरों के दौरे भी किए हैं । डॉ० सीमा ने, विशेष रूप से महिला समुदाय के लाभ के लिए, विभिन्न क्षेत्रों में सेवा करने के लिए सेंसर, एक्ट्यूएटर्स और सुपर कैपेसिटर्स सहित आला क्षेत्रों में कई तकनीकों का विकास किया है।

स्तन कैंसर का पता लगाने की आपकी परियोजना को सार्वजनिक प्रशासन (नवाचार श्रेणी) में उत्कृष्टता के लिए प्रधानमंत्री पुरस्कार के लिए सर्वश्रेष्ठ दस पद्धतियों में से एक के रूप में चुना गया था। डॉ० सीमा के नवाचार को न्यूनतम प्रशिक्षण के साथ संचालित किया जा सकता है और यह पोर्टेबल है। यह किसी भी दर्द को नहीं बढ़ाता है या इसमें कोई भी विकिरण जोखिम शामिल नहीं है। इसलिए इस कम लागत वाले उपकरण से भारत में स्तन कैंसर की जांच में क्रांति आने की संभावना है और इसमें डॉ० सीमा की भूमिका महत्वपूर्ण है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: seema@cmet.gov.in

Dr. A. Seema
Individual

Dr. A. Seema, a scientist at Centre for Materials for Electronics Technology(CMET) has developed a wearable screening device for the early detection and screening of breast cancer. Further, it does not require any expertise to operate and it takes only 30 minutes to give results. This is a much cheaper method than a digital mammogram. It is a painless process and ensures privacy of the women. Dr. Seema has conducted awareness camps at various parts of Thrissur and Kannur Districts with the help of local self help groups and organisations.

She has also arranged house visits to remote areas to provide awareness on breast cancer screening and to convince people to come forward for clinical trials using the developed device. Dr. Seema has also developed many technologies in niche areas including sensors, actuators and super capacitors to serve various sectors especially for the benefit of women community.

Her project on breast cancer detection was shortlisted as one of the best ten practises for PM's award for Excellence in Public Administration (Innovations Category). Dr. Seema's innovation can be operated with minimum training and is portable. It does not inflict any pain or involve any radiation exposure and, above all, the privacy of the woman is ensured. Hence this low-cost device has a potential to revolutionise the screening of breast cancer in India and Dr. Seema's role remains critical.

For more information contact: seema@cmet.gov.in

सुश्री अंशु खन्ना
व्यक्तिगत

सुश्री अंशु खन्ना एक लेखिका, पत्रकार, प्रचारक, शिक्षाविद और शिल्पकार होने के साथ–साथ 'रॉयल फेबल्स' की संस्थापक भी हैं, जो कि भारत के तत्कालीन शाही परिवारों की कला, शिल्प और वस्त्रों को प्रदर्शित करने वाला मंच है।

'रॉयल फेबल्स' एक ऐसी मजबूत, स्व–निधियत परियोजना के रूप में उभरकर सामने आई है, जिसने महल कारखानों की परम्परा को पुनर्जीवित करने में सफलतापूर्वक सहायता की है। चाहे वस्त्र हों, कला, शिल्प, संगीत अथवा ललित कलाएं हों, इन महल कारखानों में उत्कृष्ट कला–कृतियां बनाई जा रही हैं। अंशु खन्ना ने शाही संपदा को जीवित रखने और संरक्षण की संस्कृति को पुनर्जीवित करने की दृष्टि से 'रॉयल फेबल्स' की स्थापना की, जो कि राजसी भारत की संपदा को शेष विश्व के सम्मुख रखने के प्रति समर्पित मंच है।

'रॉयल फेबल्स' ने कई महिला शिल्पकारों के जीवन को प्रभावित किया है और उन्हें आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाकर सशक्त बनाया है। यह एक ऐसी मजबूत परियोजना के रूप में उभरी है, जिसने स्थानीय गैर–सरकारी संगठनों के सहयोग से चल रहे महल कारखानों की परंपरा को पुनर्जीवित करने में सफलतापूर्वक सहायता की है। इन गैर–सरकारी संगठनों ने महिला कारीगरों को रोजगार के अवसर प्रदान किए हैं, जिससे न केवल इन महिलाओं की आजीविका में सुधार हुआ है, बल्कि इससे उनके क्षेत्र के शिल्पों और संस्कृति को पुनर्जीवित करने में भी मदद मिली है।

सुश्री अंशु खन्ना ने इस पुनरूद्धार परियोजना में योगदान देने के साथ–साथ महिला दक्षता समिति, 'सेवा' लखनऊ, ट्राईफेड, डीआईएफडब्यू, जहान–ए–खुसरो, परम्परा, अमूल इंडिया शो आदि जैसी परियोजनाओं को विकसित करने में भी सहायता प्रदान की है।

'रॉयल फेबल्स' की प्रमुख उपलब्धि को वास्तविक दस्तकारो और सस्ती विलासिता को पुनर्जीवित करना है, जिसे भारत विश्व के सम्मुख प्रस्तुत कर सकता है। इस प्रक्रिया में 'रॉयल फेबल्स' का उद्देश्य हजारों पारंपरिक शिल्पकारों, जिनमें बड़ी संख्या में महिला कारीगर भी शामिल हैं, की आजीविका के साधनों को बनाए रखने और उन्हें बेहतर बनाने में मदद करना है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: anshu.khanna@royalfables.com

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

Ms. Anshu Khanna
Individual

Ms. Anshu Khanna, a writer, journalist, publicist, educationist and a craft protagonist, is the founder of Royal Fables, an exclusive platform showcasing the art, craft and textiles of erstwhile royal families of India.

Royal Fables has emerged as a strong, self funded project that has successfully helped in reviving the tradition of palace karkhanas. Whether textiles, art, craft, music or performing arts, these palace karkhanas continue to create master pieces. It was with a vision to keep the royal legacy alive and revive the culture of patronage that Anshu Khanna founded Royal Fable; a platform dedicated to promote the legacy of Princely India to the rest of the world.

Royal Fables has touched the lives of innumerable women craftsmen and has empowered them with economic independence. It has emerged as a strong project that has successfully helped in reviving the tradition of palace kharkhanas that attach themselves to local NGOs. The NGOs in turn have provided employment to women artisans, which has not only improved their livelihood but has also helped in reviving the crafts and culture of their region.

In addition to her contributions to this revivalist project, she has helped develop projects like Mahila Dakshita Samiti, SEWA Lucknow, TRIFED, DIFW, Jahan-e-Khusrau, Parampara, Amul India Show etc.

The underlining achievement of Royal Fables may also be termed as the revival of true artisanal, affordable luxury that India has to offer to the discerning world. In the process, Royal Fables aims to go a long way in preserving and improving the livelihood of thousands of traditional craft persons, including a large number of women artisans.

For more information contact: anshu.khanna@royalfables.com

सुश्री अन्नू मल्होत्रा
व्यक्तिगत

सुश्री अन्नु मल्होत्रा सुविख्यात फिल्म निर्मात्री हैं, जिन्हें 17 राष्ट्रीय और 2 अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। अन्नु के लिए फिल्म निर्माण कोई व्यवसाय नहीं है, बल्कि एक जुनून है, जिसका अपना एक उद्देश्य है।

आपने वर्ष 1994 में बुटीक प्रोडेक्शन हाऊस के रूप में ऐम टेलीविज़न की स्थापना की और ज़ी टीवी, सोनी, बीबीसी, डिस्कवरी, अल जजीरा आदि जैसे टीवी चैनलों के लिए 600 घंटों तक गुणवत्तापूर्ण अकाल्पीनिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। आपके फिल्म निर्माण कौशलों में निर्देशन, लेखन, संपादन, सैट डिज़ाइनिंग और सर्वाधिक महत्वपूर्ण अपनी सभी टेलीविज़न श्रृंखलाओं के लिए मूल फार्मेट का सृजन करना शामिल है। पिछले दशकों में अन्नु ने अपने विचारोत्तेजक और रूचिकर वृत्त–चित्रों, अभिनव टेलीविजन कार्यक्रमों तथा क्रांतिकारी जागरुकता अभियानों के माध्यम से, जो कि सभी भारत और उसकी असीमित विविधता के लिए उपहार–स्वरूप हैं, पूरे भारत और विश्व के लोगों के जीवन और सोच को प्रभावित किया है।

'शामन्स ऑफ हिमाल्याज़ (2008–2009), द महाराजा ऑफ जोधपुर – द लीगेसी लिब्सा ऑन (2002), ट्राइबल विज़डम (2000–2002), द कॉन्यक ऑफ नागालैंड (2001), द अपातनी ऑफ अरुणाचल (2001), राजस्थान – ए कलरफुल लीगेसी (2000) तथा द रोड टू निर्वाण (2002) जैसे आपके वृत–चित्रों में भारत की अद्भुत संस्कृतियों और परंपराओं की झलक मिलती है।

अन्नु ने संपूर्ण देश का भ्रमण किया है और देश के लोगों तथा पूरे विश्व को ऐसे तरीके से भारत के दर्शन कराए हैं, जिसका प्रयास पहले कभी नहीं किया गया। अन्नु जो कि भारतीय टेलीविज़न पर यात्रा शैली के कार्यक्रमों की पथ–प्रदर्शक हैं, पुरस्कृत यात्रा कार्यक्रमों और 'नमस्ते इंडिया' (ज़ी टीवी), 'इंडिया मैजिक' तथा 'इंडियन हॉलिडे' (सोनी टीवी) जैसी श्रृंखलाओं की प्रणेता रही हैं। आपने पर्यटन विभाग के लिए अनेक विज्ञापन और बढ़ावा देने वाले कार्यक्रम तैयार किए हैं, जिनमें 'अद्वितीय भारत' फिल्मों की प्रथम श्रृंखला शामिल है।

आपने अपनी फिल्मों, टेलीविज़न श्रृंखलाओं के माध्यम से भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और जीवंत परंपराओं का वर्णन किया है। आपका मानना है कि लगातार बेरोकटोक हो रहे शहरीकरण से स्वदेशी संस्कृतियां समाप्त हो रही हैं और इसलिए यह जरूरी है कि जीवन जीने की उस परिपूर्ण और संतुष्टिदायक चिर–परीक्षित शैली को महत्व दिया जाए।

अन्नु ने अपने मौलिक कार्यों के माध्यम से यह सुनिश्चित किया है कि भारत की प्राचीनतम, संपन्न सामुदायिक और सांस्कृतिक विरासत इतिहास के पन्नों में दफन होकर न रह जाए।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: anumalhotra@aimtelevision.com, namitasikka@aimtelevision.com

Ms. Anu Malhotra
Individual

Ms. Anu Malhotra is an acclaimed filmmaker with over 17 National and 2 International awards to her credit. For Anu, filmmaking is not just a profession; it is passion with a cause.

In 1994, she set up AIM Television as a boutique production house and went on to create over 600 hours of quality non-fiction television programming for channels like Zee TV, Sony, BBC, Discovery, Al Jazeera etc. Her film-making skills encompass producing, directing, screen writing, editing, set designing and most importantly, creating original formats for all her television series.

Over past decades, Anu has transformed the lives and minds of people across India, and the world, through her thought-provoking and visually delightful documentaries, trend setting television programming and revolutionary awareness campaigns, all of which is a tribute to India and her infinite diversity.

Her documentaries such as Shamans of Himalayas (2008-2009), The Maharaja of Jodhpur-The Legacy Lives on (2002), Tribal Wisdom (2000-2002), The Konyak of Nagaland (2001), The Apatani of Arunachal (2001), Rajasthan- A Colourful Legacy (2000) and The Road to Nirvana (2002) have showcased unique cultures and traditions of India.

Anu has travelled the breadth of the country making India available to her people and the world in a way never attempted before. A pioneer of the travel show genre on India Television, Anu was the mastermind behind the award winning travel programmes and series such as 'Namaste India' (Zee TV), 'India Magic'and 'Indian Holiday' (Sony TV). She has also developed several commercials and promotional for the Department of Tourism including the first series of the 'Incredible India' films.

Through her films and television series she sought to capture India's rich cultural heritage and vibrant living traditions. She is of the belief that relentless urbanization is wiping out indigenous cultures and it is therefore important to value the wisdom and time tested ways of life that are wholesome and fulfilling.

Through her seminal work Anu has ensured that India's most ancient and profound cultures and communities do not get lost in the pages of history. Her mission was to document cultures that are fast disappearing and remind viewers of the importance of learning and sustaining their traditional wisdom.

For more information contact: anumalhotra@aimtelevision.com, namitasikka@aimtelevision.com

सुश्री अनुराधा एन. नाईक

व्यक्तिगत

सुश्री अनुराधा एन. नाईक गोवा राज्य के खोला गांव में खोला मिर्च के नाम से जानी जाने वाली मिर्च की स्थानीय किस्म की खेती और संरक्षण के कार्य में गांव की आदिवासी महिलाओं के साथ मिलकर कार्य कर रही हैं। मिर्च की इस स्थानीय किस्म के बीजों के पारंपरिक संरक्षण के लिए इन आदिवासी महिलाओं को प्रेरित करने में आपकी प्रमुख भूमिका रही है। आदिवासी महिलाओं द्वारा मिर्च की इस किस्म की खेती करने की प्रक्रिया का अध्ययन करने और उसे समझने में आपने वर्ष 2014 से बहुत प्रयास किए हैं। आपने आदिवासी महिलाओं को सशक्त बनाया है और अब वे विभिन्न प्रकार की प्रदर्शनियों में भाग लेकर अपने मूल्य संवर्धित उत्पादों को प्रदर्शित करती हैं, जिससे उनकी अतिरिक्त आमदनी हो जाती है। इन आदिवासी महिलाओं की गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए वैज्ञानिक तरीके शुरू किए गए हैं और प्रौद्योगिकीय प्रक्रिया अपनाई जा रही है।

आपने खोला मिर्च से विभिन्न प्रकार के मूल्यि संवर्धित उत्पाद तैयार करने जैसे पारंपरिक क्षेत्रों में आदिवासी महिलाओं के कौशलों को विकसित करने में भी योगदान दिया है और खोला/कानाकोना मिर्च उत्पादक समूह, जिसमें 95, आदिवासी महिलाएं हैं, के गठन और पंजीकरण में सहायता प्रदान की है। स्थानीय खोला मिर्च के कई पीढ़ियों से संरक्षण और परिरक्षण में खोला मिर्च उत्पादक समूह के योगदान के लिए उन्हें वर्ष 2016 में कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा सम्मानित किया गया।

आपने खोला गाँव की आदिवासी महिलाओं के आर्थिक और सामाजिक सशक्तीकरण को बढ़ावा देने में काफी योगदान किया है। आपने उन्हें अपनी योग्यता और प्रतिभा को प्रदर्शित करने और रोज़ी–रोटी कमाने का एक मंच प्रदान किया है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: anuradha6982@gmail.com

Ms. Anuradha N. Naik

Individual

Ms. Anuradha N. Naik has been closely working with the tribal women from Khola Village in the State of Goa in the process of cultivation and conservation of local chilli variety named Khola Chillies. She has been the key motivating force for these tribal women for the traditional conservation of the local germplasm of chilli varieties. She has made significant efforts to study and understand the cultivation process taken up by the tribal women since 2014. She has empowered tribal women who now participate and demonstrate their value added products in various exhibitions which in turn help them to achieve extra income. Scientific methods have been introduced and technological advancement has been in process to promote the activities of these tribal women.

She has also contributed in developing skills of tribal women in traditional sectors such as preparation of various value added products from Khola Chillies and has also facilitated the formation and registration of Khola/ Canacona Chilli Cultivators Group with 95% tribal women candidates. The Khola Chilli cultivators group was honoured by the Ministry of Agriculture & Farmers Welfare in 2016 for their contribution in conservation and preservation of local Khola Chillies through generations.

She has made significant contributions in promoting economic empowerment as well as social empowerment of tribal women from Khola Village and has given them a platform to showcase their abilities and talents and earn a livelihood.

For more information contact: anuradha6982@gmail.com

सुश्री चेतना गाला सिन्हा

व्यक्तिगत

सुश्री चेतना गाला सिन्हा मान देशी महिला सहकारी बैंक की संस्थापक हैं, जो भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) से ग्रामीण महिलाओं द्वारा उनके लिए सहकारिता का लाइसेंस प्राप्त करने वाला देश में पहला बैंक था। बैंक ने सफल उद्यमी बनने के लिए महिलाओं को सफलतापूर्वक वित्तीय सहायता एवं भावनात्मक सहायता प्रदान किया है। चेतना का माण देशी प्रतिष्ठान वित्तीय साक्षरता की कक्षाएं भी चलाता है जहां एकाधिकार जैसे खेलों के माध्यम से महिलाओं को बचत, बीमा एवं ऋण बारीकियाँ सिखायी जाती है। संगठन ने वित्तीय क्षितिज से आगे भी कदम बढ़ाया है तथा पश्चिमी महाराष्ट्र में मवेशी शिविरों का आयोजन करने, चकबांधों का निर्माण करने, स्थानीय रेडियो स्टेशन तथा खेल प्रतिभा खोज प्रतियोगिताएं आयोजित करने के लिए सामुदायिक पहलों के लिए एक व्यापक मंच के रूप में विकसित हुआ है – प्रतिष्ठान के अनुसार, संस्थान में व्यसाय विकास की कक्षाओं में भाग लेने के बाद ग्रामीण महिलाओं की औसत वार्षिक आय में वृद्धि हुई है।

आप केवाईसी के कठोर मानदंडों को शिथिल करने हेतु आरबीआई को राजी करके कम आय वाले समुदायों की सहायता के लिए महत्वपूर्ण परिवर्तन लाने में भी सहायक रही हैं ताकि निम्न आय वर्ग के लिए बैंक में खाता खोला जा सके। इसकी वजह से अत्यंत लोकप्रिय बुनियादी बचत बैंक जमा खाता (बीएसबीडी) का सृजन हुआ है जिसके लिए न्यूनतम बैलेंस की आवश्यकता नहीं होती है। आप 2007 में लघु महिला उद्यमियों के लिए कम लागत की पहली पेंशन योजना के निर्माण में भी सहायक रही हैं जिसने राष्ट्रीय प्रधानमंत्री अटल पेंशन योजना (2015) को प्रभावित किया तथा 2012 में अधिक व्यापक सूखा नीति तैयार करने के लिए महाराष्ट्र सरकार से सफलतापूर्वक हिमायत की है।

आप महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के राष्ट्रीय महिला कोष (आरएमके) सहित अनेक राष्ट्रीय बोर्डों में भी हैं।

आपने आसानी से अर्थशास्त्री, किसान और कार्यकर्ता की भूमिकाएं निभाई परंतु आपकी अनोखी विशेषता यह है कि आपने अपने सपने को साकार किया, जो स्थानीय संदर्भ में उपयोगी है। माण देशी के साथ यात्रा के दौरान अपने ग्रामीण समुदाय एवं वित्तीय कल्याण पर दृढ़ता के साथ बल देना जारी रखा।

आपको अनेक पुरस्कार एवं पहचान प्राप्त हुए हैं। आपको प्रदान किए गए कुछ उल्लेखनीय सम्मान हैं: इंटरप्रेनरशिप, इंटरनेशनल, पुणे द्वारा उद्यमिता विकास पुरस्कार, गॉडफ्रे फिलिप्स द्वारा गॉडफ्रे फिलिप्स बहादुरी अमोदिनी पुरस्कार, ग्रामीण उद्यमिता के लिए जानकी देवी बजाज पुरस्कार 2005 आदि।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: info@manndeshi.org.in

Ms. Chetna Gala Sinha

Individual

Ms. Chetna Gala Sinha, is the founder of the Mann Deshi Mahila Sahkari bank which was the first bank in the country for and by rural women to receive a cooperative licence from the Reserve Bank of India (RBI). The bank has successfully provided financial backing and emotional impetus to women to become successful entrepreneurs. Chetna's Mann Deshi Foundation also runs financial literacy classes, where women are taught the ropes of savings, insurances and loans through modules that comprise games like monopoly. The organisation has expanded its scope beyond its financial core and has evolved into an umbrella platform for community initiatives - organising cattle camps, building check dams, running a local radio station and sports talent hunts - in western Maharashtra. According to the foundation, there has been an increase of Rs.13,200 in the average annual income of rural women after they have taken business development classes at the school.

She also has been instrumental in driving significant changes to support low income communities by successfully advocating with the RBI to relax stringent KYC norms so that the low income groups can open bank accounts. This led to the creation of the immensely popular Basic Savings Bank Deposit accounts (BSBD) which require no minimum balance. She was also instrumental in creating the first low-cost pension scheme for women micro-entrepreneurs in 2007 which influenced the National Pradhan Mantri Atal Pension Yojana (2015) and successfully advocating with the State Government of Maharashtra to create a more comprehensive drought policy in 2012.

She is also on several national boards including the Rashtriya Mahila Kosh (RMK) of the Department of Women and Child Development.

Sinha switches between the roles of an economist, a farmer and an activist with ease. But her uniqueness lies in translating her vision into practices that work in a local context. All through her journey with Mann Deshi, Sinha's focus remained steadfast on the financial well-being of the rural community.

She has received various awards and recognition. Some notable honours conferred upon her includes: "Entrepreneurship Development Award" by Entrepreneurs' International, Pune. ,Godfrey Phillips Bravery Amodini Award by Godfrey Phillips, Janki Devi Bajaj Puraskar Award for Rural Entrepreneurship 2005.

For more information contact: info@manndeshi.org.in

nari shakti puraskar
Compassion, Ability, Courage
नारी शक्ति पुरस्कार
करुणा, क्षमता, साहस

सुश्री दर्शना गुप्ता
व्यक्तिगत

भारत में विवाह को पवित्र बंधन माना जाता है और विवाह समारोह आमतौर पर काफी भव्य होते हैं। लेकिन, समाज के कमजोर वर्गों के लिए यह एक कल्पनातीत जिम्मेवारी होती है। इससे न केवल आर्थिक बोझ पड़ता है, बल्कि बहुत से मामलों में इससे दहेज जैसी सामाजिक कुरीति को बल मिलता है। यहीं आकर सुश्री दर्शना गुप्ता की मध्यस्थता महत्वपूर्ण बन गई है।

आपने महिला सशक्तीकरण के आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए अपने पति के साथ मिलकर 'बनारसी दास गुप्ता फाउंडेशन' नामक संगठन बनाया। आपने समाज के कमजोर और वंचित वर्गों की लड़कियों के सामूहिक विवाह शुरू कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आपने अपने ही संगठन के माध्यम से अनेक सामूहिक विवाहों का आयोजन किया है। दर्शन ने अब तक कमजोर पृष्ठभूमि वाली 3500 से भी अधिक लड़कियों के विवाह संपन्न कराए हैं। दर्शन जाति, धर्म और रंगरूप का भेद किए बिना 3500 से भी अधिक लड़कियों के जीवन में परिवर्तन ला चुकी हैं। दर्शन द्वारा स्थापित फाउंडेशन द्वारा सभी वर्गों की कमजोर महिलाओं की एक समान रूप से सहायता की जाती है। फाउंडेशन द्वारा पहला कार्यक्रम पंचकुला में आयोजित किया गया जिसमें सभी जातियों और धर्मों के 251 निर्धन जोड़ों का विवाह संपन्न कराया गया। हरियाणा सरकार ने इस कार्यक्रम की सफलता से प्रभावित होकर इस प्रकार के सामाजिक कार्यक्रमों में विवाह बंधन में बंधने वाले सभी जोड़ों को 11,000/– रुपये का दान देने की घोषणा की। इसके पश्चात् बदखेड़ा, पूरनपुर और बिलासपुर में इस प्रकार के अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए। ये सामूहिक विवाह सामुदायिक सौहार्द का एक उदाहरण भी प्रस्तुत करते हैं, जहां अलग–अलग जातियों के और अलग–अलग मान्यता रखने वाले लोग एक ही छत के नीचे आकर पवित्र बंधन में बंध जाते हैं।

दर्शन द्वारा शुरू की गई सामूहिक विवाहों की पहल से वंचित वर्गों की लड़कियों की सामाजिक पीड़ा को कम करने में और व्यर्थ के ऐसे व्यय से बचने में भी मदद मिली है, जिसका इस्तेमाल शिक्षा और व्यवसायिक कौशल आदि की प्राप्ति जैसे जीवन के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में किया जा सकता है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: ag1964@gmail.com

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

nari shakti puraskar
Compassion, Ability, Courage
नारी शक्ति पुरस्कार
करुणा, क्षमता, साहस

Ms. Darshana Gupta
Individual

Marriages in India are considered sacred and the celebrations around it are usually a grand affair. However, for underprivileged section of the society it may be an unimaginable task. Not only it is economically burdening, in many cases it perpetuates social evils like dowry. This is where Ms. Darshana Gupta's interventions became critical. She formed an organization called 'Banarasi Dass Gupta Foundation' along with her husband to take women empowerment movement forward. She has played a key role in initiating mass marriages of women belonging to weaker and underprivileged sections of the society. She has organized several mass marriages through her own organization. Till date Darshan has executed marriages of over 3500 women belonging to less privileged backgrounds.

Darshan has changed the lives of 3500 women beyond demarcation of race, religion, and colour. Women no matter where they belonged were helped in an egalitarian way by her foundation. The first event was organised by the Foundation at Panchkula where 251 poor couples of all castes and religions got married. Impressed by the success of this event, Haryana Government announced donation of Rs. 11,000 to all the couples who got married in such social events. Several such events were organised in Badkheda, Puranpur and Bilaspur thereafter. These mass marriages also set a great example of communal harmony where people coming from different faiths and tribes tie the sacred knot under one roof.

Darshan's initiative of mass marriage has helped reduce social victimization of deprived girls and has helped avoid excess expenditure which can in turn be used for other significant spheres of their lives such as education, learning a professional skill etc.

For more information contact: ag1964@gmail.com

सुश्री देवकी अम्मा जी.

व्यक्तिगत

सुश्री देवकी अम्मा काफी वर्षों से केरल के तटीय जिले में वन में पेड़ उगाने वाली महिला हैं। आपकी 4 एकड़ भूमि पर कृष्णनाल और कस्तूरी जैसे कुछ दुर्लभ पेड़ लगाए गए हैं और इन्हें स्कूलों के लिए खोल दिया गया है जहां बच्चे पर्यावरण विज्ञान एवं संरक्षण से संबंधित बातों को सीखने के लिए शैक्षणिक दौरों पर आते हैं जिससे बच्चों में पर्यावरण के बारे में जागरूकता पैदा होती है।

आप भारत के विभिन्न भागों में पौधें लगाकर और उनकी देखभाल करके जीव विषमता को सुरक्षित करने के लिए निरंतर कार्य कर रही हैं। आपके इस कार्य को आपके पूरे परिवार द्वारा समर्थन दिया जाता है जो इसके संचालन में बराबर का सहयोग करते हैं। आयु ने भी आपके कार्य में कभी बाधा नहीं डाली है क्योंकि आप अभी भी क्षेत्र में लोगों को प्रेरित कर रही हैं।

आपके पति की मृत्यु भी आपकी इन इच्छाओं को नही डरा पाई। आपने रेतीली भूमि में पेड़ लगाए और उनके पेड़ों को देखने आने वाले हजारों छात्रों को चिकित्सकीय और दुर्लभ पौधों पर ज्ञान प्रदान किया। केरल में ऐलीप्पी ही एकमात्र ऐसा जिला था जहां कोई वन नहीं थे किन्तु आपके प्रयासों से आज इस जिले में भी वन स्थापित हो गया है। इन वनों में पैराडाइज फ्लाईकैचर और एमिराल डब्स जैसे विभिन्न प्रकार के पक्षी भी हैं जो क्षेत्र में स्थानीय प्रवास करते हैं। इस मिट्टी में कुछ पौधे बहुत धीमी गति से बढ़ते हैं किन्तु आपकी निरंतर देखभाल और मेहनत से उन्हें इस समस्या से पार पाने में मदद मिली है।

आपको अपने अदभुत और उत्कृष्ट कार्य के लिए विभिन्न क्षेत्रों, जिलों और राज्यों से बहुत से पुरस्कार और मान्यताएं भी मिली हैं। पर्यावरण के प्रति आपका योगदान परिवर्तन की एक ताकत रहा है और इसने लोगों में जागरूकता और चेतना पैदा की है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: gouri1268@gmail.com

Ms. Devaki Amma G.

Individual

Ms. Devaki Amma has been a forest grower in the coastal district of Kerala for many years now. Her 4-acre land has been planted with rare trees such as Krishnanal and musk trees and has been opened for schools, where children come on educational trips for learning matters of ecology and conservation, creating consciousness among children about the environment.

She has been relentlessly working towards protecting biodiversity by planting and nurturing plants from various parts of India. Devakiamma's venture is supported by entire family who equally participate in the operations. Age has never restricted Devakiamma as she continues to inspire people in the region.

Losing her husband did not deter her spirits. She planted the sandy soil and imparted knowledge on medicinal and rare plants to hundreds of students who visit them. Allepey is the only district in Kerala without a forest, but with her efforts, it has forest of its own. It has different species of birds like paradise flycatcher and emerald doves which do local migration visits to the area. Some of the plants grow very slowly in that soil, but her constant care and nurturing helps them through.

She has received many awards and recognitions from various sectors, districts and states for her unique and outstanding work. Her contribution towards the environment has been a driving force of change and has raised awareness and consciousness of people.

For more information contact: gouri1268@gmail.com

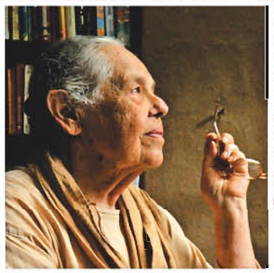

सुश्री डीलिया नारायण कॉन्ट्रेक्टर

व्यक्तिगत

पर्यटक शहर धर्मशाला से कुछ ही किलोमीटर दूर दीदी कॉन्ट्रैक्टर, रहती है जो कि 80 से 89 वर्ष के बीच की, स्वशिक्षित आर्किटेक्ट महिला हैं, और लगभग 30 वर्षों से पर्यावरण – हितेषी भवनों का निर्माण कर रही हैं।

आप बचपन में डेलिया किनाजेंगर के नाम से जानी जाती थी आपके पिता जर्मन और माता अमरीकी थी। बड़े होकर, आप एक शांतिपूर्ण जगह पर बसना चाहती थी इसलिए आपने धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश के निकट कांगड़ा घाटी में अपने लिए एक मंजिला मिट्टी के भवन का निर्माण किया। कीचड़ और मिट्टी ने इन जन्म जात कलाकार का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया और इन्होंने इस परम्परागत संस्कृति को दोबारा वापस लाने का निर्णय किया।

उन्होंने धर्मशाला को अपना घर बना लिया, और कीचड़ तथा मिट्टी से मजबूत मकान बनाने की तकनीक विकसित की जिसे स्थानीय परम्परा से काफी प्रेरणा मिली। आपके कीचड़ और मिट्टी से बनाए गए भवन पर्यावरण चुनौतियों का सामना कर रहे विश्व में लोकप्रिय हैं। ये भवन उनकी सभी प्राकृतिक वस्तुओं के प्रति अत्यधिक संवेदनशीलता एवं सराहनीयता दर्शाते हुए एक आलीशान अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिए स्वदेशी वस्तुओं एवं शैली के साथ कार्य करते हैं। प्रकृति और परम्परा के सम्मिश्रण से कार्य करना आपके लिए काफी महत्व रखता है। यह आपके द्वारा बनाए गए भवनों में ही स्पष्ट रूप से नजर आता है कि, आपके भवनों में यथासंभव कीचड़, पत्थर, गाय के गोबर, भूसा, स्लेट, बेंत तथा सीमित मात्रा में लकड़ी का उपयोग किया जाता है।

आपके द्वारा उपयोग की गई तकनीक की कुछ खास विशेषताएं हैः– जैसेकि इन घरों में तापमान स्वयं ही नियंत्रित हो जाता है (सर्दियों के दौरान गर्म और गर्मियों के दौरान ठण्डे रहते हैं), भूकम्प रोधी होते हैं और इनका निर्माण पूरी तरह से स्थानीय रूप से उपलब्ध् सामग्री द्वारा किया ही जाता है। अधिक उपयोगी और अपने आप में परिपूर्ण होने के साथ–साथ, ये घर काफी सुन्दर भी होते हैं।

आप युवा कलाकारों को प्रशिक्षण भी देती हैं जिससे उनमें पर्यावरण संबंधी संस्कार विकसित होते हैं और स्थानीय दक्षताओं का पुनरूद्धार भी होता है। आपने पूरे विश्व में एक स्थायी स्व–शिक्षित कलाकार के रूप में ख्याति प्राप्त की है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: amruta.patil@gmail.com

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

Ms. Delia Narayan Contractor

Individual

A few kilometres away from the touristy town of Dharamshala lives Delia Contractor, a self taught octogenarian architect who has been designing eco-friendly building for over three decades.

Contractor was born as Delia Kinzinger to a German father and American mother. Growing up, she wanted to settle down in a peaceful place and so, years later she built herself a one-storeyed mud building in Kangra Valley near Dharamsala, Himachal Pradesh. It was mud and clay that attracted the attention of the born-artist who later decided to bring back the traditional culture into fashion.

She made Dharamsala her home and has developed a technique to build sustainable houses with mud and stone which is inspired a lot from the local tradition. Contractor's mud and clay buildings are eclogues in a world facing ecological challenges. They merge function with vernacular material and styles to form a dignified statement, while displaying her evolved sensibilities and appreciation for all things natural. Engaging with nature and tradition matter to Contractor. This is evident in her structures that, as far as possible, utilise biodegradable materials like mud, stone, cow dung, straw, slate, bamboo, and a limited amount of wood.

The technique she uses has a few special characteristics: the houses self-regulate temperature (warm during winters and cool during summers), earthquake-proof, and are completely made from materials available locally. Apart from being high utility and self sufficient, these houses have a certain kind of serene beauty associated with them.

Ms. Contractor has also been training young artisans inculcating ecological values, and reviving local skills. Ms. Contractor is celebrated around the world as a sustainable self-taught architect.

For more information contact: amruta.patil@gmail.com

nari shakti puraskar
Compassion, Ability, Courage
नारी शक्ति पुरस्कार
करुणा, क्षमता, साहस

सुश्री गौरी कामाक्षी
व्यक्तिगत

सुश्री गौरी कामाक्षी ने जनहितैषी कार्यों के लिए अपनी अधिकांश निजी संपदा प्रदान की है, आपने परोपकारी उपायों के माध्यम से अनेक लोगों के जीवन का उत्थान किया है।

आप एसयूटी अकादमी ऑफ मेडिकल साइंसेज की सीइओ हैं तथा आपने एसयूटी अकादमी ऑफ मेडिकल साइंसेज में पिछले 5 वर्षों में वंचित वर्ग के लोगों के लिए हिस्टरेकटमी, हर्निया, थायराइड तथा वैटकोसवेन की सर्जरी करवाई है। आप शारीरिक या मानसिक रूप से विकलांग व्यूक्तियों को शिक्षा, पुनर्वास, भोजन, वस्त्र आदि प्रदान करने के लिए उनके लिए संस्थांओं का विकास करने की दिशा में कार्य कर रही हैं। आपने ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में नियमित रूप से मेडिकल कैंप लगाए हैं।

आप सामाजिक कार्यकर्त्री हैं तथा महिला सशक्तीकरण के लिए व्यापक रूप से काम किया है। पिछले 7 वर्षों से श्री कांची रायकोटि पीठम चैरिटेबल ट्रस्ट से जुड़कर आप गरीब महिलाओं के विवाह का आयोजन करने में सफल रही हैं। आपने गायों को सुरक्षित आश्रम प्रदान करने तथा गौवध से उनकी रक्षा करने के लिए गौशालाएं भी बनवाई हैं। आपने विस्थापित वरिष्ठं नागरिकों को सुरक्षित, सक्रिय, स्वस्थ एवं गरिमामयी जीवन प्रदान करने के लिए वरिष्ठं नागरिक गृहों का भी निर्माण कराया है।

आप आज भी अनेक लोगों के जीवन में परिवर्तन ला रही हैं । आप अपनी विभिन्न सामाजिक गतिविधियों के माध्यम से लोगों के जीवन में असली परिवर्तन लाने में सफल रही हैं। गरीब तबके के लोगों का उत्थान करने में आपका योगदान बहुमूल्य है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: gowri0478@yahoo.co.in

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

nari shakti puraskar
Compassion, Ability, Courage
नारी शक्ति पुरस्कार
करुणा, क्षमता, साहस

Ms. Gowri Kamakshi B
Individual

Ms. Gowri has earmarked many of her personal wealth for philanthropic activities. She has been instrumental in uplifting the lives of many individual through her non-profit interventions.

She is the CEO of SUT Academy of Medical Sciences and has regularly organized medical camps n rural and tribal areas. She has sponsored hysterectomy, hernia, thyroid and varicose veins surgeries for the underprivileged for the last 5 years in SUT academy of Medical Sciences. She has been working for developing institutions for physically handicapped and disabled or mentally challenged persons to provide them education, rehabilitation, food, clothing etc.

She is a social worker and has worked extensively women empowerment. Her association with Sri Kanchi Kamakoti Peetam Charitable Trust for the past 7 years has enabled her to organize marriages of poor women. She has conducted marriage of 250 impoverished couples primarily belonging to the Lingayat community. She has further set up gaushalas to provide a safe haven for cows and protecting them slaughtering. She has also built senior citizen homes for displaced senior citizens to ensure a safe, active, healthy and a dignified life.

She continues to be an agent f change in the lives of many. She has brought a real difference to the lives with her various social interventions. Her contribution in uplifting the lives of the less-privileged is valuable.

For more information contact: gowri0478@yahoo.co.in

सुश्री हैकानी जखालू

व्यक्तिगत

सुश्री हैकानी जखालू, जो कि पेशे से एक वकील हैं, ने नागालैण्ड के युवाओं को रोजगार और व्यवसाय के अवसर देने के लिए वर्ष 2006 में 'यूथ नैट' नामक संगठन की स्थापना की थी। भारत का पूर्वोत्तर भाग रोजगार के अवसरों के संबंध में काफी समय से एक उपेक्षित क्षेत्र माना जाता रहा है जिसके कारण इस क्षेत्र से युवाओं का भारी संख्या में पलायन हुआ है। इस अंतर को महसूस करते हुए, आपने अपनी काफी अच्छी वेतन वाली नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और वर्ष 2006 में नागालैण्ड में यूथ नैट की स्थापना की जो युवाओं को सशक्त बनाने में मदद करता है। भारतीय सर्वोच्च न्यायलय और दिल्लीं उच्च न्यायालय में प्रेक्टिस करने के बाद, आपने अपने मित्रों के एक समूह के साथ यूथ नैट नामक संगठन की शुरूआत की थी।

आपका लक्ष्य अपने संगठन के माध्यम से नागालैण्ड के बेरोजगार युवको, कॉलेज और स्कूल की पढ़ाई छोड़ने वाले युवकों तथा शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं के बीच दक्षता को विकसित करना और आजीविका की गतिविधियों को प्रोत्साहित करना था। आापका संगठन युवाओं को ज्ञान प्राप्त करने, उत्तरजीविता कौशल विकसित करने और सकारात्मक नजरिया विकसित करने में मदद करता है जिससे वे सक्रिय भागीदारी और संलग्नता के साथ समाज के स्व–निदेशक, सकारात्मक, महत्वपूर्ण, जिम्मेदार तथा रोजगार देने वाले सदस्य बनने में सक्षम हो सकें।

यूथ नैट से आपने एक रोजगार केंद्र की शुरूआत की थी जिसमें स्थानीय युवकों को मेजबानी और खुदरा क्षेत्रों में भर्ती किया जाता है। वर्तमान में यूथ नैट के अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रमों जैसे कि स्किल डेवलपमेंट, यूथ रिसोर्स सेंटर, सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर इंटर आन्ट्रप्रनर्शिप, नागालैंड ब्यूटीप्रेनुयुर, नागालैंड जॉब सेंटर, डायल नागालैंड, नागालैंड करियर एंड डेवलपमेंट सेंटर (एनसीडीसी) का संचालन किया जा रहा है।

अब तक यूथ नैट ने राज्य के ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में दक्षता विकास, क्षमता निर्माण, करियर दिशानिर्देशन, रोजगार सृजन, आजीविका गतिविधियों तथा व्यावसायिक कार्यक्रमों के माध्यम से 27,847 से भी अधिक महिलाओं को प्रभावित किया है। आप पूर्वोतर क्षेत्र की महिलाओं के लिए एक प्रेरणा स्रोत रही हैं और आपको भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में युवा विकास और सशक्तीकरण के लिए अपने योगदान के लिए कई विख्यात पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: youthnet1@gmail.com, youthnet@youthnet.org.in

Ms. Hekhani Jakhalu

Individual

A lawyer by profession, Hekani Jakhalu founded YouthNet in 2006 to give employment and entrepreneurial opportunity to youth of Nagaland. India's northeast has long been considered a neglected area when it comes to creation of employment opportunities, leading to high migration among young people. Realising this gap, Hekani resigned from her high-paying job and, in 2006, founded YouthNet in Nagaland, which helps in empowering youth. Having practiced at the Supreme Court of India and Delhi High Court, Hekani started YouthNet with a group of friends.

Hekhani through her organization aimed at developing skill and promoting Livelihood activities among the unemployed youth, college & school drop outs and women from both urban and rural areas in Nagaland. Her organization helps youth acquire knowledge, develop life skills and form attitudes to enable them to become self directing, positive, productive, responsible and contributing members of society through active participation and involvement.

With YouthNet, Hekani started a job centre, where local youth are recruited into the hospitality and retail sectors. Today, there are several programs under YouthNet such as the Skill development, Youth Resource Centre, Centre of Excellence for Entrepreneurship, Nagaland Beautypreneur, Nagaland Job Centre, Dial Nagaland and Nagaland Career and Development Centre (NCDC)

Since its inception, YouthNet has impacted more than 27,847 women, through its various programmes of skill development, capacity building, career guidance, job placements, livelihood activities and entrepreneurship programs in both rural and urban areas of the state.

Hekani has been an inspiration for women across North East and has been honoured with several prestigious awards for her contributions towards youth development and empowerment in the North Eastern Region of India.

For more information contact: youthnet1@gmail.com, youthnet@youthnet.org.in

सुश्री ईप्सिता विश्वास

व्यक्तिगत

सुश्री विस्वास पेशे से एक वैज्ञानिक हैं, जो पिछले 20 वर्षों से टर्मीनल बैलेस्टीक रिसर्च लैबोरेट्री (टीबीआरएल) डीआरडीओ में काम कर रही हैं और वर्तमान में तीन तकनीकी प्रभागों की कमान संभाल रही हैं। आप जीवन रक्षक उपकरणों के परीक्षण और मूल्यांकन, आयुध सामग्री के विशेषीकरण आदि के विभिन्न क्षेत्रों में 10 वैज्ञानिकों की एक टीम का नेतृत्व कर रही है।

आपने राष्ट्र के सशस्त्र और अर्धसैनिक बलों को उनके व्यक्तिगत सुरक्षात्मक गियर के प्रदर्शन मूल्यांकन में प्रयोगात्मक और तकनीकी सहायता प्रदान की, जो उन्हें दुश्मन के हमले से पूरी सुरक्षा प्रदान कर सकता है। सुश्री इप्सिता और उनकी टीम सशस्त्र बलों और अर्धसैनिक बलों के जवानों के लिए बुलेट–प्रूफ जैकेट और खदान संरक्षति वाहनों का परीक्षण करती हैं। आपको वैश्विक मानकों के अनुसार अत्याधुनिक बैलिस्टिक परीक्षण सुविधा स्थापित करने का श्रेय मिला है। आपने भारतीय सेना के लिए (मात्रा : 1,58,279) बुलेट प्रूफ हेलमेट और (मात्रा : 1300) लाइट स्पेशलिस्ट वाहनों के एक टेंडर का सफलतापूर्वक सैंपल इवैल्यूएशन पूरा किया। आपने सी.आर.पी.एफ. को आयुध निर्माणी, वरगाँव के माध्यम से दंगा नियंत्रण के लिए इस्तेमाल होने वाली 1 लाख कम घातक प्लास्टिक बुलैट्स सौंपी हैं।

आपने भारतीय मानक ब्यूरो के साथ मिलकर भारतीय सशस्त्र और अर्धसैनिक बलों और देश की अन्य कानून प्रवर्तन एजेंसियों द्वारा अनुसरण किए जाने के लिए बॉडी आर्मर्स (हथियारों) की न्यूनतम निष्पादन आवश्यकताओं हेतु भारतीय मानक का मसौदा तैयार किया। आपने बुलेट प्रूफ जैकेटों के लिए गुणवत्ता आवश्यकताओं के निर्धारण के लिए समिति में तकनीकी विशेषज्ञता भी प्रदान की है और सैनिकों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली वर्तमान बुलेट प्रूफ जैकेटों के वजन को कम करने और उनकी गतिशीलता बढ़ाने के लिए तरल आर्मर आधारित उन्नत व्यक्तिगत सुरक्षा प्रणाली का विकास भी किया है।

आपके बहुमूल्य योगदान के लिए, आपको टेक्नोलॉजी ग्रुप अवार्ड, आत्म–निर्भरता में उत्कृष्टता के लिए अग्नि पुरस्कार, मेधावी सेवा के लिए हैमसी टीम अवार्ड तथा शस्त्र एवं उपकरणों (भारतीय सेना) के महानिदेशक और डीएमएसआरडीई, कानपुर (डीआरडीओ) के निदेशक से प्रशंसा प्रमाण पत्र प्राप्त हुए हैं)।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: Ipsita_chd@yahoo.co.in

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

Ms. Ipsita Biswas

Individual

Ms. Biswas is a Scientist by profession, working in Terminal Ballistics Research Laboratory (TBRL), DRDO since the past 20 years and presently heading three technical divisions. She is leading a team of 10 scientists in diverse areas of test and evaluation of life saving devices, characterisation of armour material etc.

She provided protection to the armed and paramilitary forces of our nation by giving experimental and technical support in performance evaluation of their personal protective gears which can provide them complete protection from enemy attack. Ipsita and her team tests and evaluates bullet-proof jackets and mine protected vehicles for the armed forces and paramilitary jawans. She is credited with establishing a state-of-the-art ballistic test facility as per global standards. She successfully completed a Tender Sample Evaluation of (qty 1, 58,279) bullet proof helmets and (qty 1300) Light Specialist Vehicles for the Indian army. She handed over 1 lakh less lethal plastic bullets to CRPF to be used for riot control through Ordnance Factory, Varangaon.

She also drafted the Indian Standard in collaboration with the Bureau of Indian Standard for minimum performance requirements of body armours to be followed by the Indian armed and paramilitary forces and other law enforcement agencies of the country. She has also provided technical expertise in the committee for formulation of quality requirements for bullet resistant jackets, and has also initiated the development of liquid armour based advanced personal protective system to reduce weight and increase manoeuvrability of the present bullet proof jackets used by soldiers.

For her valuable contributions, she has received the Technology Group Award, AGNI Award for Excellence in Self Reliance, HEMSI Team Award for Meritorious Service and commendation certificates from the DG of Weapons and Equipments (Indian Army) and from Director, DMSRDE, Kanpur (DRDO).

For more information contact: Ipsita_chd@yahoo.co.in

सुश्री इति त्यागी

व्यक्तिगत

सुश्री इति त्यागी ने भारत के शिल्पों का प्रशिक्षण देने और विश्व में उन्हें बढ़ावा देने के लिए तथा शहरी और ग्रामीण समुदायों के बीच के अंतर को कम करने के लिए शिल्प ग्राम (क्राफ्ट विलेज) की स्थापना की। इसका उद्देश्य दुर्लभ और अनन्य पारंपरिक शिल्पों को जानने और उन्हें साझा करने के लिए एक ऐसा मंच प्रदान करना है, जहां कारीगरों को उपभोक्ताओं, उद्योग और संरक्षकों के साथ जुड़ने का अवसर प्राप्त होता है। यह पहल लाखों लोगों को रोजगार का एक प्रमुख स्रोत उपलब्ध कराने के अलावा राष्ट्रनिर्माण, आजीविका, सामाजिक समावेशन तथा संस्कृति को बनाए रखने में शिल्पों के महत्व के बारे में बच्चों शिक्षित करने के उद्देश्य से परिकल्पित की गई।

शिल्प ग्राम में शिल्पिकारों के लिए नियमित रूप से कौशल विकास कार्यक्रमों और कार्यशालाओं के माध्यम से उनके जीवन स्तर में सुधार लाने के लिए अंतर–विषयक शिक्षा प्रदान की जाती है। शिल्प ग्राम में दुर्लभ और अनन्य शिल्प कार्यशालाओं के जरिए 7500 से भी अधिक शहरी और विश्व भर के लोगों को प्रशिक्षित किया गया है। शिल्प ग्राम को नई प्रतिभाओं को सामने लाने और पारंपरिक शिल्प को आधुनिक उपभोक्ताओं के साथ जोड़ने में अभिनव दृष्टिकोण अपनाने के लिए मान्यता प्राप्त हुई है।

शिल्प ग्राम वैश्विक शिल्पों के प्रचार–प्रसार के लिए शिल्पी समुदाय, संरक्षकों, संगठनों तथा देशों के लिए हर वर्ष 15 अक्तूबर को 'अंतरराष्ट्रीय शिल्प दिवस' के रूप में मनाने में सहायक रहा है। शिल्प ग्राम ने पूरे विश्व में शिल्प के क्षेत्र में योगदान के लिए शिल्पकारों, कारीगरों, डिज़ाइनरों, व्यक्तियों/संगठनों को मान्यता प्रदान करने के लिए वर्ष 2017 में पहली बार 'अंतरराष्ट्रीय शिल्प पुरस्कार' की भी शुरूआत की। वर्ष 2018 में शिल्प ग्राम ने वास्तविक और पारंपरिक कारीगरों को विपणन संपर्क और व्यवसाय के अवसर प्रदान करके उन्हें एक वैश्विक मंच पर लाने के लिए 'भारत शिल्प सप्ताह' की शुरूआत की। यह सीमाओं को लांघ कर 'एक विश्व, एक शिल्प' बनाने का एक प्रयास है।

इति त्यागी को पूरे विश्व के कारीगरों को एक दूसरे के साथ मिलने–जुलने का एक मंच प्रदान करने के लिए लगातार पिछले वर्षों में 'राष्ट्रीय महिला अचीवर्स पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है। आज, इति का यह उद्यम पूरे विश्व में सभी कारीगरों के लिए अभिनव विचारों पर कार्य करने और परस्पर सांस्कृतिक प्रशिक्षण प्रदान करने का एकमात्र शिल्प केंद्र बन गया है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: **zephyrlifestyle@gmail.com**

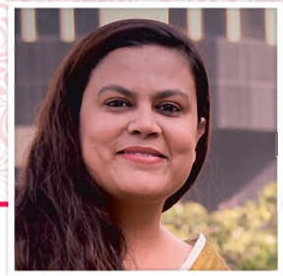

Ms. Iti Tyagi

Individual

Ms. Iti Tyagi has set up Craft Village for training and promotion of Crafts of India to the world, and to bridge the gap between rural and urban communities. The objective is to provide a platform for learning and sharing rare and exclusive traditional crafts wherein the artisans get a chance to connect with consumers, industry and patrons. This initiative was envisioned with the aim to educate children in their formative years about the importance of crafts in nation building, livelihood, social inclusion and sustainable culture besides giving major source of employment to millions of people.

Crafts village offers a trans-disciplinary education to improve the quality of life of crafts persons by providing skill development programs and workshops on regular basis. Crafts Village has trained over 7500 urban and global population through rare and exclusive crafts workshops. Crafts Village has been recognized for its innovative approach in bringing newer talents and connecting traditional crafts with modern consumers.

Craft Village has been instrumental in dedicating 15th October of every year as the "International Crafts Day" for craft community, patrons, organisations and countries to celebrate global crafts. Crafts Village has also instituted the first ever 'International Crafts Award' in 2017 to recognise craftsman, artisans, designers, individuals/organisations across the world for their contributions in craft sector.

In 2018, Crafts Village introduced 'India Craft Week' to bring the authentic and traditional artisans to a global platform by providing market linkages and business opportunities. It is an endeavour for "One World, One Craft", that transcends beyond boundaries.

Iti Tyagi has been conferred with "National Women Achievers Award" for the last consecutive years for creating a platform for the artisans around the world to interact with each other. Today, Iti's venture has become the only craft residency in the world for all artisans to come and work on innovative ideas and cross cultural training.

For more information contact: **zephyrlifestyle@gmail.com**

नारी शक्ति पुरस्कार
करुणा, क्षमता, साहस

nari shakti puraskar
Compassion, Ability, Courage

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

सुश्री कग्गनापल्ली राधा देवी
व्यक्तिगत

सुश्री के. राधा देवी महिला सशक्तिकरण की दिशा में सक्रिय रूप से कार्यरत हैं और ऐसे क्षेत्रों में, जो अधिकांशतः पुरूषों के अनुक्षेत्र समझे जाते हैं, महिलाओं के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करके जेण्डर समानता को बढ़ावा दे रही हैं।

राधा आन्ध्रप्रदेश राज्य महिला नाई संघ की अध्यक्षा और तिरूमाला तिरूपति देवस्थानम (टीटीडी) महिला नाई संघ की संस्थापक और अध्यक्षा हैं।

श्री वेंकटेश्वरा के ऐतिहासिक मंदिर में पूरे विश्व से तीर्थ यात्री आते हैं। असंख्य श्रद्धालु रोजाना अपने बाल कटाकर अपने देवी देवता को समर्पित करते हैं। यह परम्परा इस मंदिर में काफी समय से चल रही है। तथापि, काफी लंबे समय से यह मांग उठती रही है कि महिला श्रद्धालुओं के सिर के बाल काटने के लिए महिला नाई होनी चाहिए। राधा के स्वभाव की नरमी, उनकी दृढ़ प्रतिज्ञा तथा सतत प्रयासों के फलस्वरूप ही टीटीडी मंदिर के इतिहास में पहली बार तिरूमाला मंदिर के कल्याणकट्टा (मुण्डन केंद्र) में महिला नाईयों को नियुक्त करने के लिए सहमत हुए हैं। इससे पहले, अगामा पंडितों द्वारा मंदिर में महिला नाईयों की नियुक्ति के विरोध के कारण टीटीडी ने उनकी नियुक्ति को रोक दिया था। मंदिर में बहुत सी महिलाओं को नाइनों के रूप में लाभकारी नियुक्ति दिलाने में श्रीमती राधा काफी मददगार रहीं हैं। ये महिलाएं नाई ज्यादातर निर्धन समुदाय है। श्रीमती राधा अन्य महिलाओं को भी प्रशिक्षित करती रही हैं, जिससे कि वे वित्तीय रूप से आत्म निर्भर और सफल बन सकें।

श्रीमती राधा ने जेण्डर की परम्परागत धारणा को चुनौती दी है और उस क्षेत्र की अनेक महिलाओं को प्रेरित किया है। इन्हें इनके योगदान के लिए वर्ष 2017 में आन्ध्रप्रदेश सरकार द्वारा श्रम–शक्ति पुरस्कार और वर्ष 2017 में ही विशिष्ट महिला पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: radhadevittd@gmail.com

नारी शक्ति पुरस्कार
करुणा, क्षमता, साहस

nari shakti puraskar
Compassion, Ability, Courage

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

Ms. Kagganapalli Radha Devi
Individual

Ms. K. Radha Devi has been actively working towards the cause of women empowerment and promoting gender equality by providing an enabling environment for women to work in field which is largely considered as a male domain.

Radha is the President of the Andhra Pradesh State Women Barbers and the Founder and President of the Tirumala Tirupathi Devasthanams (TTD) Women Barbers.

The historic shrine of Sri Venkateswara attracts pilgrims from across the world. Each day, countless devotees shave their hair and offer it to the deity. This has for long been a tradition at the temple. However for a long time there has been a demand for female barbers to tonsure hair of women devotees. It was Radha's resilience, perseverance and continuous efforts that the TTD, for the first time in the history of the temple, agreed to appoint women barbers to work in the Kalyanakatta (tonusiring centre) of the Tirumala temple. Prior to this, in the wake of opposition to the appointment of women barbers in the temple by the Agama Pandits, their appointment had been stopped by TTD. She has been instrumental in gainfully employing many women as barbers in the temple, who belong to the Nayee Brahmin caste (the barber community) which is a largely poor community. She has also been training other women to enable them to become successful and financially independent.

She has challenged the traditional notions of gender and has inspired a number of women belonging to that region. She has also been conferred with the Srama Sakthi Puraskar by the A.P. Government in 2017 and the Visista Mahila Puraskar Award in 2017 for her contributions.

For more information contact: radhadevittd@gmail.com

सुश्री कल्पना सरोज

व्यक्तिगत

सुश्री कल्पना सरोज हजारों ऐसी महिलाओं के लिए सही अर्थों में प्रेरणास्रोत और आदर्श हैं, जो बंधनों को तोड़ना चाहती हैं। महाराष्ट्र राज्य के एक छोटे से शहर से आई कल्पना बाल विवाह होने से पूर्व सिर्फ बुनियादी शिक्षा ही पूरी कर पाई। आपकी जीवन यात्रा आसान नहीं रही है, क्योंकि आपको जाति, बाल विवाह, लड़कियों को शिक्षा के अधिकार तथा महिला रोजगार जैसे सामाजिक बंधनों के खिलाफ लड़ना पड़ा।

आज कल्पना 1000 करोड़ रुपये मूल्य के व्यापारिक उद्यम को चलाती हैं। कल्पना सरोज सभी अर्थों में योग्य और एक प्रमुख व्यवसायी महिला हैं, जिन्हें वर्ष 2013 में व्यापार और उद्योग के क्षेत्र में पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आपको एक पूरी तरह से बीमार औद्योगिक इकाई को लाभकारी संगठन के रूप में पुनर्जीवित करने और अपने पूरे जीवन में सैंकड़ों निर्धन लोगों और महिलाओं को रोजगार मुहैया कराने के लिए आपकी अग्रणी भूमिका के लिए पूरे विश्व में मान्यता प्राप्त है। प्रबंधन के छात्रों के लिए इनके उदाहरण का इस्तेमाल अध्ययन के रूप में किया जाता है।

कल्पेना विश्व–विख्यात व्यक्तित्व है और 'कल्पना सरोज फाउंडेशन' धर्मार्थ न्यास की अध्यक्ष तथा कामिनी ट्यूब्स लिमिटेड, जो कॉपर ट्यूब के विनिर्माण व्यवसाय में पुराने नामों में से एक है, की भी अध्यक्ष है। इसके अतिरिक्त, आपको भारतीय प्रबंधन संस्थान, बैंगलुरु का निदेशक, राष्ट्रीय एकता युवा मंच (महाराष्ट्र) की अध्यक्ष, विश्व शांति समिति (गैर–सरकारी संगठन) न्यूयार्क की प्रतिनिधि और संयुक्त राष्ट्र द्वारा मान्यता–प्राप्त अंतरराष्ट्रीय शांति प्रतिनिधि भी नियुक्त किया गया।

आप दलितों, पिछड़ों और वंचित लोगों, विशेषकर महिलाओं के उत्थान के लिए अपने सतत संघर्ष के लिए सुविख्यात हैं। आपने महिलाओं और दलितों के उत्थान के लिए अविरल रूप से कार्य किया है। आप रंग / जाति के आधार पर भेदभाव के विरूद्ध आवाज़ उठाने के लिए भारत सरकार की ओर से संयुक्त राष्ट्र में भेजे गए शांति शिष्ट मंडल का हिस्सा भी रहीं। आपने युवा उद्यमियों को बैंकों से ऋण की सुविधा दिलाकर रोजगार सृजन के लिए राष्ट्रीय एकता युवा मोर्चा, सुशिक्षित बेरोजगार मंडल का गठन किया।

कल्पना का दृढ़ विश्वास है कि देश का भविष्य तभी उज्जवल होगा, जब अलग–अलग पृष्ठभूमियों से जुड़ी युवा प्रतिभाओं, महिलाओं और पुरुषों, दोनों का पता लगाकर समर्थ और सशक्त बनाया जाएगा। कल्पना मार्ग में आने वाली सभी समस्याओं का सामना करते हुए देश के सर्वाधिक लोकप्रिय उद्यमियों में से एक बन गई हैं

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: info@kalpanasarojfoundation.com, kalpanasaroj@kamanitubes.com

Ms. Kalpana Saroj

Individual

Ms. Kalpana Saroj is a true inspiration and role model for thousands of women who want to break the glass ceiling. Kalpana came from a small town in the state of Maharashtra. Born into an underprivileged family, she had just basic education to her credit before she was married off as a child bride. Her journey has not been easy as she had to fight against many social stigmas like caste, child marriage, right to education for girls as well as women employment.

Today, she looks after a business enterprise of Rs. One Thousand Crore worth. Kalpana Saroj is truly a woman of substance and is today a leading business woman and winner of Padamshree Award in the field of Trade & Industries 2013. She is globally recognised for her pioneering role in turning around and reviving an absolutely sick industrial unit, making it a profit-making entity and providing employment to hundreds of poor masses and women throughout her life. It is now used as a case study for management students.

Kalpana is a globally recognised icon and the President of the charitable trust - Kalpana Saroj Foundation and the Chairperson of Kamani Tubes Ltd – one of the oldest names in copper tubes manufacturing business. Besides, she was also appointed as Director at IIM Bangalore, the Chairperson of the Rashtriya Ekta Yuva Manch (Maharashtra), a representative at the World Peace Committee (NGO), New York and the International Peace Representative recognised by UN.

She is well known for her persistent struggle for the upliftment of the down trodden, backward and the unprivileged masses and women in particular. She has worked incessantly for the upliftment of women and Dalits. She was a part of the peace delegation from Indian government to UN to protest against discrimination on the basis of colour/caste.She formed the Rashtriya Ekta Yuva Manch, the Sushikhit Berojgar Mandal to create employment by facilitating loans from banks to young entrepreneurs.

Kalpana strongly feels that bright future of the country lies in indentifying and nurturing young talent; both female and male from diverse backgrounds and by empowering them. Kalpana overcame impossible odds to become one of the most sought after entrepreneurs in the country.

For more information contact: info@kalpanasarojfoundation.com, kalpanasaroj@kamanitubes.com

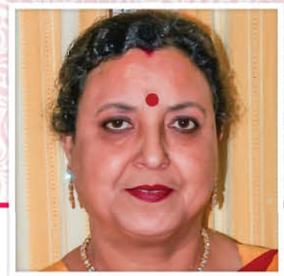

सुश्री ललिता वकील

व्यक्तिगत

सुश्री ललिता वकिल चंबा रूमाल की कशीदाकार हैं। आपका शिल्प को पुनर्जीवित करने और उसे सबसे आगे लाने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। चंबा रूमाल एक कशीदाकारी हस्तकला है जिसे कभी चंबा साम्राज्य के औपचारिक शासकों के संरक्षण में बढ़ावा दिया गया था। चंबा रूमाल के शुरुआती दिनों में, पंजाब से हाथ से बुने हुए मलनल या मल्ल पर विभिन्न प्रकार के वनस्पति रंगों में रंगे हुए रेशम के धागे से कढ़ाई की गई थी। इनका विषय पौराणिक कथाओं से प्रेरणा लेते हैं। पेंटिंग थीम्स को टेक्सटाइल पर छोटे सुई और सिल्कन धागे के रंगों के साथ ऐसी कुशल तकनीक के साथ काढ़ा जाता है कि पैटर्न दूसरी तरफ दिखाई देता है।

इस शिल्प के आकर्षण से उत्साहित, सुश्री ललिता ने इस विषय में अपना जीवन काल के करियर को बनाने के लिए इस शिल्प को गंभीरता से लेने का फैसला किया। आपने इस कला को, विशेष रूप से रेशम, टसर, वॉयल आदि जैसे कपड़ों के लिए नए डिजाइन और कौशल विकसित करके, अपना अनमोल योगदान दिया है जबकि परंपरागत रूप से यह केवल मसलिन पर ही किया जाता था। ऐसा करके, आपने कला को समकालीन जीवन शैली के लिए जीवित रखने और पनपने के लिए एक कदम आगे बढ़ाया। आपने नए आधुनिक उपयोगी पीसिज बनाए जिसमें आधुनिक संवेदनशीलता के साथ पुराने पारंपरिक डिजाइनों के सही मिश्रण को मनभावन रूप से जोड़ा हैं। आपने आधुनिक जीवनशैली की आवश्यकता के लिए इस कला को विकसित करने के लिए अपना श्रेष्ठतम योगदान दिया है। आपने वॉल–हैंगिंग, रूम–डिवाइडर (स्क्रीन), पुरुष और महिला के सजावटी परिधान, हाथ के पंखे (पंखियां), लैंप–शेड्स, बेडशीट्स, पर्दे आदि डिजाइन करने के लिए इस शिल्प का अभिनव उपयोग किया जिसने विदेशों से भी कला प्रेमी, संग्रहकत्ताओं और सौंदर्यशास्त्रियों की एक विस्तृत श्रृंखला का ध्यान आकर्षित किया।

आपने चंबा रूमाल की जटिल और लुभावनी सुंदर कढ़ाई की कला को बढ़ावा देने और संरक्षित रखने के लिए भारत में और उससे बाहर कई प्रदर्शनियों में अपना काम प्रदर्शित किया है। आपने बहुत सी महिलाओं को इस शिल्प को सीखने के लिए प्रेरित किया और उनकी मदद की है तथा उनमें से कई ने इसे अपनी आजीविका कमाने का जरिया भी बनाया है। आपको भारत सरकार और संगठनों द्वारा इस भारतीय हस्तशिल्प का प्रचार करने तथा अपना प्रदर्शन देने के लिए कई देशों जैसे जर्मनी, रोमानिया, कनाडा और नेपाल का दौरा करने के लिए प्रायोजित किया गया। आपकी देखरेख में हजारों युवा कलाकारों ने कढ़ाई का प्रशिक्षण लिया है। आपको अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर कई प्रमाण–पत्र और पुरस्कार देकर सराहना की गई है। आपने अपना संपूर्ण जीवन, अपनी विशेषज्ञता और प्रशिक्षण को अगली पीढ़ी को देकर इस अद्वितीयता को जीवित रखते हुए चंबा के पारंपरिक कला रूप के रखरखाव के लिए समर्पित कर दिया। प्रसन्नता की बात है कि आपने कला के लगभग मृतप्राय रूप को जीवित रखने के लिए अपना अमूल्य योगदान दिया है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: **naturenvakil@gmail.com**

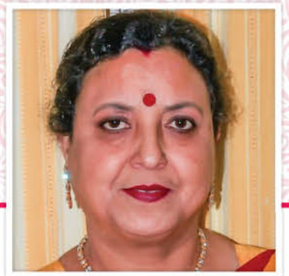

Ms. Lalita Vakil

Individual

Ms. Lalita Vakil is a Chamba Rumal Embroiderer. She has been key reviving the craft and bringing it to the forefront. The Chamba Rumal is an embroidered handicraft that was once promoted under the patronage of the formal rulers of Chamba kingdom. In the early days of Chamba Rumal, fine hand-woven muslin or mul from Punjab was embroidered with unbleached silk threads dyed in a variety of vegetable colours. The themes draw inspiration from mythology. The painting themes are translated on textiles with a tiny needle and soothing colours of silken thread with such refined technique that the pattern appears exactly same on both sides.

Fascinated with the charm of this craft, Lalita decided to take up this craft seriously to carve a life time career in this discipline. She has contributed pricelessly to this art by developing new designs and skill especially suitable for fabrics like silk, tussar, voile etc. whereas traditionally it was done on only muslin. By doing so, she took the art a step ahead to survive and thrive for the contemporary lifestyle. She created new modern day utility pieces bringing together the perfect blend of old traditional designs pleasingly fused with modern sensibility. She has rightfully contributed to evolve this art form to the need of modern lifestyle. Her innovative use of this craft to design Wall-Hangings; Room-Dividers (screens), Decorative Men and Women's Apparels, Hand fans (Pankhis), Lamp-shades, Bedsheets, Curtains etc. attracted a wide range of art lovers collectors and aestheticians from abroad as well.

She has exhibited her work in numerous exhibitions in and outside India, to promote and preserve the art form of intricate and breathtakingly beautiful embroidery of Chamba Rumals. She has also inspired and helped number of women to learn this craft and many of them have made it a way to earn their livelihood also. She was sponsored by Govt. and organizations, to tour Germany, Romania, Canada and Nepal to exhibit her work and give demonstration for the promotion of this Indian handicraft. Over thousands of young artists have undertaken embroidery training under her supervision. She has been appreciated and awarded with numerous certificates and awards at the International, National and State level. She devoted her entire life for upkeep of the traditional art form of Chamba by keeping the uniqueness alive by lending her expertise and training to the next generation. She has immensely contributed to keep alive an almost dying form of art that is a pleasure to adorn.

For more information contact: **naturenvakil@gmail.com**

डॉ. माधुरी बड़थ्वाल
व्यक्तिगत

डॉ. माधुरी बड़थ्वाल ऑल इंडिया रेडियो की पहली महिला संगीतकार हैं। आपने पिछले 60 वर्षों से उत्तराखंड के लोक संगीत पर लगातार काम किया है। आप पहली गढ़वाली महिला संगीतकार थीं, जो संगीत शिक्षिका बनीं। आपने सैकड़ों लड़कियों और महिलाओं को लोक संगीत सिखाया है और उनमें से कई ने इसे एक करियर के रूप में अपनाया है।

आपने रेडियो पर कार्यक्रम 'धरोहर' का प्रसारण किया, जो लोक संगीत और स्थानीय विरासत के संरक्षण पर आधारित था। ऑल इंडिया रेडियो के साथ अपने काम के दौरान आपने अपने संगीत का प्रसारण महिलाओं, बच्चों, युवाओं, ग्रामीण क्षेत्रों और कृषि के क्षेत्रों से संबंधित कार्यक्रमों में किया। आपने अपना जीवन लोक संगीत और उसके संरक्षण के लिए समर्पित कर दिया है। आपने अपने शहर में और उसके इर्द–गिर्द कई महिलाओं और युवा लड़कियों के लिए एक मिसाल कायम की है, जो बड़े उत्साह के साथ अपने काम में अग्रगण्य होती हैं।

आप एक व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त महिला क्षेत्रीय लोक संगीतकार हैं और आपको कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: madhuribarthwal@gmail.com

Dr. Madhuri Barthwal
Individual

Dr. Madhuri Barthwal is the first Female Music Composer of All India Radio. She has worked relentessly with Uttarakhand folk music for last 60 years. She was the first Garhwali female musician who became a music teacher. She has taught hundreds of girls and women the folk music and several of them have taken it as a profession.

She broadcasted the programme 'Dharohar' on radio which was based on preserving folk music and local heritage. During her work with All India Radio she broadcasted her music in programmes related with areas of women, children, youth, rural regions, and agriculture. She has dedicated her life towards folk music and its preservation. She has set an example for many women and young girls in and around her town by excelling in her work with great passion.

She is a widely recognized female regional folk musician and been honoured with many prestigious awards.

For more information contact: madhuribarthwal@gmail.com

सुश्री मंजू मणिकुट्टन

व्यक्तिगत

साहस और शक्ति का प्रदर्शन करने वाली महिलाओं की अनगिनत कहानियाँ हैं। ऐसी ही एक कहानी सऊदी अरब के दम्माम से सुश्री मंजू मणिकुट्टन की है। केरल में जन्मी और पली–बढ़ी, सुश्री मंजू की काम और सामाजिक कार्यों के लिए जुनून के माध्यम से सऊदी अरब में अपनी पहचान है। सुश्री मंजू ने सऊदी अरब में भारतीय महिलाओं के जीवन में एक महत्वपूर्ण बदलाव किया है।

पिछले 5 वर्षों में, आपने सऊदी अरब में घर की नौकरानियों, घरेलू कामगारों, अस्पताल कर्मियों, ब्यूटीशियन आदि के रूप में काम करने के लिए आई उन सैकड़ों महिलाओं, जिन्होंने अपने प्रायोजकों के साथ समस्याओं का सामना किया, जो गंभीर स्वास्थ्य मुद्दों से पीड़ित थीं, जिनकी कमज़ोर कानूनी श्रमिक समस्याएं थीं और वीजा मुद्दे संबंधी मामलों को हल किया। आपने कई भारतीय महिलाओं को भारत वापस आने और उनकी सभी आवश्यक कानूनी औपचारिकताओं को पूरा करने की सुविधा प्रदान करके आर्थिक मदद की है।

रियाद में भारतीय दूतावास आपको एक प्रतिबद्ध सामाजिक स्वयं सेवक के रूप में पहचानता है और भारतीय महिला श्रमिकों से संबंधित मामलों में आपकी भागीदारी को अधिकृत किया है। उनकी प्रतिबद्धता और विदेशी भूमि में भारतीय महिलाओं की मदद करने की उनकी इच्छा सराहनीय है। सऊदी अरब में भारतीय समुदाय द्वारा आपके मानवीय हस्तक्षेप को भी महत्व दिया जाता है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: manjudammam@gmail.com

Ms. Manju Manikuttan

Individual

There are innumerable stories of women demonstrating courage and strength. One such story is of Ms. Manju Manikuttan from Dammam, Saudi Arabia. Born and brought up in Kerala, Manju has her mark in Saudi Arabia through work and passion for social work. Manju has made a significant difference to the lives of Indian women in Saudi Arabia.

In the last 5 years , Manju Manikuttan has solved hundreds of cases of women who came to Saudi Arabia to work as house maids, domestic workers, hospital workers, beauticians etc and face problems with their sponsors, suffer from critical health issues, undergo legal and labour problems and visa issues. She has financially supported many Indian women by facilitating their travel back to India and completing all the necessary legal formalities.

Indian Embassy in Riyadh recognises her as a committed social volunteer and has authorised her involvement in cases relating to Indian women workers. Her commitment and her desire to help the Indian women in a foreign land is remarkable. Her humanitarian interventions are also valued by the Indian Community in Saudi Arabia.

For more information contact: manjudammam@gmail.com

nari shakti puraskar
Compassion, Ability, Courage
नारी शक्ति पुरस्कार
करुणा, क्षमता, साहस

सुश्री मीनाक्षी पाहूजा

व्यक्तिगत

सुश्री मीनाक्षी पाहूजा, जो कि अंतरराष्ट्रीय स्तर की तैराक हैं, वर्ष 2006 में लेडी श्रीराम महिला कॉलेज में शारीरिक शिक्षा की सहायक प्रोफेसर बनीं। आपने महिलाओं को खेलकूद के लिए प्रोत्साहित करने और पूरे देश में खेलकूद में रूचि रखने वाली लड़कियों तक पहुंचने के लिए अथक प्रयास किए हैं। आपने तैराकी में अपनी रूचि बनाए रखते हुए विभिन्न प्रकार की योग्यताएं और क्षमताएं रखने वाली युवतियों और छात्राओं के जीवन में मददगार की भूमिका निभाई है।

आपकी छात्राओं ने अंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय और राज्य स्तर की प्रतियोगिताओं में ख्याति प्राप्त की है। इन दिनों आप पूरे विश्व में समुद्रों में तैराकी कर रही हैं और 11 वर्षों तक राष्ट्रीय पदक विजेता रही हैं। आपने वर्ष 1996 में साउथ कोरिया के पुसान में आयोजित 10वीं एशिया प्रशांत आयु वर्ग की तैराकी प्रतियोगिता में कांस्य पदक जीत कर देश का गौरव बढ़ाया। दो बार (वर्ष 2013 और वर्ष 2016) आपका नाम लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्डस् में दर्ज किया जा चुका है।

आप तैराकी में सभी आयु वर्ग की महिलाओं और लड़कियों की अनुदेशक रही हैं और इसे भलाई के काम के रूप में कर रही हैं । आप शारीरिक शिक्षा, स्वास्थ्य और तंदरुस्ती, करियर परामर्श, शारीरिक शिक्षा और खेलकूद में अवसर, तैराकी और स्वास्थ्य तथा खेलकूद प्रबंधन जैसे अनेक विषयों पर अलग–अलग स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में कार्यशालाएं, व्याख्यान और संगोष्ठीयां आयोजित करती रही हैं।

आप पांच दिनों में पांच झीलों में – टैक्स रोबर्ट्सन हाईलैंड लेक्स चैलेंज 2010 में, की वैस्ट, फ्लोरिडा, 2011 में और लेक ट्रैविस, ऑस्टिन टैक्सस, यूएसए, 2011 में सफलतापूर्वक तैरने वाली तथा मैनहट्टन, न्यू यार्क सिटी के चारों ओर 28.5 मील (48 किमी.) तैराकी, जिसमें आपका तीसरा स्थान रहा, में सफलतापूर्वक भाग लेने वाली प्रथम भारतीय महिला तैराक हैं।

आप ओपन वॉटर क्षेत्र में कई प्रकार से अग्रणी हैं और आपकी उपलब्धियों के लिए आपको प्यार से 'अनसिंकेबल वूमन' कहा जाता है। आपको तैराकी के प्रति अपनी लगन को जारी रखने तथा कई और जलाशयों को पार करके देश का गौरव बढ़ाने की उम्मीद है। अन्य लोगों को उपलब्धियां हासिल करने में मदद करके और छोटी लड़कियों और महिलाओं की अगली पीढ़ी को अपने लंबे अनुभव का लाभ देकर उनके जीवन में बदलाव लाने की आपको पूरी उम्मीद है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: **menakshipahuja@gmail.com**

nari shakti puraskar
Compassion, Ability, Courage
नारी शक्ति पुरस्कार
करुणा, क्षमता, साहस

Ms. Meenakshi Pahuja

Individual

International level swimmer Ms. Meenakshi Pahuja, became an Assistant Professor of Physical Education in Lady Shri Ram College for Women in the year 2006. She has extensively worked and encouraged women to take up sports and has reached out to aspirants across the country. She has played an instrumental role in the lives of young women and students with different abilities keeping an interest in swimming.

Her students have excelled at International, National and State level competitions. She is currently swimming open waters world over and has been national medallist for eleven long years. She has brought laurels to the country by winning a Bronze Medal at 10th Asia Pacific Age Group Aquatic Meet held at Pusan, South Korea, 1996. She has twice been a LIMCA BOOK RECORD holder (2013 and 2016).

She has been a swimming instructor to women and girls of all age groups and continues to do it as welfare activity. She has been conducting workshops, lectures and seminars at different schools, colleges and universities on several topics such as physical education, health & wellbeing, career counselling, avenues in physical education and sports, swimming & health and sports management.

She is the first Indian to successfully swim 5 lakes in 5 days- Tex Robertson High Land lakes Challenge, 2010, the first Indian to swim around Key west, Florida, 2011 and Lake Travis, Austin Texas, USA, 2011 and the first Indian to participate and swim 28.5 miles (48kms) successfully around Manhattan, NYC and was ranked 3rd.

Meenakshi Pahuja is pioneer in many ways in the field of open water and is fondly called the 'unsinkable women' for her achievements. She hopes to continue her passion for water and explore many more water bodies and make the country proud. She also hopes to make a difference by helping others achieve and pass on her rich experience to the next generation of young girls and women.

For more information contact: **menakshipahuja@gmail.com**

डॉ0 मिनी वासुदेवन

व्यक्तिगत

पेशे से दूरसंचार इंजीनियर डॉ० मिनी वासुदेवन पशु कार्यकर्त्री हैं तथा भारत के साथ – साथ विदेशों में भी कई वर्षों से पशु कल्याण की गतिविधियों से जुड़ी हुई हैं। आप ह्यूमेन एनिमल सोसायटी (एचएएस) की संस्थापक तथा प्रबंध न्यासी हैं जिसे 2008 में भारतीय पशु कल्याण बोर्ड द्वारा मान्यता प्रदान की गई है। आपने अपने संगठन एचएएस के माध्यम से कोयम्बटूर नगर निगम के साथ एमओयू के तहत पशु जन्म नियंत्रण (एबीसी) तथा एंटी रेबीज़ टीकाकरण (एआरवी) कार्यक्रम चलाती हैं।

एचएएस आवश्यकता के अनुसार पुनर्वास करने / पुनः बसाने के लिए परित्यक्त एवं घायल पशुओं का बचाव एवं उपचार भी करता है। यह पशु कल्याण तथा पर्यावरणीय संपोषणीयता के विभिन्न पहलुओं पर बच्चों तथा आम जनता को शिक्षित करने के लिए ह्यूमेन सोसायटी इंटरनेशनल (एचएसआई), भारत के सहयोग से मानवोचित शिक्षा कार्यक्रम भी चलाता है तथा भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51(क)(छ) के अनुसरण में सभी प्रजातियों के प्रति दया भाव रखने के लिए उनको संवेदनशील भी बनाता है।

आपका यह प्रबल विश्वास है कि फर्क करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना जीवन बनाना। आपके संगठन द्वारा अनेक पशु दत्तक ग्रहण शिविर लगाए जाते हैं। इन शिविरों में पशुओं का निरीक्षण किया जाता है, टीके लगाए जाते हैं और निःशुल्क बंध्याकरण किया जाता है।

आप फेडरेशन ऑफ इंडियन एनिमल प्रोटैक्शन आर्गेनाइजेशन (एफआईएपीओ) के गवर्निंग बोर्ड की सदस्य भी हैं तथा भारत में असंख्य पशुओं, जिनका शोषण एवं उत्पीड़न होता है, के जीवन में बदलाव लाने में योगदान किया है।

nari shakti puraskar
Compassion, Ability, Courage
नारी शक्ति पुरस्कार
करुणा, क्षमता, साहस

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: minivas@ieee.org

Dr. Mini Vasudevan

Individual

A telecommunications engineer by profession Dr. Mini Vasudevan is a passionate animal activist who has been involved with animal welfare activities for several years both in India as well as abroad. She is the founder and managing trustee of Humane Animal Society (HAS) recognised by the Animal Welfare Board of India in 2008. Through her organisation HAS she undertakes Animal Birth Control (ABC) and Anti Rabies Vaccination (ARV) program under MoU with Coimbatore Municipal Corporation.

HAS also rescues and treats abandoned and injured animals to rehabilitate/re-home as required. It also conducts Humane education program in collaboration with Humane Society International (HSI), India to educate children and public on various aspects of animal welfare and environmental sustainability and also sensitise them on being kind and compassionate to all species upholding article 51(a) g of Indian constitution.

Mini strongly believes that making a difference is as important as making a living. Several animal adoption camps are organized by her organization. In these camps animals are inspected, vaccinated and provided free of cost sterilization.

Dr. Mini Vasudevan has also been a part of the governing board of Federation of Indian Animal Protection Organisations (FIAPO) and contributed towards making difference to the lives of countless animals in India who are abused and tortured.

nari shakti puraskar
Compassion, Ability, Courage
नारी शक्ति पुरस्कार
करुणा, क्षमता, साहस

For more information contact: minivas@ieee.org

nari shakti puraskar
Compassion, Ability, Courage
नारी शक्ति पुरस्कार
करुणा, क्षमता, साहस

सुश्री मुनुस्वामी शांति
व्यक्तिगत

सुश्री मुनुस्वामी शांति सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र के एसजी प्रबंधक के पद पर तैनात एक ख्याति प्राप्त महिला वैज्ञानिक/अभियंता है। मौसम विज्ञान और पवन प्रोफाइलर इंस्ट्रूमेंटेशन और रेंज संचालन में आपने विज्ञान और प्रौद्योगिक क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है और अभी भी पूरे देश में युवा वैज्ञानिकों को प्रेरित कर रही हैं। आपने उन्नत तकनीक और हार्डवेयर पर कार्य किया है।

आपने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में गुणवत्तापरक कार्य किया है।

आपके द्वारा किए गए कुछ प्रमुख कार्यों में वर्ष 2014 में प्रक्षेपित वाहनों की डाउन रेंज कमांडरी के लिए पोर्ट ब्लेयर में प्रथम टेली कमाण्ड स्टेशन का शुरू किया जाना शामिल है। इसके अतिरिक्त आपने कई जांच और विश्लेषण द्वारा शार टेली कमांड चेन में से एक में आन बोर्ड वाहन कमाण्ड के गैर निष्पादन के कारणों का पता लगाया जिसके निष्कर्षों को आईएसआरओ के अंत केंद्रीय समिति के समक्ष भी प्रस्तुत किया गया था। आप नवीन उपकरणों के साथ मौसम विज्ञान प्रणालियों को विकसित करने तथा सभी मौसम विज्ञान उपकरणों के दूर–दराज के आंकडों का अधिग्रहण करने के लिए भी उतरदायी थी। आप, भारत में अपनी तरह के पहले प्रभावशाली विंड प्रोफाइलर रडार के संचालन के लिए भी उत्तरदायी थी। आपने मोबाइल विंड प्रोफाइलर तैयार किया है जिसका उपयोग इसरो की भावी उडानों तथा राष्ट्रीय स्तर पर मौसम की भविष्यवाणी करने के लिए उड़ान वाले स्थल के निकट हवा की गति को मापने के लिए किया जाता है। इसके अलावा आपने। लॉन्च वाहन टेलीमेट्री प्राप्त करने और सभी निचले जमीनी स्तर के स्टेशनों की स्थिति का अधिग्रहण करने के लिए सॉफ्टवेयर भी विकसित किया। आपने अंतरिक्ष में रियल टाइम स्पेस क्राफ्ट विसंगतियों को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और सही समय पर कार्यवाही की है। जिससे दुर्घटनाओं तथा जोखिमों में कमी आई है।

आप सौपें गए तकनीकी उतरदायित्वों को निभाने के लिए अन्य महिलाओं के लिए प्रोत्साहन का मुख्य स्रोत भी रही हैं।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: shanty.ms@shar.gov.in, hanumanshanti@gmail.com

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

nari shakti puraskar
Compassion, Ability, Courage
नारी शक्ति पुरस्कार
करुणा, क्षमता, साहस

Ms. Munuswamy Shanthi
Individual

Ms. Munuswamy Shanthi, is a notable women scientist/engineer- SG Manager Meteorology and Wind Profiler Instrumentation and Range operations at Satish Dhawan Space Centre. She has done remarkably well in her field and continues to inspire young scientists across the country. She has worked and handled sophisticated technology and hardware. She has done quality work in the field of science and technology.

Some of the most noteworthy work undertaken by Shanthi includes commissioning the first Tele Command Station at Port Blair for down range commanding of Launch vehicles in the year 2014. She further identified the reasons for non-execution of on-board vehicle commands in one of the SHAR Tele command chain during ground checks, through numerous tests and analysis findings of which were submitted to ISRO Inter-centre committee. She was also responsible for augmenting Meteorology systems with new instruments and implementing remote data acquisition of all Meteorology Instruments. She was responsible for the operationalization of the active phased array Wind Profiler Radar, first of its kind in India. Shanthi has designed a Mobile Wind Profiler which is used to measure wind speed close to launch site for ISRO future flights and for predicting numerical weather at the national level. Further she has developed software to receive launch vehicles telemetry and to acquire the status of all down range ground stations. Shanthi has played a critical role in handling real time space craft anomalies in orbit space and has taken action at the correct moment, thus avoiding contingency and fatalities.

She has also been a key source of motivation for other women to handle assigned technical responsibilities.

For more information contact: shanty.ms@shar.gov.in, hanumanshanti@gmail.com

सुश्री नीलम शर्मा

व्यक्तिगत

सुश्री नीलम शर्मा डी डी न्यूज में वरिष्ठ उद्घोषिका/संवाददाता हैं। आप राष्ट्रीय ख्याति–प्राप्त मीडिया कर्मी हैं और महिला सशक्तीकरण, सामाजिक न्याय, सामाजिक न्याय, सामुदायिक और ग्रामीण विकास, पर्यटन आदि जैसे विषयों पर 60 से भी अधिक वृत–चित्रों का निर्माण करने वाली सुविख्यात फिल्म निर्मात्री हैं। आपको इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में कथा लेखन, अनुसंधान और उद्घोषण का 20 वर्षों से भी अधिक का अनुभव प्राप्त है। आप राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय रेडियो सेवाओं से जुड़ी हुई अनुभवी प्रसारणकर्ता हैं।

नीलम शर्मा हमेशा से ही महिला सशक्तीकरण की प्रबल समर्थक रही हैं और आपने अपनी रचनाओं के माध्यम से महिला अधिकारों, विशेषकर सीमांत वर्गों की महिलाओं के अधिकारों के समर्थन को प्रदर्शित किया है। आप अपनी रचनाओं के माध्यम से हमेशा से ही महिला–पुरुष समानता और महिला सशक्तीकरण को बढ़ावा देती रही हैं। इस संबंध में दूरदर्शन समाचार चैनल पर 'तेजस्विनी' नामक महिला–केंद्रित कार्यक्रम की संकल्पना और प्रस्तुतीकरण में आपका योगदान उल्लैखनीय है। यह कार्यक्रम वर्ष 2014 में शुरू किया गया था और इस कार्यक्रम ने पूरे देश में उपलब्धियां हासिल करने वाली महिलाओं को अपने–अपने अनुभव साझा करने का एक मंच प्रदान किया है। 'तेजस्विनी' समर्थ और प्रेरणा–स्रोत भारतीय महिलाओं के जीवन, उनके सफर, चुनौतियों और सफलताओं की कहानी है।

नीलम ने पिछले कई वर्षो से भारत के दूर–दराज के क्षेत्रों में रहने वाली और उपलब्धियां हासिल करने वाली महिलाओं को मेहनत करके खोज निकाला है। इन महिलाओं ने सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक आजादी के क्षेत्र में बहुत योगदान दिया है और दूरदर्शन पर उनके जीवन के प्रसारण के पश्चात् उन्हें व्यापक रूप से मान्यता मिली है। ये मुक्ति महिलाएं 'तेजस्विनी' कार्यक्रम देखने वाली लाखों महिलाओं के लिए आदर्श बन गई हैं। नीलम की गहन खोज और परिश्रम के कारण दूरदर्शन न्यूज़ अब तक 160 से भी अधिक 'तेजस्विनीं' की कहानियां दिखा चुका है। इसके अलावा, उपलब्धियां हासिल करने वाली महिलाओं के साथ नीलम का साक्षात्कार करने का तरीका भी विलक्षण है और दर्शकों ने इसकी भूरि–भूरि प्रशंसा की है।

अस्थायी संकाय के रूप में भी नीलम कई मीडिया संस्थानों से जुड़ी हैं। नीलम को उनके अनुकरणीय कार्यों के लिए विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जिनमें सर्वोत्तम समाचार प्रस्तुतकर्ता पुरस्कार, सर्वोत्तम डीडी समाचार प्रस्तुतकर्ता पुरस्कार, वर्ष की सर्वोत्तम समाचार प्रस्तुतकर्ता पुरस्कार, आधी आबादी पुरस्कार, मीडिया महारथी पुरस्कार तथा केपीएस गिल निर्भीक पत्रकार पुरस्कार शामिल है।

आपके कार्यक्रम ने बहुत से लोगो के जीवन को बदल दिया है और देशभर में सैंकड़ों महिलाओं को बदलाव के लिए प्रेरित किया है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: neelamddnews@gmail.com

Ms. Neelum Sharma

Individual

Ms. Neelum Sharma is a senior anchor/correspondent at DD News. She is a media personality of national repute and is a widely acclaimed film maker with more than 60 documentaries to her credit on subjects like women empowerment, social justice, community and rural development, environment etc. She has more than 20 years of experience in scripting, research and anchoring in electronic media. She is a seasoned broadcaster associated with national and international radio services.

Neelum Sharma has always been a strong advocate of women empowerment and has demonstrated her support for women's rights, especially rights of the marginalized section of women through her work. She has been consistent in promoting the cause of gender equality and women's empowerment through her work. In this regard, her contribution in conceptualizing and presenting a Women Centric programme, 'Tejasvini' on Doordarshan News Channel is worth mentioning. This programme was started in the year 2014 and has given a platform for Women Achievers across the country to tell their stories. 'Tejasvini' delves into the lives, journeys, challenges and successes of strong, inspirational Indian women.

Neelum, over the years, has diligently dug out women achievers from remotest corners of India. These women have made great contributions in the field of social, political and economical emancipation and have been widely acknowledged after their telecast on Doordarshan. These emancipated women have been role models to millions of women watching 'Tejasvini' programme. Due to Neelum's tremendous research and hard work, Doordarshan News has been able to showcase more than 160 "Tejasvinis" so far. Besides, her way and manner of interviewing women achievers is remarkable and highly appreciated by the viewers.

Neelum is also associated with many media institutes as visiting faculty. For her exemplary work, she has been conferred with various awards including the Best News Anchor Award, Best DD News Anchor Award, News Anchor of the Year Award, Aadhi Aabadi Award, Media Maharathi Award and the KPS Gill Fearless Journalist Award.

Her programme has changed many lives and continues to inspire hundreds of women across the country to be agents of change.

For more information contact: neelamddnews@gmail.com

सुश्री नोमीतो कामदार

व्यक्तिगत

सुश्री नोमीतो कामदार 'दि एडवेंचरर्स – ए वाइल्डरनैस स्कूल' नामक अलाभकारी संगठन चला रही हैं। यह संगठन पिछले ढाई दशकों से भी अधिक समय से बाहरी शिक्षा, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक विकास को बढ़ावा दे रहा है। नोमीतो ने पर्यावरण संबंधी मुद्दों के बारे में लोगों में जागरूकता लाने करने में प्रमुख भूमिका अदा की है और इस प्रकार पश्चिमी घाट क्षेत्र में प्राकृतिक सौहार्द्र को बहाल किया है।

मूल संगठन 'दि एडवेंचरर्स – ए वाइल्डरनैस स्कूल' के तत्वाधान में होनेमराडू स्थित 'इंडियन इंस्टीट्यूट फॉर एडवेंचर एप्लीकेशन' (आईआईएए) इच्छुक छात्रों के लिए एडवेंचर एप्लीकेशन्स में पाठयक्रम चलाता है।

'दि एडवेंचर' के प्रकृति के साथ सह–अस्तित्व के दर्शन के अनुरूप वर्ष 1992 में होनेमराडू में एक जल–क्रीड़ा केंद्र स्थापित किया। लिंगानमक्की जलाशय शरावती के तट पर स्थित होने के कारण यह जल–क्रीड़ा केंद्र साहसिक खेलकूद और प्रकृति के अध्ययन का एक आदर्श संयोग बनाता है। इंडियन इंस्टीट्यूट फॉर एडवेंचर एप्लीकेशन्स साहसिक खेलकूद तथा पारिस्थिकी–पर्यटन क्रियाकलापों के माध्यम से बाहरी शिक्षा पर्यावरण सरक्षण, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास को बढ़ावा दे रहा है।

सुश्री नोमीतो का संगठन एक जैसी विचारधारा रखने वाले लोगों तथा पश्चिमी घाटों के स्थानीय लोगों के साथ मिलकर कार्य कर रहा है और प्राकृतिक क्षेत्रों के संरक्षण और विकास के कार्यों से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा है। ट्रैकिंग, रॉक क्लाइम्बिंग, जल–क्रीड़ा जैसी साहसिक गतिविधियों के जरिए अगुवाई करने वाले इस संगठन का उद्देश्य, प्रकृति के प्रति लोगों के रवैये को बदलने और पर्यावरण के प्रति सचेत रहने के लिए उन्हें प्रेरित करना है।

जल–क्रीड़ा गतिविधियों में भाग लेने के लिए पूरे विश्व से पारिस्थिकी–पर्यटक आईआईएए में आते हैं।

नोमीतो ने पर्यावरण अधिगम और साहसिक खेलकूद को आपस में जोड़ा है और वह पर्यावरण के प्रति लोगों की सोच को बदलने में सहायक रही है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: iifaa.hmardu@gmail.com, honnemardu@satyam.net.in

Ms. Nomito Kamdar

Individual

Ms. Nomito Kamdar runs 'The Adventurers – A Wilderness School'- a non profit organisation promoting outdoor learning, environmental conservation and social development for over two and half decades now. Nomito has played a key role in bringing public awareness about environmental issues and thereby restoring the natural harmony in the Western Ghats region.

Promoted by the parent body, 'The Adventurers – A Wilderness School', the Indian Institute for Adventure Applications (IIAA) at Honnemaradu offers courses in Adventure Applications for interested students.

In agreement with The Adventurers' philosophy of co-existence with nature, an aqua sport centre was set up at Honnemaradu in 1992. Situated on the banks of the Sharavathy, on the Linganamakki reservoir, its location makes it an ideal blend of adventure sports and nature studies. IIAA promotes outdoor learning, environmental conservation, social and cultural development through adventure sport and eco-tourism activities.

Her organization has been working with like-minded public and the indigenous population of the Western Ghats and is directly involved in the conservation and development of Natural areas. Leading people through adventure activities such as trekking, rock climbing, aqua sports the aim is to inspire people to question their attitudes towards nature and to be more environmentally friendly.

Eco-tourists from across the globe come to IIAA to participate in aqua sport activities. Nomito has been instrumental in bringing about a change in the attitudes of people towards environment by combining environmental learning with adventure sports.

For more information contact: iifaa.hmardu@gmail.com, honnemardu@satyam.net.in

सुश्री पैमेला चैटरजी

व्यक्तिगत

सुश्री पैमेला चैटरजी लगभग 88 साल की हैं तथा ग्रामीण क्षेत्रों की समस्याओं का समाधान ढूंढने में आपने अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया है। आप कौसानी के निकट एक छोटे से गांव में रहती हैं तथा वहीं से काम करती हैं। सुश्री चैटरजी ने उत्तराखंड के हरदोई जिले में श्री रमेश श्रीवास्तव द्वारा सर्वोदय आश्रम के साथ साझेदारी की, जो ऊसर भूमि के उद्धार के लिए काम करता है। यह साझेदारी बहुत लाभप्रद साबित हुई तथा 18 हैक्टेयर की भूमि में धान की पहली फसल की बम्पर पैदावार हुई, जो ऊसर से भिन्न अच्छी कृषि भूमि में धान की पैदावार से भी अधिक थी।

इस अनपेक्षित पैदावार से चकित होकर क्षेत्र के आसपास के किसान भूमि सुधार की प्रक्रिया को समझने के लिए भारी संख्या में आश्रम पहुंचे। किसानों ने अपनी भूमि में सुधार के बारे में सीखा तथा इसकी वजह से 11.5 लाख हैक्टेयर ऊसर भूमि का उद्धार हुआ, जिसपर 1985 तक खेती नहीं होती थी। लगभग 3 साल बाद, ऊसर कार्यक्रम के साथ आपने कच्छ में बंजर भूमि के लिए प्रस्थान किया। यहां भी आप रटाडिया के परियोजना गांव में रहीं। शीघ्र ही स्पष्ट हो गया कि फसलों की खेती के लिए पानी की उपलब्धता बढ़ाने की आवश्यकता है। गांव में निर्णय लेने वाले वरिष्ठ लोगों के साथ बैठक से पता चला कि तीन साल के सूखे के बाद भारी वर्षा होने की उम्मीद है। निर्णय लिया गया कि मिट्टी के बांध अविलंब बनाए जाने चाहिए। बांधों के लिए लोन श्रमदान के रूप में अपनी मजदूरी के 20: का योगदान करने के लिए राजी हुए और इन बांधों की देखभाल करने के लिए भी राजी हुए। रटाडिया में जल संरक्षण परियोजना से प्रेरित होकर कच्छ के आसपास के कई और गांवों ने इसका अनुसरण किया तथा अनेक अन्य उपायों के अलावा पानी के संरक्षण के लिए बांधों का निर्माण किया। पानी के संरक्षण के लिए उठाए गए कदम फलदायी साबित हुए क्योंकि भारी वर्षा से सभी बांधों में पानी भर गया।

बंजर भूमि वाले क्षेत्र में कई साल तक काम करने के बाद आप वापस पहाड़ी क्षेत्र में आ गई हैं। आप उत्तराखंड में कुमाऊ की पहाड़ियों में स्थित कौसानी गईं, जहां आप पिछले 25 वर्षों से रह रहीं हैं और काम कर रही हैं। आपके के शुरूआती प्रयासों में इस क्षेत्र में अत्यधिक मात्रा में पैदा किए जाने वाले सेब, आड़ू, नाशपाती तथा अन्य फलों को विकसीत करने का प्रयास शामिल थे।

आपने अनेक अन्य मुद्दों पर काम किया है जिसमें घरों के नज़दीक शौचालय के निर्माण में महिलाओं की मदद करना शामिल है। आज इस गांव के हर घर में शौचालय है। आपने अपने घर में बच्चों के लिए छोटा सा पुस्तकालय शुरू करके शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रयास किया। आसपास के क्षेत्र के बच्चे नियमित रूप से आते थे। इसके अलावा, आपने पहाड़ों पर रहने के अपने अनुभव तथा बंजर भूमि के उद्धार पर गुजरात एवं उत्तर प्रदेश में किये गये अपने कार्य पर दो पुस्तकें भी लिखी हैं।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: rashmibharti@gmail.com

Ms. Pamela Chhatterjee

Individual

Ms. Pamela Chatterjee is about 88 years old and has dedicated her life to finding ways to solve problems of rural areas. She lives and works from a small village near Kausani. Ms.Chatterjee collaborated with Sarvodaya Ashram set up by Mr. Ramesh Srivastava in Hardoi district of Uttarakhand that worked for the reclamation of uncultivable sodic soils (known as Usar soild). This collaboration proved to be very fruitful and the very first yielded a bumper harvest of paddy, on 18 hectares land, which surpassed even the paddy output in Non-Usar, good cultivable lands.

Amazed at this unexpected harvest, farmers from all around the region, thronged to the Ashram to understand the process of reclamation. In time farmers learnt to reclaim their lands and this resulted in reclamation of 11.5 lakh hectares of Usar lands which remaining uncultivable till 1985.

After nearly three years, with the Usar programme in full swing, she moved to barren lands in Kutch. Here too, she lived in the project village of Ratadia. It soon became obvious that the need was to enhance water availability for cultivation of crops. A meeting with the senior decision makers in the village revealed that after three years of drought heavy rains were expected. It was decided that earthen dams should be built without delay. People agreed to contribute 20% of their wages as 'shramdan' (voluntary labour) for the dams, and also agreed to the maintenance of these dams. Inspired by the water conservation project in Ratadia, many other villages around Kutch followed and built dams for conservation of water in addition to several other measures. The measures taken to conserve water proved fruitful as heavy rains filled all the dams with water.

After working for several years work in barren lands, she went back to the mountains. She moved to Kausani in the Kumaon hills in Uttarakhand, where she has been living and working for the past 25 years. Her initial efforts involved attempts to rejuvenate the apples, peaches, pears and other fruits grown excessively in this region.

She has worked on a range of other issues that involved helping women to construct toilets near their houses. Now every home in the village has a toilet. She ventured in a small way into the field of education, by starting a small library for kids in her house. The children from around the area came regularly. Besides, she has written two books on her experience of living in the mountains and her work in the States of Gujarat and Uttar Pradesh on wasteland reclamation.

For more information contact: rashmibharti@gmail.com

nari shakti puraskar
Compassion, Ability, Courage
नारी शक्ति पुरस्कार
करुणा, क्षमता, साहस

सुश्री प्रज्ञा प्रसून

व्यक्तिगत

सुश्री प्रज्ञा प्रसून, तेजाब हमले की पीड़िता हैं जो अब एक सक्रिय कार्यकर्ता और सामाजिक कार्यकर्ता बन गई हैं। आप काफी वर्षों से तेजाब हमले की पीड़ित लडकियों को राहत और पुर्नवास प्रदान कर रही हैं।

वर्ष 2006 में आपके विवाह से कुछ ही दिन पूर्व आपके हताश प्रेमी द्वारा रेलगाडी में यात्रा करते समय तेजाब से हमला कर दिया गया था। इस घटना ने आपके जीवन को तो बदल कर रख दिया किन्तु आपके उत्साह को कम नहीं कर पाई। तब से आप पूरे देश में तेजाब पीड़िताओं के लिए युद्ध स्तर पर सक्रिय हैं।

आप चिकित्सा सलाह और उपचार के लिए पूरे देश में विख्यात डाक्टरों/अस्पतालों के साथ समन्वय स्थापित कर रही हैं। इसके साथ ही आप जरूरतमंद तेजाब पीड़ित महिलाओं के लिए व्यक्तिगत परामर्श भी दे रही हैं और नियमित आय का एक स्थायी स्रोत भी सृजित कर रही है।

वर्ष 2013 में, आपने बैंगलोर में अतिजीवन फाउण्डेशन, जो कि केवल तेजाब पीड़िताओं की सहायता के लिए बनाया गया संगठन है, की स्थापना की थी। अतिजीवन फाउण्डेशन तेजाब पीड़िताओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने में मदद करता है और तेजाब पीड़िता को तेजाब से पड़े हुए निशानो का मुफ्त उपचार भी देता है। यह फाउण्डेशन पूरे देश के अस्पतालों के साथ मिलकर से कार्य करता है। अतिजीवन फाउण्डेशन ने डाक्टरों, स्वयं सेवकों तथा मानव प्रेमियों की मदद से 200 से अधिक तेजाब पीड़िताओं की मदद की और उन्हें नई उर्जा प्रदान की है यह संगठन पुर्ननिर्माण शल्यक्रिया, तथा शल्यक्रिया रहित कॉस्मेटिक प्रक्रियाओं, बेहतर संभव व्यक्तिगत उपचार के लिए तेजाब पीड़िताओं को परामर्श देने तथा शैक्षिक और रोजगार प्रशिक्षण प्रदान करके तेजाब पीड़िताओं को सशक्त बनाने की ओर विशेष ध्यान देता है। अतिजीवन संगठन की टीम का उद्देश्य सभी तेजाब पीड़िताओं को समाज में उनका स्थान बनाने के लिए उन्हें निष्पक्ष और बराबर का अवसर देना है। आपका यह विश्वास है कि अपने पैरों पर खड़ा होने और दुनिया का पूरे विश्वास के साथ सामना करने से बेहतर कार्य और कुछ भी नहीं है।

आपका संगठन स्किन डोनेशन और स्किन बैंकिंग के महत्व के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए पृथक रूप से कार्य भी कर रहा है। उन्होंने अपने जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से समाज और तेजाब पीड़िताओं के बीच के अंतर को सफलतापूर्वक दूर कर दिया है।

आपने तेजाब पीड़िताओं को अपना जीवन खुद जीने में सक्षम बनाया है जहां वे स्वयं को सशक्त और आत्मनिर्भर महसूस करती हैं और उन्हें कोई हिकारत भरी नजर से नहीं देखता है। इस प्रकार की डरावनी घटनाएं तेजाब पीड़िताओं के जीवन को परिभाषित नहीं करती है किन्तु इस घटना से निपटने का उनका कभी ना मरने वाला साहस और दृढ़ प्रतिज्ञा ही उनके जीवन का निर्धारण करती है। जैसा कि आप कहती हैं कि "मैं सिर्फ एक चेहरा नहीं हूँ वास्तव में मैं वो हूं जो मैनें स्वयं को बनाया है।" मैं एक ऐसी कहानी हूं जिसका अंत सुखदायक है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: **pragyaprasunsingh@gmail.com**

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

nari shakti puraskar
Compassion, Ability, Courage
नारी शक्ति पुरस्कार
करुणा, क्षमता, साहस

Ms. Pragya Prasun

Individual

Ms. Pragya Prasun, is an acid attack survivor turned activist and a social worker who has been fighting for providing relief and rehabilitation to her fellow acid attack survivors for many years now.

Pragya was acid-attacked in 2006 while she was travelling in the train by a jilted lover just days before her wedding. This incident changed her life but did not deter her spirits. Ever since she has been fighting aggressively for the acid attack survivors across the country.

She has been coordinating with eminent Doctors/Hospitals from across the country for medical advice and treatment. She also works towards personal counselling and generating permanent source of regular income for all of the survivors who are in need.

In 2013, Pragya established Atijeevan Foundation in Bengaluru, an organization exclusively for acid attack victims. Atijeevan helps acid attack survivors become economically independent and also provides free scar treatment to any acid attack victim who approaches them for help. The Foundation works closely with hospitals across the country. Atijeevan with the help of doctors, volunteers and philanthropists has touched and rejuvenated lives of more than 200 survivors. The organizations' focus area includes reconstructive surgeries and non-surgical cosmetic procedures, counselling survivors for best possible personalised treatment and empowering survivors by providing educational and vocational training. Atijeevan team's objective is to give all the survivors a fair and equal chance to make their place in the society. Pragya believes that there is nothing quite like standing on one's own feet and facing the world with full confidence.

Pragya's organization also extensively works towards creating awareness about the importance of skin donation and skin banking. She has successfully bridged the gap between the society and the acid attack survivors through her awareness programmes.

Pragya has enabled acid-attack survivors to have a life of their own where they feel empowered and are not looked down upon. Horrific incidents like these do not define the lives of the survivors but it is their undying courage and determination to overcome the incident that determines their lives. As Pragya says, "I am not my face; I'm what I make of myself. I'm a story with a happy ending."

For more information contact: **pragyaprasunsingh@gmail.com**

nari shakti puraskar
Compassion, Ability, Courage
नारी शक्ति पुरस्कार
करुणा, क्षमता, साहस

सुश्री प्रियम्वदा सिंह
व्यक्तिगत

मुंबई की पूर्व रणनीतिकार 36 वर्षीय सुश्री प्रियंवदा सिंह "मेजा प्रोजेक्ट" का नेतृत्व कर रही हैं। टेलीविज़न उद्योग में एक दशक लंबे करियर के बाद आपने अपने मूल स्थान, मेजा गाँव, भीलवाड़ा राजस्थान वापस लौटने का निर्णय लिया। आपने 148 साल पुराने पैतृक किले का जीर्णोद्धार करके इसे समुदाय द्वारा संचालित एक होम स्टे के रूप में विकसित किया है। परियोजना ने ग्रामीणों, विशेषकर महिलाओं के लिए रोजगार के अवसर पैदा किए हैं।

वर्ष 1875 में निर्माण के बाद से मेजा किले में कोई रखरखाव का काम नहीं हुआ था। मूल काम के रूप में प्रामाणिक होने के लिए उत्सुक, प्रियंवदा ने प्लास्टर की बजाय सूखी चिनाई, पेंट की बजाय समला (चूना पेस्ट), पत्थर का फर्श आदि जैसी स्थानीय पारंपरिक निर्माण तकनीकों को पुनर्जीवित करने का काम किया। किले के जीर्णोद्धार से न केवल रोजगार का सृजन हुआ है, बल्कि पुरानी निर्माण तकनीकों का पुनरुद्धार भी हुआ है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मेजा परियोजना ने महिलाओं, विशेषकर गृहिणियों, को रोजगार के अवसर प्रदान करके उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाते हुए उनका मार्ग प्रशस्त किया। स्वास्थ्य और फिटनेस को बढ़ावा देने के लिए सामूहिक योग शिविर जैसी कई सामुदायिक गतिविधियाँ भी आयोजित की जाती हैं। जागरुकता पैदा करने के लिए नियमित रक्तदान शिविर भी आयोजित किए जाते हैं और ग्रामीणों की भागीदारी से भीलवाड़ा शहर में चिकित्सा आपात स्थिति के लिए रक्त की व्यवस्था करने में मदद मिली है।

आपने मेजा में 'ब्लाउज' नामक एक लघु फिल्म के लिए शूट का आयोजन किया और यह सुनिश्चित किया कि स्थानीय लोगों को इसमें अभिनय या कर्मी दल के सदस्यों के रूप में रोजगार मिले। इसने स्थानीय लोगों को अंतरराष्ट्रीय मंच पर ला खड़ा किया क्योंकि यह फिल्म न्यूयॉर्क इंडियन फिल्म फेस्टिवल में सर्वश्रेष्ठ लघु फिल्म का पुरस्कार जीतने के लिए भेजी गई थी।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: singh_priyamvada@yahoo.com

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

nari shakti puraskar
Compassion, Ability, Courage
नारी शक्ति पुरस्कार
करुणा, क्षमता, साहस

Ms. Priyamvada Singh
Individual

Leading the "Meja Project" is 36-year-old Ms. Priyamvada Singh, a former Mumbai-based content strategist. After a decade long career in television industry she chose to return to her roots in Meja village, Bhilwara Rajasthan. She has restored 148 year old ancestral fort and developed it as a community run home stay. The project has created employment opportunities for the villagers, particularly women.

The Meja fort had not seen any maintenance work since it was constructed in 1875. Keen to be as authentic as the original work, Priyamvada worked to revive traditional construction techniques like dry masonry instead of plaster, samla (lime paste) instead of paint, local stone flooring, etc. The restoration of the fort has resulted in not only employment generation, but also led to the revival of old construction techniques.

Most importantly, Meja project also opened avenues to women by providing them with employment opportunities, especially housewives, making them financially independent. Several community activities are also organized such as Group Yoga Camps to promote health and fitness. Regular blood donation camps are also organized to create awareness and participation from villagers has helped arrange blood for medical emergencies in Bhilwara city.

She organized the shoot for a short film titled 'Blouse' in Meja and ensured that the local people get employment in it either in acting or as crew members. It had put the locals on international platform as the film went on to win the Best Short Film award at New York Indian Film Festival.

For more information contact: singh_priyamvada@yahoo.com

सुश्री पुष्पा एन.एम.

व्यक्तिगत

सुश्री पुष्पा एक सॉफ्टवेयर कंपनी के साथ काम करने वाली पेशेवर हैं और बेंगलुरु की एक प्रसिद्ध परीक्षा लेखक हैं। इस बेहतरीन समैरिटन ने कई निःशक्तजनों के लिए 10 वर्षों में 657 परीक्षाएं लिखी हैं। ऐसा करके, आप विशेष रूप से दिव्यांगजन के जीवन और करियर में सुधार करना चाहती हैं। आप ज्यादातर उन छात्रों के लिए लिप्यांतरण करती हैं जो नेत्रहीन हैं या मस्तिष्क पक्षाघात अथवा डाउन सिंड्रोम से पीड़ित हैं।

आपको ऐसा करने के लिए प्रेरित करने की एक दिल को छू लेने वाली कहानी है। आप जब छोटी थीं, तो आपको परीक्षा हॉल से बाहर निकाल दिया गया था क्योंकि आपका परिवार फीस का भुगतान नहीं कर सकता था। हालाँकि, कुछ अच्छे लोगों के कारण आप अपनी पढ़ाई फिर से शुरू कर सकीं। आपको लगता है कि अब समाज को वापस देने की आपकी बारी है।

सुश्री पुष्पा साहस और करुणा की मिसाल हैं, जो शिक्षा के बुनियादी महत्व को समझती हैं। अतीत में अपने जीवन के किसी समय इससे वंचित होने के कारण, आप यह सुनिश्चित कर रही हैं कि आप दूसरों की अपनी शिक्षा को सुचारू रूप से पूरा करने में सहायता करें। ऐसे लोग समाज के लिए वरदान हैं।

आप कर्नाटक सरकार द्वारा दृष्टिबाधित छात्रों की सहायता करने के लिए सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि सहित कई पुरस्कारों की विजेता हैं। परीक्षा लेखक होने के अलावा, आप जरूरतमंद लोगों के लिए रक्त की व्यवस्था भी करती हैं। आपके पास एक राज्य–व्यापी नेटवर्क है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: pushpapreeya@gmail.com

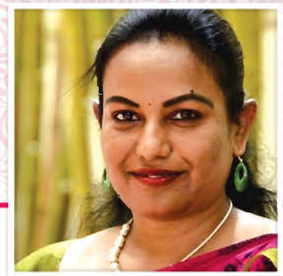

Ms. Pushpa N. M

Individual

Ms. Pushpa, a professional working with the software company, is a well known exam scribe in Bengaluru. This Good Samaritan has written 657 exams in 10 years for many differently-abled persons. By doing so, she aims to improve the lives and careers of the specially-abled persons. Pushpa mostly transcribes for the students who are visually impaired, or suffering from cerebral palsy or Down syndrome.

What compelled her to do this is another heart-warming tale. When she was young, she was thrown out of the exam hall as her family couldn't afford to pay fees. However, she could resume her studies because of some Good Samaritans. Pushpa feels it is her turn to give back to society.

Pushpa exemplifies courage and compassion who understands the pivotal importance of education. Being at the brink of being deprived of it at some point of her life in the past, she is ensuring that she assists others in completing their education smoothly. Such people are a boon to society.

Pushpa is a recipient of many awards including the Best Achievement for supporting visually impaired students by the Government of Karnataka. Apart from being a scribe, Pushpa arranges blood for those in need. She has a state-wide network, spread just through word of mouth.

For more information contact: pushpapreeya@gmail.com

सुश्री रहिबाई सोमा पोपेरे

व्यक्तिगत

सुश्री रहिबाई पोपेरे कृषि जैव–विविधता, भूमि किस्मों के संरक्षण विषयों तथा धान की खेती में अनेक अभिनव तकनीकों में स्वनिर्मित विशेषज्ञ हैं। महाराष्ट्र में अहमदनगर जिले के कोम्भालने गांव की मूल निवासी रहिबाई धान, जलकुंभी, बाजरा, दालों और तिलहन सहित अलग–अलग 17 फसलों की 48 देसी भूमि किस्मों के संरक्षण और उनका क्षेत्र बढ़ाने के लिए प्रख्यात हैं।

इन्हें 'सीड मदर' के नाम से भी जाना जाता है। आप देसी बीजों के संरक्षण के प्रति दृढ़ संकल्प के साथ पूरे महाराष्ट्र की यात्रा करती हैं। आपका मानना है कि विपदाग्रस्त किसानों के शोषण को रोकने के लिए स्थानीय बीजों का संरक्षण बहुत महत्वपूर्ण है। चूंकि बीजों का वितरण करने वाली बड़ी–बड़ी कंपनियां संकर बीजों के इस्तेमाल को बढ़ावा देती हैं और उनका पेटेंट करा लेती हैं, इसलिए कृषक बीजों के लिए ज्यादातर इन कंपनियों पर निर्भर होते जा रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप, मूल फसलों के विलुप्त हो जाने की संभावना है। इस परिदृश्य में रहिबाई आनुवंशिक विविधता और कृषकों तथा उपभोक्ताओं की भलाई सुनिश्चित करने के लिए मूल फसलों के संरक्षण की पुरजोर वकालत करती हैं। मूल फसलों की किस्में न केवल सूखा और रोग–प्रतिरोधी हैं, बल्कि पोषक भी हैं और मिट्टी की उर्वरता को भी बनाए रखती हैं, क्योंकि इन्हें रासायनिक उर्वरकों और ज्यादा पानी की जरूरत नहीं होती है। आपका मानना है कि संकर बीजों के पोषक मूल्य की तुलना में परम्परागत बीजों का पोषक मूल्य कहीं अधिक है। आपने स्थानीय बीजों को इकट्ठा करने के लिए महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के अकोला तालुक की महिला कृषकों के साथ मिलकर कार्य किया है। आपने मूल बीजों के संरक्षण के लिए 'कलसुबाई' परिसर बियानी संवर्धन समिति' नामक स्व–सहायता समूह का गठन किया।

रहिबाई ने मूल फसलें उगाकर लाभ प्राप्त किए हैं और इसलिए चाहती हैं कि ज्यादा संख्या में कृषक इनकी खेती करें। इसके लिए एक बीज बैंक की स्थापना की गई है। जिसका प्रबंधन समुदाय के सदस्य ही करते हैं। किसानों को इस शर्त पर बीज दिए जाते हैं कि उन्हें जितने बीज दिए गए हैं, वे उससे दोगुना बीज वापस लौटाएंगे। इस प्रक्रिया को ग्राम और ब्लॉक स्तर पर चरणों में बढ़ाए जाने का प्रस्ताव है। बीज बैंक से 32 फसलों की 122 किस्मों का वितरण किया जाता है।

रहिबाई बीजों के संरक्षण के अतिरिक्त जैविक खेती, स्वदेशी बीजों के संरक्षण, कृषि जैव–विविधता तथा जंगली खाद्य संसाधनों के महत्व के बारे में जन–जागरूकता पैदा कर रही हैं। हालांकि रहिबाई के प्रयासों का जिला और राज्य स्तर पर स्पष्ट, प्रभाव दिखाई पड़ रहा है, यह देश के कृषि क्षेत्र में आनुवंशिक विविधता के लिए बहुत बड़ा योगदान है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: **amruta.patil@gmail.com**

Ms. Rahibai Soma Popere

Individual

Ms. Rahibai Popere is a self-made expert in the subjects of agro-biodiversity, landrace conservation, and several innovative techniques in the cultivation of paddy crops. Hailing from Kombhalne village of Ahmednagar district, Maharashtra, Rahibai has the distinction of conserving and multiplying 48 indigenous landraces of 17 different crops including paddy, hyacinth bean, millets, pulses, and oilseeds.

She is also known as the 'Seed Mother'. She travels across Maharashtra with a single-minded devotion to conserve indigenous seeds. She believes that conservation of native seeds is important to prevent the exploitation of already distressed farmers. Since large seed companies promote and patent hybrid seeds farmers are largely becoming dependent on these companies for seeds. As a result native crops are likely to become extinct. In such a context, Rahibai strongly advocates the conservation of native crops to ensure genetic diversity and the welfare of farmers and consumers. Native crop varieties are not only drought and disease resistant, but are nutritive and retain the soil fertility as they do not need chemical fertilisers and excessive water. She is of the view that nutritive value of traditional seeds is much higher than that of hybrid seeds. She collaborated with other women farmers from Akole taluk in Ahmednagar district of Maharashtra to collect local seeds. She formed a Self Help Group named Kalsubai Parisar Biyanee Samvardhan Samiti to conserve native seeds.

Having experienced the benefits of growing native crops, Rahibai wants more farmers to start farming the same. Towards this goal, a seed bank has been established. Community members manage the seed bank. Farmers are given seeds with the condition that they return twice the quantity of seeds they borrowed. This is proposed to be scaled in tiers at the village and block levels. The seed bank distributes 122 varieties of 32 crops.

Besides conserving seeds, she creates awareness about the importance of organic farming, conserving indigenous seeds, agro-biodiversity and wild food resources. While Rahibai's efforts are making a visible impact at the district and state level, it is an immense contribution towards genetic diversity in the country's agricultural sector.

For more information contact: **amruta.patil@gmail.com**

सुश्री रजनी रज़क
व्यक्तिगत

सुश्री रजनी रज़क, छत्तीसगढ़ की लोक कला और संस्कृति का नाम और आवाज़ है। आप एक प्रतिष्ठित लोक गायिका हैं। आपको दुर्लभ मधुर आवाज मिली है। भोजली, कर्मा, देवर गीत, ददरिया आदि जैसे कुछ प्रतिष्ठित लोक गीतों के पीछे आप ही की आवाज़ रही है। आपने अपनी शुरूआत 1980 के दशक में आकाशवाणी रायपुर के लोक गायक के रूप में शुरू की। तबसे ही आप ढोला मारू कला के रूप को फैला रही हैं। आप ढोला मारू की रचनात्मक प्रस्तुति की पहली महिला कलाकार और निर्देशक हैं। आपने 20 से अधिक छत्तीसगढ़ी लोक कला रूपों में प्रस्तुतियां दी हैं और कला को दुनिया भर में लोकप्रिय बनाया है।

ढोला मारू कला के बारे में जागरूकता फैलाने में आप सबसे आगे रही हैं। आप छात्रों और युवा कलाकारों को प्रशिक्षण देकर इस अनूठी कला को जीवित रखने के लिए अथक प्रयास कर रही हैं। आप नेत्रहीनों और अशक्त बच्चों को संगीत का प्रशिक्षण भी दे रही हैं और गरीब बच्चों की शिक्षा के क्षेत्र में सहायता भी प्रदान कर रही हैं।

आपने राज्य, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न पुरस्कार तथा ख्याति प्राप्त किये है। आपको प्राप्त हुए सबसे उल्लेखनीय पुरस्कारों में 1993 में 'राष्ट्रीय पुरस्कार', 2006 में 'कला रत्न', 2009 में 'शिल्प गुरु अवार्ड', कोलंबो में इंडियन कल्चरल यूनियन द्वारा आयोजित 'लोक गायन और नाटक' के लिए अवार्ड, अखिल भारतीय रजक समुदाय द्वारा 2016 में रजक विभूषण पुरस्कार और डा.एपीजे अब्दुल कलाम स्मृति सम्मान शामिल हैं।

आपने एक विलुप्त होती हुई कला को जीवित रखने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आपने इस शिल्प को सीखने के लिए अनेकों बालिकाओं को प्रेरित किया है और उसकी सहायता की है, जिसने आगे महिलाओं के लिए आजीविका के विकल्प खोले हैं। आपने पारंपरिक कला रूप के संरक्षण के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया है और अपनी विशेषज्ञता और प्रशिक्षण से इस कला को जीवित रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: rasurajak91@gmail.com

Ms. Rajni Rajak
Individual

Ms. Rajani Rajak is the name and voice of folk art and culture of Chhattisgarh. She is the most iconic folk singer and has got the rare charming voice. She has been the voice behind some of the iconic folk songs such as Bhojli, Karma, Dewar Geet, Dadariya, etc. Her journey started in 1980s as a folk singer of Askashvani Raipur. Ever since she has been spreading the Dhola Maru art form. She is the first female performer and director of the creative presentation of DHOLA MARU. She has given performances on over 20 Chhattisgarhi Folk Art Forms and has made the art form popular across the world.

She has been at forefront in spreading awareness about the Dhola Maru art form. She has been working relentlessly to keep this unique art form alive by imparting training to students and young artists. She has also been providing training in music to visually challenged and differently abled children and also providing assistance in the field of education to the poor children.

She has received various awards and recognition at the State, National and International level. Her most notable awards include the 'National Award' in 1993, 'Kala Ratan' in 2006, 'Ship Guru Award' in 2009, Award for 'Folk Singing and Drama' by Indian Cultural Union at Colombo, Rajak Vibhushan Award in 2016 by All India Rajak Community and DR.APJ Abdul Kalam Smriti Samman.

She has immensely contributed to keep alive an almost dying form of art. She has inspired and helped number of girls to learn this craft which has further opened up livelihood options for women. She has devoted her entire life for upkeep of the traditional art form and kept the uniqueness alive by extending her expertise and training.

For more information contact: rasurajak91@gmail.com

सुश्री रेश्मा नीलोफर नाहा

व्यक्तिगत

सुश्री नीलोफर भारत की पहली और एकमात्र महिला समुद्री पायलट हैं। आप बीएससी (नॉटिकल साइंस) स्नातक हैं और आपको हुगली नदी, जो कि पोतवाहन के लिए विश्व में सर्वाधिक कठिन नदी है, में 7 वर्ष के प्रशिक्षण के पश्चात वर्ष 2011 में कोलकाता पोर्ट ट्रस्ट द्वारा भर्ती किया गया। रेशमा ने सभी प्रकार की कठिनाइयों का सामना करते हुए अपनी शक्ति, अनुकूलनशीलता और दृढ़ निश्चय का परिचय दिया है।

रेशमा विश्व में ऐसी कुछेक महिला समुद्री पायलटों में से एक हैं, जो नदी में जहाज का संचालन करती हैं। अभी भी महिलाओं द्वारा जहाजों का संचालन करना बहुत विरल है, लेकिन रेशमा इससे भी आगे निकल चुकी हैं और समुदी पायलट के रूप में अर्हता प्राप्त कर चुकी हैं तथा समुद्री जहाज के कैप्टन के सलाहकार के रूप में कार्य करती हैं और पत्तनों से जहाजों के आवागमन का संचालन करती हैं।

समुद्री पायलट के काम में अपेक्षित ज्ञान, कौशल और अभ्यास के अलावा अत्यधिक सावधानी, धैर्य और एकाग्रता की जरूरत होती है। आपके दृढ़ निश्चय और व्यावसायिक उत्कृष्टता के कारण आपको अपने क्षेत्र में सफलता और मान्यता प्राप्त हुई है।

आपने सभी प्रकार की कठिनाइयों और बाधाओं का मुकाबला करते हुए कितने ही अद्भुत, कठिन और श्रमसाध्य कार्य में उपलब्धि हासिल की है। छोटी लड़कियां आपसे प्रेरणा प्राप्त कर सकती हैं कि वे कैसे आसमान को छू सकती हैं। समुद्री सफर का व्यावसाय, जिसे बहुत से पुरुष भी दुर्दम्य मानते हैं, अब लड़कियों के लिए उपयुक्त व्यवसाय बन गया है। आप लड़कियों की आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत हैं और उन्हें उड़ने तथा अपने सपनों को साकार करने की हिम्मत देती रहेंगी।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: reshma.career@gmail.com

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

Ms. Reshma Nilofer Naha

Individual

Ms. Reshma is the first and only woman marine pilot in India. Reshma is a B.Sc (Nautical Science) Graduate and was recruited by the Kolkata Port Trust in 2011 with seven years of tough training in the river Hoogli, the toughest pilotage waters in the world. Reshma has risen above all odds and has demonstrated strength, resilience and determination.

Reshma also happens to be one of the very few women Marine Pilots in the world who navigates in River Pilotage. It is still rare to find women on board ships and Reshma has gone beyond that and qualified as a Marine Pilot who boards a ship as an advisor to the Captain of the ship and navigates through the passage in and out of ports.

The job of a Marine Pilot needs extreme caution, patience, and heightened presence of mind in addition to required knowledge, skill, and practice. Reshma's determination and professional excellence has got her success and recognition in her respective field.

She has managed to tide through all the odds and obstacles and achieve something so unique, so tough and so taxing. Young girls could take inspiration on how they could reach for the skies. The profession of seafaring, which even many men find overwhelming, has now become a niched and pursuable career for girls, and Reshma will inspire generations of girls and give them wings to dare and dream and to achieve it.

For more information contact: reshma.career@gmail.com

सुश्री रीया मजूमदार सिंघल
व्यक्तिगत

सुश्री रीया सिंघल एक उद्यमी हैं। आपने कम्पोस्टेबल फूड़ पैकेजिंग बिजनैस इकोवेयर सॉल्यूशंस की स्थापना की है। आपने भारत के प्लास्टिक खतरे का समाधान करने के एकमात्र उद्देश्य से इकोवेयर की स्थापना की। यह सिंथेटिक डिस्पोजल के कारण होने वाले प्रदूषण को कम करने, उपभोक्ताओं के बेहतर स्वास्थ्य और कल्याण हेतु तथा स्थानीय स्तर पर उत्पादन करने के उद्देश्य से शुरू किया गया था ताकि आपके उत्पाद सहजतापूर्वक सस्ते हों।

इकोवेयर प्लेट, कप, चम्मच, कटोरे और ट्रे जैसे कंपोस्टेबल टेबलवेयर उत्पादों का निर्माण करती है। इकोवेयर संयंत्र गेहूं, चावल और गन्ना जैसी फसलों के संसाधित होने पर उनके कृषि–अपशिष्ट को जैव–ईंधन का उपयोग करके अपने उत्पादों को बनाते हैं। इकोवेयर उत्पाद में कोई जोड़ नहीं है, उनमें कोई योजक नहीं है और ये शत–प्रतिशत खाद हैं।

सुश्री रिया को उपभोक्ता व्यवसाय स्थापित करने की चुनौतियों का सामना करने के साथ–साथ भारत में महिला व्यवसाय की मालिक होने के नाते इससे जुड़े कलंक और पूर्वाग्रह को दूर करना था। आप विदेशी थीं और उत्तर भारत की व्यवसायिक भाषा हिंदी बहुत कम बोलती थीं। प्लास्टिक के टेबलवेयर उत्पाद सर्वव्यापी थे, बाजार अभेद्य था और प्लास्टिक के हानिकारक प्रभावों के बारे में शिक्षा सीमित थी। इन बाधाओं के बावजूद आपने बड़े थोक बाजारों में जेनेरिक व्यापारियों को एक ऐसा उत्पाद बेचने के लिए राजी किया जो उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था। आपकी सबसे बड़ी सफलताओं में से एक भारतीय रेलवे, जो भारत में सबसे बड़ी खाद्य सेवा ऑपरेटर है, को बायोडिग्रेडेबल पर स्विच करने के लिए राजी करना था। समय, अनुसंधान और शिक्षा के साथ–साथ, दुनिया के लोगों में प्लास्टिक के हानिकारक प्रभावों के बारे में अधिक जागरूकता पैदा की गई है।

इकोवेयर ने वर्ष 2010 से अब तक एक लंबा सफर तय किया है और इसका श्रेय प्लास्टिक के बिना दुनिया बनाने के सुश्री रीया मजूमदार सिंघल के संकल्प को जाता है। आपके काम के प्रभाव निमित्त हाल ही में आपको वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम के यंग ग्लोबल लीडर वर्ग, 2018 के लिए नामित किया गया है। आप कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रकाशनों – फोर्ब्स, फॉर्च्यून, हिंदुस्तान टाइम्स, इकोनॉमिक टाइम्स, इंडिया टुडे और गल्फ न्यूज में भी छपी हैं। आप व्यापार, उपभोक्ता और सरकारी मंचों पर एक नियमित वक्ता हैं।

सुश्री रिया का विज़न लोगों को और अधिक जिम्मेदारी से जीने के लिए ज्ञान के साथ सशक्त करके एक स्वस्थ, टिकाऊ भविष्य का निर्माण करना है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: **rheasinghal@ecoware.in**

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

Ms. Rhea Mazumdar Singhal
Individual

Ms. Rhea Singhal is an entrepreneur who founded the compostable food packaging business Ecoware Solutions. Rhea founded Ecoware with the sole aim of fixing India's plastic menace. It was started with the aim to better the health and well-being of consumers, reduce and remove pollution caused by synthetic disposables, and to produce locally so that their products are easily affordable.

Ecoware manufactures a range of compostable tableware products like plates, cups, spoons, bowls and trays. Ecoware makes their products using plant biomass, the agri-waste that is left over once crops such as wheat, rice and sugarcane are processed. Ecoware products have no binders, no additives and are 100 percent compostable.

Other than the challenges of setting up a consumer business, Rhea had to overcome the stigma and bias associated with being a female business owner in India. Rhea was a foreigner and spoke very little Hindi, the business language of north India. Plastic tableware products were omnipresent, the market was impenetrable and education regarding the harmful effects of plastic was limited. Despite these hurdles she convinced generational traders in large wholesale markets to sell a product they had never seen before. One of her greatest successes has been to persuade the Indian Railways, the largest food service operator in India, to switch to biodegradables. With time, research and education, more awareness has been created about the harmful effects of plastic among people across the globe.

Ecoware has come a long way since 2010 and the credit goes to Rhea's resolve to create a world without plastic. Rhea Mazumdar Singhal has been recently nominated to the World Economic Forum's Young Global Leader class of 2018 for the impact her work has created. She has also been featured in many national and international publications - Forbes, Fortune, Hindustan Times, Economic Times, India Today, and Gulf News. She is a regular speaker at trade, consumer and government forums.

Rhea's vision is to build a healthy, sustainable future by empowering people with knowledge to live more responsibly.

For more information contact: **rheasinghal@ecoware.in**

सुश्री रूमा देवी
व्यक्तिगत

सुश्री रूमा देवी राजस्थान के एक छोटे से ग्रामीण शहर की रहने वाली हैं। 17 वर्ष की उम्र में जब आपकी शादी हुई, तो उस समय आप केवल सिलाई और कढ़ाई ही कर सकती थीं। कुछ साल बाद, आपने पड़ोस की महिलाओं को एक स्व–सहायता समूह बनाने के लिए इकट्ठा किया, जो दस्तकारी की वस्तुएं बनाकर अतिरिक्त आय प्राप्त कर सके। शीघ्र ही, आपको एहसास हुआ कि बिचौलियों के माध्यम की बजाए सीधे खरीदने और बेचने से बेहतर मुनाफा होगा। समूह ने बैंक ऋण प्राप्त किया और स्वयं ही कच्चा माल खरीदना शुरू कर दिया। आप और आपके सहयोगी इस क्षेत्र के ग्रामीण विकास चेतना संस्थान (GVCS) नामक एक एनजीओ में शामिल हो गए और आपने जल्दी ही इसके अध्यक्ष के रूप में पदभार संभाला। आपके अधीन जीवीसीएस ने 75 गाँवों तक अपने संचालन का विस्तार किया और अब तक 11,000 कारीगरों को प्रशिक्षित किया है।

आपने पारंपरिक नमुनों का उपयोग करके अपनी टीम के सदस्यों को टॉप, स्कर्ट, दुपट्टा और सलवार सूट बनाने में विविधता लाने के लिए प्रेरित किया। आपके काम ने उन शीर्ष डिजाइनरों का ध्यान आकर्षित किया जिन्होंने आपके द्वारा बनाए गए कपड़े खरीदना शुरू किया। सुश्री रूमा देवी 30 साल की उम्र में सशक्त महिलाओं की सफलता का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। आज आप 11000 कारीगरों (75 गांवों में) पुरूष तथा महिला दोनों का नेतृत्व कर रही हैं, उन्हें प्रशिक्षित कर रही हैं और उन्हें अपने आप में उद्यमी बना रही हैं। सुश्री रूमा देवी को महिला सशक्तिकरण की दिशा में उनके योगदान को स्वीकार करते हुए कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: gvcsbarmer@gmail.com, ruma.gvcs@gmail.com

Ms. Ruma Devi
Individual

Ms. Ruma Devi comes from a small rural town in Rajasthan. When she got married at 17, Ruma Devi could do only little stitching and embroidery. A few years later, she gathered women from the neighbourhood to form a self-help group that would make handcrafted items and supplement incomes. Soon, they realised that buying and selling directly than through intermediaries would bring better profits. The group secured bank loans and began procuring raw material itself. Ruma Devi and her colleagues joined the Gramin Vikas Chetna Sansthan (GVCS), an NGO in the region, and she soon took over as its president. Under her, GVCS has expanded operations to 75 villages and trained 11,000 artisans so far.

Ruma Devi inspired her team members to diversify into making tops, skirts, dupattas and salwar suits using traditional motifs. Their work caught the attention of top designers who have started purchasing the clothes they make. At 30 years of age, Ruma Devi is an outstanding example of the success of empowered women. Today she is leading a group of 11000 artisans (in 75 villages), both men and women, training them and making them entrepreneurs in their own right. Ruma Devi has been honoured with several prestigious awards acknowledging her contribution towards to women empowerment.

For more information contact: gvcsbarmer@gmail.com, ruma.gvcs@gmail.com

nari shakti puraskar
Compassion, Ability, Courage
नारी शक्ति पुरस्कार
करुणा, क्षमता, साहस

सुश्री सीमा कौशिक मेहता

व्यक्तिगत

सुश्री सीमा कौशिक मेहता ललित कलाकार हैं। आपने 2002 में अकादमी ऑफ आर्ट यूनिवर्सिटी, सैनफ्रांसिस्को, कैलिफोर्निया से स्नातक किया है। आपने 2000 में शुरूआत करते हुए कई वर्षों तक प्रसिद्ध कथक आचार्य पंडित चित्रेश दास के साथ भी अध्ययन किया। इस समय आप छदम नृत्य भारती (सीएनबी) नामक एक नृत्यि संस्था चला रही हैं जो भारत में कथक सिखाने वाली अच्छी संस्थाओं में से एक है।

सुश्री सीमा मुंबई में तकरीबन 100 छात्राओं को पढ़ाती हैं । अगली पीढ़ी को शिक्षा देने तथा अपने गुरु से सीखे गए ज्ञान को लोगों में बांटने में आपकी गहरी रूचि है। आप कला के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन लाने में विश्वास रखती हैं। कथक नृत्य सिखाना आपका जुनून है और आपने न्यू लाइट परियोजना के तहत कोलकाता के रेडलाइट एरिया के यौन कर्मियों के बच्चों के साथ काम किया है, तथा श्री श्री रविशंकर विद्या मंदिर एवं स्माइल से जुड़े बच्चों को सक्रियता से पढ़ाती हैं । सीएनबी बच्चों को कला शिक्षा प्रदान करने तथा पढ़ाने एवं परफार्म करने का व्यावसायिक अवसर प्रदान करता है।

आपका उद्देश्य अपने गुरु द्वारा निर्धारित कला के मानकों का पालन करने तथा कलात्मक एकता बनाए रखते हुए अगली पीढ़ी के कलाकारों को प्रेरित एवं सशक्त बनाना है जो नृत्य को अपनी जीविका बना सकते हैं। भारतीय शास्त्रीय नृत्य एवं संगीत का बुनियादी शिक्षा में शामिल करना सीमा का अंतिम लक्ष्य है क्योंकि आपका मानना है कि कला का अध्ययन उतना ही महत्वपूर्ण है जितना भाषा, गणित एवं विज्ञान के अध्ययन करना है। इस समय आप स्कूलों एवं कॉलेजों में व्यख्यान, प्रदर्शन एवं कार्यशालाओं के माध्यम से इस लक्ष्य को हासिल करने की दिशा में प्रयासरत हैं।

कीर्तिलाल के क्रिएटिव डायरेक्टर के रूप में, सुश्री सीमा वंचित समुदाय की अनेक महिलाओं के साथ मिलकर से काम करती हैं तथा उनको महत्वपूर्ण भूमिका देने हेतु कंपनी को प्रोत्साहित करके उन्हें सशक्त बनाती हैं। आभूषण के निर्माण के क्षेत्र में शायद ही महिलाएं मिलती हैं परंतु कीर्तिलाल ने अधिक अनुपात में महिलाओं को काम पर रखा है। आपने पूरे भारत में प्रतिष्ठित त्यौहारों एवं अवसरों पर अपनी कला का खूब प्रदर्शन किया है तथा दरबार, जिसका 2012 में सैनफ्रांसिस्को आर्ट म्यूजियम में मंचन किया गया, में चित्रेश दास कंपनी के साथ नृत्य किया है।

कला के क्षेत्र में आपकी लगन एवं योगदान से इस देश की समृद्ध सांस्कृतिक परंपराएं और समृद्ध हुई हैं। आप आज भी अपने कार्य के माध्यम से लाखों लोगों के लिए प्रेरणा बनी हुई हैं।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: **seema@kathak.org**

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

nari shakti puraskar
Compassion, Ability, Courage
नारी शक्ति पुरस्कार
करुणा, क्षमता, साहस

Ms. Seema Kaushik Mehta

Individual

Ms. Seema Kaushik Mehta is a fine artist, graduated from the Academy of Art University, San Francisco, California in 2002. She also studied with legendary Kathak Maestro Pandit Chitresh Das for several years beginning in 2000. She is currently running a dance institution, Chhandam Nritya Bharati (CNB) which is one of the finest Kathak institutions in India.

Ms. Seema teaches close to hundred students in Mumbai. Her passion lies in teaching the next generation and passing on the knowledge she got from her guru. She believes in bringing social change through the arts. Teaching the Kathak dance form is closest to her heart and she has worked with the children of sex workers of red light area of Kolkata under the New Light Project, and actively teaches children associated with Sri Sri Ravi Shankar Vidya Mandir and SMILE. CNB gives children access to arts education and professional opportunities to teach and perform.

Her aim is to inspire and empower the next generation of artist who can make dance their livelihood while maintaining artistic integrity and attempting to meet the artistic standard set by her Guru. Bringing Classical Indian Dance and Music into the realm of basic education is Seema's ultimate goal as she believes studying and creating Art is as important as studying Language, Math and Science. Currently she is making strides towards this goal through a series of lecture demonstrations and workshops in schools and colleges.

As Creative Director of Kirtilals, Ms. Seema closely works with many women from less advantaged communities and empowers them by encouraging the company to give them important roles. It is rare to find women in the field of jewellery making, but Kirtilals employs a high ratio of women. She has performed extensively across prestigious festivals and venues across India and has danced with the Chitersh Das Dance Company in Darbar, a production staged at the San Francisco's Asian Art Museum in 2012.

Seema's undying spirit and contribution in the field of art has only added value to the rich cultural traditions of this country. She continues to inspire millions through her work.

For more information contact: **seema@kathak.org**

nari shakti puraskar
Compassion, Ability, Courage
नारी शक्ति पुरस्कार
करुणा, क्षमता, साहस

डॉ० सीमा राव

व्यक्तिगत

डॉ० सीमा राव, जो क्लोज–क्वार्टर कॉम्बैट की विशेषज्ञ हैं, भारत की एकमात्र महिला कमांडो ट्रेनर हैं। आपने कई सीमाओं और रूढ़ियों को तोड़ा है और सभी वर्णों की महिलाओं के लिए आप एक सच्ची प्रेरणा बनकर उभरी है।

डॉ० राव, भारत में 20 वर्षों से विभिन्न सशस्त्र बलों के लगभग 15,000 सैनिकों को प्रशिक्षण दे रही हैं और उसके बदले कोई आर्थिक लाभ नहीं ले रही हैं। आप एक कम्बैट शूटिंग प्रशिक्षक, फॉयर फाइटर, स्कूवा गोताखोर, रॉक क्लाइम्बिंग में एचएमआई पदक विजेता और मिसेज इंडिया वर्ल्ड पेजेंट फाइनलिस्ट भी हैं। आपने अपनी युवा अवस्था को बहुत ऊंचाई पर, झुलते हुए जंगलों में, खून जमा देने वाले बर्फीले स्थान, नियंत्रण रेखा तथा कश्मीर घाटी में अन्य दुर्गम स्थानों पर सैनिकों के साथ बिताई है। आपने अपने पति के साथ रिफ्लेक्स शूटिंग का एक स्वदेशी तरीका ईजाद किया, जिसे राव सिस्टम ऑफ रिफ्लेक्स फायर के नाम से जाना जाता है जिससे भारतीय सेना को फायदा हुआ है। रिफ्लेक्स शूटिंग विधि अद्वितीय है और निहत्थे तरीके से कम से कम प्रयास के साथ दुश्मन को जल्दी से बाधा में डाला जा सकता है अथवा अपंग बनाया जा सकता है।

आपने पुलिस, सशस्त्र पुलिस, राज्य पुलिस, अर्ध–सैनिक, सशस्त्र बलों, विशेष बलों के साथ–साथ सम्मानित राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड के ब्लैक कैट्स कमांडो के लिए अनआर्म्ड और आर्म्ड कम्बैट तथा शूटिंग के विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए हैं। आपने महिलाओं के लिए विशेष रूप से उत्पीड़न, छेड़छाड़, यौन उत्पीड़न और बलात्कार से निपटने हेतु उनकी मदद के लिए डेयर (रेप और ईव टीजिंग से बचाव) नामक एक कार्यक्रम भी तैयार किया है, यह कार्यक्रम महिलाओं को मानसिक और शारीरिक रूप से सुसज्जित करता है, ताकि संभावित छेड़छाड, हमलो और अन्य यौन हमलों की प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना किया जा सके।

आपको कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। लेकिन उनके लिए सबसे बड़ा पुरस्कार, भारतीय सशस्त्र बलों को प्रशिक्षित करने से मिलने वाली गहरी संतुष्टि है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: uccamumbai@gmail.com

nari shakti puraskar
Compassion, Ability, Courage
नारी शक्ति पुरस्कार
करुणा, क्षमता, साहस

Dr. Seema Rao

Individual

Dr. Seema Rao, an expert on close-quarter combat, is the only woman commando trainer in India. She has broken past several boundaries and stereotypes and has emerged as a true inspiration to women across all spectrums.

Dr. Rao, has been giving commando training to about 15,000 soldiers of various armed forces in India for 20 years now, without taking any monetary compensation in return. She is also a combat shooting instructor, a firefighter, a scuba diver, an HMI medalist in rock climbing, and a Mrs. India World pageant finalist. She spent her youth with soldiers in high altitudes, scorching desert jungles; freezing snow; LOC and the Kashmir valley. She along with her husband invented an indigenous method of reflex shooting, which is known as the Rao System of Reflex Fire which has benefitted the Indian Army. The reflex shooting method is unique and the unarmed methods can quickly handicap or cripple the enemy with the least effort.

She has conducted various training programmes in unarmed and armed combat and shooting for the police, armed police, state police, para-military, armed forces, Special Forces as well as the esteemed National Security Guard's Black Cats Commandos. She has also designed a program specially tailored for women to help them deal with harassment, molestation, sexual assault, and rape called DARE (Defence Against Rape and Eve Teasing), the program equips women, both mentally and physically, to face adverse situations posed by potential eve teasers, molesters, and other sexual assaults.

She has been bestowed with several National and International Awards. But the greatest award, according to her, is the deep satisfaction she gets from training the Indian armed forces.

For more information contact: uccamumbai@gmail.com

सिस्टर शिवानी

व्यक्तिगत

शिवानी वर्मा, जिन्हें ब्रह्म कुमारी शिवानी या सिस्टर शिवानी के नाम से जाना जाता है, 1995 से ब्रह्मा कुमारि विश्व आध्यात्मिक विश्वविद्यालय में एक शिक्षिका हैं। आप एक प्रेरक वक्ता हैं और आपने मानव व्यवहार से संबंधित विषयों पर प्रेरक पाठ्यक्रम, पब्लिक सेमिनार और टेलीविजन कार्यक्रम संचालित किए हैं। आपने अपने प्रेरणादायक जीवन–परिवर्तन वार्ता के माध्यम से लाखों लोगों का जीवन बदल दिया है। आपके कार्यक्रमों ने लोगों को भावनात्मक तनाव, अवसाद, व्यसनों, कम आत्म–सम्मान और दुःखदायक संबंधों का समाधान करने में मदद की है।

शिवानी वर्मा का जन्म 1972 में पुणे में हुआ। आप 1994 तक विश्वविद्यालय की छात्रा थीं और फिर आपने पुणे में 3 साल तक भारतीय विद्यापीठ कॉलेज में व्याख्याता के रूप में कार्य किया। इस अवधि के दौरान, आपकी माँ ब्रह्म कुमारियों की नियमित अनुयायी थीं। अपनी माँ में उल्लेखनीय परिवर्तन देखने के बाद, आप 1995 में ब्रह्म कुमारियों में शामिल हो गईं।

2007 के बाद से, आप भारत में और भारतीय डायस्पोरा के बीच टेलीविजन श्रृंखला 'ब्रह्म कुमारियों के साथ प्रबोधन' में आपकी प्रमुख भूमिका के कारण आप व्यापकता से जानी जाने लगी। आप वर्ल्ड साइकियाट्रिक एसोसिएशन की सद्भावना अम्बैसडर हैं। सिस्टर शिवानी द्वारा साझा किए गए इस ज्ञान से हजारों लोग लाभान्वित हुए हैं। आपने अनेकों व्यक्तियों को सही रास्ता दिखलाया और उनके जीवन तथा रिश्तों में शांति स्थापित की। आप सम्मेलनों और विशेष आयोजनों में रिश्ते प्रबंधन, कर्म विधि और सुखी जीवन के लिए आध्यात्मिक ज्ञान के बारे में व्याख्यान देती हैं। आप कॉलेजों, अस्पतालों और कंपनियों द्वारा आयोजित सेमिनारों में एक नियमित आगंतुक है।

2014 में, आपको "आध्यात्मिक चेतना में सशक्तता के लिए उत्कृष्टता" हेतु एसोचैम लेडीज़ लीग द्वारा वूमैन ऑफ़ द डिकेड अचीवर्स अवार्ड से सम्मानित किया गया। आपके सकारात्मक और ज्ञानवर्धक विचारों ने कई लोगों के जीवन को एक खुशहाल, सार्थक और पूरा जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित करके साकार किया है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: **shivklight@gmail.com**

Sister Shivani

Individual

Shivani Verma, better known as Brahma Kumari Shivani or Sister Shivani, is a teacher at the Brahma Kumaris World Spiritual University since 1995. She is a motivational speaker and has conducted motivational courses, public seminars and television programmes on a range of topics concerning human behaviour. She has transformed millions of lives through her inspiring life-changing talks. Her programmes have helped people overcome emotional stress, depression, addictions, low self-esteem and unhappy relationships.

Shivani Verma was born in Pune in 1972. Shivani Verma was a university student till 1994 and then she served as a lecturer at Bhartiya Vidhyapeeth college for 3 years in Pune. During this period, her mother was a regular follower of Brahma Kumaris. After witnessing the remarkable change in her mother, she joined Brahma Kumaris in 1995.

Since 2007, she has become increasingly well known in India and among the Indian Diaspora for her leading role in the television series 'Awakening with Brahma Kumaris'. She is a goodwill ambassador of the World Psychiatric Association. Thousands of people are benefited with this wisdom shared by Sister Shivani in a simple way. This further brought many towards the right path and brought peace in lives and in relationships. She appears in conferences and special events to speak about relationship management, law of karma and spiritual wisdom for happy life. She is a regular visitor in seminars arranged by colleges, hospitals and companies.

In 2014, she was awarded a Woman of the Decade Achievers Award by the ASSOCHAM Ladies League "for Excellence in Empowering Spiritual Consciousness". Her positive and enlightening thoughts have shaped the lives of many by encouraging them to lead a happy, meaningful and fulfilling life.

For more information contact: **shivklight@gmail.com**

nari shakti puraskar
Compassion, Ability, Courage
नारी शक्ति पुरस्कार
करुणा, क्षमता, साहस

सुश्री स्मृति मोरारका

व्यक्तिगत

सुश्री स्मृति मोरारका ने बनारस में बुनाई की परंपरा को पुनर्जीवित करने के प्रयास में 1993 में 'तंतुवी' की नींव रखी, जिसका संस्कृत में अर्थ है 'बुनकर'। उन्होंने अधुनिक पहनावे वाले लोगों को ध्यान में रखकर इस वर्ग में प्रवेश कर चुकी कमियों को बदलकर सुविचारित सुधार प्रक्रिया शुरू की। आप श्रमसाध्य बुनाई की सदियों पुरानी तकनीकों को फिर से जीवित करना चाहती है जो अधिक दुष्कर हो सकती है, परंतु निर्मित उत्पाद की गुणवत्ता ही अनूठी थी।

आपने ''साड़ी'' पर अपना पूरा ध्यान दिया क्योंकि आपका मानना था कि साड़ी को फिर से महिलाओं के वस्त्रागार में आकर्षण का केंद्र बनाने के लिए आंदोलन शुरू करने की तत्काल आवश्यकता है। आपने असली जरी जो प्राथमिक घटक है, का प्रयोग किया क्योंकि असली जरी बनाने की सदियों पुरानी प्रक्रिया विलुप्त होने की कगार पर थी।

जिन क्षेत्रों में परिवर्तन की आवश्यकता थी, उनकी पहचान करना आसान था। किंतु उसमे परिवर्तन लाना एक असली परीक्षा थी। आपने सबसे पहले बुनकर समाज का भरोसा जीतकर इसकी शुरूआत की। पूर्व में शहरी प्रभावशाली व्यक्तियों द्वारा जानबूझकर उनका इस्तेमाल करके हटा दिया जाता था। उनका पेशा बहुत सम्मानित नहीं था तथा आय भी अधिक नहीं थी। पिछले 21 वर्षों में, आपने कारीगरों की अपनी टीम का भरोसा जीता है, इन उत्पादों में फेरबदल और परिवर्तन किया है तथा इन उत्कृष्ट उत्पादों के लिए सफलतापूर्वक बाजार ढूंढा है।

आप अपने प्रयास में सफल रहीं तथा न केवल कारीगरों अपित उनके परिवार में महिलाओं एवं बच्चों के जीवन को भी छुआ। आप बुनाई प्रक्रिया की गौण गतिविधियों जैसे कि कताई एवं फिनिशिंग में उनके परिवार की महिलाओं को जोड़ने और इस प्रकार उनको जीविका प्रदान करने में सफल रही हैं।

पिछले दो दशकों में आपकी यात्रा ऐसी यात्रा रही है, जो जीर्णोद्धार से नवाचार की ओर अग्रसर हुई है। हथकरघा बुनाई की सदियों पुरानी तकनीकों को सफलतापूर्वक बहाल करने तथा हाथ से बुनी बनारसी साड़ियों के लिए मांग सृजित करने के बाद अब आप तकनीक एवं फेब्रिक दोनों में नवाचार की ओर अग्रसर हुई हैं ताकि बुनाई में पौराणिक गूढ़ता लाई जा सके।

'तंतुवी' ऐसा प्लेटफार्म प्रदान करने का प्रयास करता है जहां बुनकर समाज की नई पीढ़ी अपने बुजुर्गों से जोश के साथ पुरानी विधि सीख सके और गर्व से बुनाई को अपना मनपसंद पेशा बना सके।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: smriti.m63@gmail.com, smriti@tantuvi.com

nari shakti puraskar
Compassion, Ability, Courage
नारी शक्ति पुरस्कार
करुणा, क्षमता, साहस

Ms. Smriti Morarka

Individual

Ms. Smriti Morarka initiated 'Tantuvi' (1993) which means 'weaver' in Sanskrit as an attempt to revive weaving traditions of Benaras. She embarked upon a well thought out correction process by altering the maladies that had crept into this segment while making adaptations and keeping the modern wearer in mind. She wanted to revive the age old techniques of painstaking weaving which may have been more laborious but the quality of the finished product was unmatched.

Ms. Smriti made 'saree' her focus as she felt an urgent need to initiate a movement to bring the saree back to the centre of a women's wardrobe. She made use of 'real zari' a primary ingredient because the age-old process of making real zari was on the verge of being forgotten.

Identifying the areas that needed change was easier part. Bringing about the change was the real test. She went about it with first winning over the trust of the weaving community. They had been used and discarded, too often by the urban influencers in the past, to trust willingly. There was not enough respect in their vocation and nor was there enough earnings. Over the last 21 years, Ms. Smriti has won over the trust of her team of artisans, has infused alterations and changes and has successfully found markets for these marvellous products.

She was successful in her endeavour and touched the lives of not only the artisans but the women and children in their families. She was able to integrate the women of their households into the peripheral activities of the weaving process such as spinning and finishing, thereby providing them livelihood too.

Her journey over the last two decades has been one that has moved from revival to innovation. Having successfully revived both age old techniques of handloom weaving and having helped create an appetite for hand woven Benarsis, she has now moved towards innovations in both technique and fabric, so as to bring the fabled intricacy in the weaves.

'Tantuvi' endeavours to provide a platform where the younger generation of the weaving community may learn with enthusiasm, from the elders, the method of the old and with pride, may make, weaving their preferred vocation.

For more information contact: smriti.m63@gmail.com, smriti@tantuvi.com

nari shakti puraskar
Compassion, Ability, Courage
नारी शक्ति पुरस्कार
करुणा, क्षमता, साहस

सुश्री स्नेहलता नाथ

व्यक्तिगत

प्रकृति, इंसानों तथा प्रौद्योगिकी के बीच सामंजस्यपूर्ण संतुलन स्थापित करने की दिशा में 26 वर्ष समर्पित करने के बाद भी सामाजिक कार्यकर्त्री स्नेहलता नाथ का यह मानना है कि यह शुरूआत मात्र है।

2013 में ग्रामीण विकास के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का प्रयोग करने के लिए प्रतिष्ठित जमनालाल बजाज पुरस्कार प्राप्त करने वाली स्नेहलता नाथ नीलगिरी बायोस्फियर रिजर्व के ग्रामीण आदिवासी क्षेत्रों में पारिस्थितिकी विकास, आजीविका तथा संपोषणीयता के क्षेत्र में बड़े पैमाने पर कार्य कर रही हैं। भयावह गरीबी तथा शेष विश्व से दूरी जिससे ये आदिवासी जूझ रहे हैं, के कारण नीलगिरी को फोकस के क्षेत्र के रूप में चुना गया।

आपने 'की–स्टोन फाउंडेशन' की नींव रखी, जो पारिस्थितिकीय तथा अर्थव्यवस्था के मूल पहलुओं पर बल देता है, जिसमें पहाड़ों के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी का विकास, जैव विविधता एवं देशज समुदायों, वनों, उनकी जीविका एवं संस्कृति का परिरक्षण एवं संवर्धन शामिल है।

आदिवासियों के लिए अनेक आवश्यकता–आधारित प्रौद्योगिकियां शुरू की गई हैं, जो परंपरागत एवं आधुनिक प्रौद्योगिकयों का मिश्रण हैं। यह बेहतर प्रौद्योगिकी अच्छी गुणवत्ता, के उत्पादों तथा मूल्य–वर्धित कृषि एवं वन उत्पादों का उत्पादन करने में उनकी मदद करके ग्रामीणों की समस्याओं को हल करने में समर्थ हुई है तथा उनमें स्वतंत्र उद्यमियता की भावना जगाने में भी सफल हुई है।

की–स्टोन फाउंडेशन इस समय अनुमानतः 15,000 व्यक्तियों के साथ तीन राज्यों में 135 देशज समुदायों में कार्य कर रहा है। की–स्टोन नॉन टिम्बर फोरेस्ट प्रोडक्ट्स (एनटीएफपी) जैसे, शहद की खोज, एपीकल्चर, सामुदायिक आरोग्यता, संस्कृति, क्षमता निर्माण, पर्यावरणीय अभिशासन, नेटवर्क, जल एवं स्वच्छता, जैव विविधता एवं जीर्णोद्धार, जैविक खेती एवं उद्यम जैसे विषयों पर कार्यक्रम एवं अनुसंधान संचालित करता है।

आपने आदिवासियों के जीवन में दखल दिए बगैर या नुकसान पहुंचाए बगैर आदिवासियों एवं शेष विश्व के बीच अंतर को सफलतापूर्वक पाटने का काम किया है। सतत प्रयासों से आदिवासियों ने आज अनेक वस्तुओं, विशेष रूप से शहद एवं मोम का उत्पादन करने के लिए स्वतंत्र समूहों का निर्माण किया है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: sneh@keystone-foundation.org

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

nari shakti puraskar
Compassion, Ability, Courage
नारी शक्ति पुरस्कार
करुणा, क्षमता, साहस

Ms. Snehlata Nath

Individual

After dedicating 26 years to creating a harmonious balance between nature, humans and technology, social worker Ms. Snehlata Nath, still feels that it is just the beginning.

Recipient of the prestigious Jamnalal Bajaj Award for Application of Science and Technology for Rural Development in 2013, she has been extensively working in the field of eco-development, livelihood, and sustainability in rural tribal areas of the Nilgiri Biosphere Reserve. The Nilgiris was chosen as the focus area due to the abject poverty and remoteness that these tribes face, from the rest of the world.

She laid foundation of the Keystone Foundation which focuses on the core aspects of ecology and economy, which includes developing appropriate technology for the mountains, preserving and enhancing the biodiversity and indigenous communities, forests, their livelihoods, and culture.

Many need-based technologies – that blend the traditional and modern – have been introduced to the tribals. This better technology has been able to ease the problems of the villagers by helping them to produce good quality and value-added agricultural and forests produce, and have also ushered a sense of independent entrepreneurship among them.

Keystone foundation currently works in 135 indigenous communities across 3 States with an estimated number of 15000 individuals. Keystone runs programmes and research within the themes of NTFP (Non-Timber Forest Products), Honey Hunting, Apiculture, Community Wellness, Culture, Capacity Building, Environmental Governance, Networks, Water & Sanitation, Biodiversity & Restoration, Organic Farming and Enterprises.

Snehlata has successfully bridged the gap between the tribal communities and the rest of the world without intruding or harming their lifestyle. With her consistent efforts, tribal communities today have formed independent groups for producing several natural goods-especially honey and beeswax.

For more information contact: sneh@keystone-foundation.org

nari shakti puraskar
Compassion, Ability, Courage

नारी शक्ति पुरस्कार
करुणा, क्षमता, साहस

सुश्री सोनिया जब्बर
व्यक्तिगत

सुश्री सोनिया जब्बर चाय बगान की मालकिन तथा वन्यजीव संरक्षणकारी हैं। आपको 2011 में अपने परिवार से दार्जिलिंग जिले में 1200 एकड़ का नक्सलवाड़ी चाय बागान विरासत में मिला तथा आपने देखा कि हर गुजरते साल के साथ आपके चाय बागान में आने वाले हाथियों की संख्या बढ़ रही है। असम एवं महानंदा घाटी से होते हुए नेपाल जाने और आने के दौरान हाथियों का परंपरागत प्रवास मार्ग तराई दुआर बेल्टा से होते हुए है। मेची नदी पर बंगाल की सीमा पर नेपाल द्वारा 17 कि.मी. लंबी बाड़ के निर्माण के कारण हाथियों से सड़क जाम हो जाती थी तथा वे उनके चाय बागान एवं आसपास के खेतों की ओर मुड़ जाते थे। इसके अलावा, विकास कार्यों जैसे कि नई कलोनियों, फ्लाईओवर, हाइवे, कारखानों एवं रेलवे ट्रैक के निर्माण के कारण परंपरागत एलीफेंट कोरिडोर में विघ्न उत्पन्न हो रहे थे जिसके कारण इंसानों से उनका सीधा टकराव होता था।

आपने अपने बागान से उनके आने पर उनका स्वागत करने का निर्णय लिया। हाथी जानते हैं कि चाय की कतारों के मध्य कैसे चलना होता है । पिछले 6 वर्षों में, नक्सलवाड़ी बागान ने हाथियों के लिए विश्राम के सुरक्षित स्थल के रूप में काम किया है तथा खाने के लिए उनको फल एवं टहनियां प्रदान की हैं। आपने हाथियों की सहायता के लिए तीन सूत्रीय कार्यक्रम तैयार किया है। पहला हाथियों, का पीछा करने तथा उनको नुकसान पहुंचाने के लिए बाहर वालों को बागान में घुसने से रोकने के लिए बागान के सुरक्षा कर्मियों को प्रशिक्षित करना है। मवेशी प्रवेश करते हैं तो गार्ड उनके आने–जाने के लिए 400 मीटर चौड़े गलियारे का निर्माण करते हैं। दूसरा जैव विविधता के संरक्षण तथा हाथियों के लिए आश्रय एवं चारा उपलब्ध कराने के लिए बागान में 100 एकड़ में देशी वन प्रजातियों के सृजन के लिए महत्वकांक्षी ई–बाइडिंग परियोजना है। तीसरा बागान के कर्मचारियों के बच्चों के लिए हाथी साथी नेचर क्लब है जिसके लिए 130 बच्चों ने साइन अप किया है। आपका मानना है कि इनमें से 5 में भी पर्यावरण के प्रति स्नेह एवं संरक्षण की भावना पैदा हो जाएगी तो हमारे गृह के बचने की आधी संभावना हो जाएगी।

आप पड़ोसी किसानों के लिए प्रायोगिक फसल बीमा योजना भी आजमा रही हैं। आपके प्रयासों के लिए, मोंटाना विश्वविद्यालय तथा डब्ल्यूएफईएन, यूएस ने अपने बागान को हाथी हितैषी चाय बागान के रूप में प्रमाणित किया है तथा भारतीय वन्य, जीव न्यास ने इसे उत्तर बंगाल का ग्रीन कोरिडार चैंपियन घोषित किया है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: sonia.jabbar@gmail.com

Ms. Sonia Jabbar
Individual

Ms. Sonia Jabbar is a tea planter and wildlife conservationist. She inherited her family's 1,200 acre Nuxalbari Tea Estate in Darjeeling district in 2011, and noticed that the number of elephants visiting her tea estate was growing with each passing year. Elephants have a traditional migration route through the Terai Dooars belt when travelling between Assam and the Mahananda basin to Nepal and back. With Nepal having constructed a 17 km long fence along the border with Bengal at the Mechi river, the elephants were hitting a road block and getting diverted to her tea estate and neighboring farmlands. Additionally, a rash of development activities- new colonies, flyovers, highways, factories and railway tracks were disrupting traditional elephant corridors, bringing them into direct conflict with humans.

She decided to welcome them whenever they entered her estate. The elephants know how to move in between rows of tea. Over the past six years, Nuxalbari estate has served as a safe resting place for elephants, with fruits and shoots to eat. She has developed a three- pronged programme to help the elephants. The first is to train the estate's security personnel to stop outsiders from entering the property to chase and harm the elephants. When the animals enter, the guards create a 400 m wide corridor for them to pass through. The second is an ambitious re-wilding project to create a 100 acre native species forest on the estate, both to conserve biodiversity and to afford shelter and forage for the elephants. Third is the Haathi Saathi Nature Club for the children of the estate workers, for which 130 children have signed up. She believes that "Even if 5 of them grow up to love and protect the environment, our planet has half a chance".

She is also attempting a pilot crop insurance project for neighbouring farms. For her efforts, the University of Montana and WFEN, US, have awarded the estate Certified Elephant Friendly Tea Estate and the Wildlife Trust of India declared it a Green Corridor Champion of North Bengal.

For more information contact: sonia.jabbar@gmail.com

nari shakti puraskar
Compassion, Ability, Courage
नारी शक्ति पुरस्कार
करुणा, क्षमता, साहस

डॉ० सुजाता मोहन

व्यक्तिगत

डॉ० सुजाता मोहन राजन आई केयर हॉस्पीटल प्रा० लि० में कार्यपालक चिकित्सा डॉक्टर हैं, जहां नेत्र की सर्वग्राही देख रेख की जाती है। आप रोटरी रंजन आई बैंक की निदेशक भी हैं तथा चेन्नई विज़न चैरिटेबल ट्रस्ट में मुख्य समन्वयक भी हैं। आप फैको, कार्नियल ट्रांसप्लांट सर्जरी तथा रेफ्रैक्टिव सर्जरी की विशेषज्ञ हैं।

आपने चेन्नई विज़न चैरिटेबल ट्रस्ट के माध्यम से 3500 से अधिक निःशुल्क नेत्र शिविर लगाए हैं तथा मोतियाबिंद के 80,000 से अधिक ऑपरेशन किए हैं। लोगों के मन में नेत्रदान के महत्व को बताने के लिए आपने रोटरी रंजन आई बैंक के माध्यम से अथक प्रयास किया है, जो लोगों के जीवन को वास्तव में बदल सकता है। रोटरी रंजन आई बैंक के माध्यम से आपने 6500 से अधिक कार्नियल ट्रांसप्लांट किया है। आपका मुख्य उद्देश्य चेन्नई तथा इसके आसपास के जिलों में ग्रामीण एवं निर्धन लोगों को कम से कम बुनियादी न्यूनतम नेत्र सेवा प्रदान करना है।

आपके नेतृत्व में समाज के सभी वर्गों के लिए बुनियादी न्यूनतम नेत्र सेवा तथा गुणवत्तापूर्ण नेत्र देखरेख की सुविधा प्रदान करने वाली अनेक परियोजनाएं संचालित की जा रही हैं । आप जर्नलिस्ट एसोसिएशन ऑफ इंडिया, चेन्नई पुलिस, अनाथ बच्चों के लिए बाला मंदिर सेवा समिति के लिए व्यापक निःशुल्क नेत्र जांच की सुविधा भी प्रदान करती हैं । आपने चेन्नई विज़न चैरिटेबल ट्रस्ट के तत्वाधान में 200 से अधिक सीएमई कार्यक्रम, 3500 नेत्र शिविर आयोजित किए हैं, टीवी, आकाशवाणी और एफएम चैनलों के माध्यम से आंखों की सामान्य बीमारियों पर अनेक जागरुकता कार्यक्रम, नेत्रदान जागरुकता कार्यक्रम जैसे कि वार्षिक रैली, स्कूली बच्चों के लिए पेंटिंग प्रतियोगिता, सार्वजनिक सेमीनार एवं प्रिंट तथा इलैक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से प्रचार कार्यक्रम आयोजित किए हैं और मधुमेय के रोगियों के लिए 320 शिविर तथा स्कूल स्तर पर 645 शिविर आयोजित किए हैं।

आपने 20000 से अधिक रेफ्रैक्टिव सर्जरी, 30,000 इंट्रा ओकुलर लैंस इम्पलांट सर्जरी तथा 6500 कार्नियल ट्रांसप्लांट सर्जरी की है। समाज के लिए आपके कार्य और योगदान की कोई तुलना नहीं है। आप अनेक लोगों के जीवन में परिवर्तन का स्रोत बनी हैं। आपके कार्य को बड़े पैमाने पर सराहा गया है तथा आपको अनेक उल्लेखनीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: **mohan_sujatha@hotmail.com**

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

nari shakti puraskar
Compassion, Ability, Courage
नारी शक्ति पुरस्कार
करुणा, क्षमता, साहस

Dr. Sujatha Mohan

Individual

Dr. Sujatha Mohan is the executive medical doctor, at the Rajan Eye Care Hospital Pvt. Ltd where one is assured of comprehensive eye care. She is also the Director of Rotary Ranjan Eye Bank and is also the Chief Facilitator at Chennai Vision Charitable Trust. She is a specialist in Phaco, Corneal Transplant Surgery and Refractive Surgery.

Her contribution has been immense and she has performed more than 3500 free eye camps through Chennai Vision Charitable Trust and has performed over 80,000 Cataract Surgeries. She has relentlessly put her efforts to sow the seed in the minds of the public the importance of eye donation-a mighty deed which can indeed change one's life through Rotary Rajan Eye Bank. Through Rotary Rajan Eye Bank she has performed more than 6500 corneal transplants. Her main motive is to provide at least the basic minimum eye service to the rural and poor population in Chennai and its adjoining Districts.

Several projects aiming at facilitating basic minimum eye services and quality eye care for all sections of the society are being run under Dr. Sujatha's leadership.. She also provides free comprehensive eye checkups for Journalist Association of India, Chennai Police, Balamandir Seva Samiti for orphan children. She has conducted over 200 CME Programs, 3500 Eye Camps under the aegis Chennai Vision Charitable Trust, carried out several awareness programs on common eye ailments through TV, AIR and FM Channels, eye donation awareness programs like Annual Rallies, painting competition for school children, public seminars and publicity through print an electronic media and has organised 320 camps for diabetic patients and 645 camps at the school level.

She has performed more than 20,000 Refractive Surgeries, 30,000 Intra Ocular Lens Implantation Surgeries and 6500 Corneal Transplant Surgeries. Her work and contribution to the society has very few parallels. She has been a motor of change in lives of many people. Her work has been widely acknowledged and she has been felicitated with several notable awards.

For more information contact: **mohan_sujatha@hotmail.com**

सुश्री सुनीता देवी

व्यक्तिगत

सुश्री सुनीता देवी, जो कि रानी मिस्त्री (मास्टर प्रशिक्षक) हैं, ने स्वच्छ भारत मिशन–ग्रामीण के अंतर्गत पिछले तीन वर्षों में 1600 से भी अधिक महिलाओं को मिस्त्री के रूप में प्रशिक्षित किया है। स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) के अंतर्गत, सही तकनीक, विशेषकर द्वि–गड्ढा शौच तकनीक अथवा संबंधित स्थान के आधार पर किसी अन्य उपयुक्त तकनीक आदि का प्रयोग करते हुए शौचालय की सुविधा उपलब्ध कराए जाने को प्राथमिकता प्रदान की गई है। शौचालयों के निर्माण का कार्य परंपरागत रूप से पुरुष मिस्त्रियों, जिन्हें 'राज मिस्त्री ' कहा जाता है, द्वारा ही किया जाता रहा है।

तथापि, झारखंड के कुछ जिलों में महिलाएं भी मिस्त्री बनने की इच्छुक रही हैं और उत्साहित रही है। इससे प्रेरित होकर और पूरे राज्य में बड़े पैमाने पर हर घर में शौचालय बनाए जाने के लिए मिस्त्रियों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए राज्य सरकार ने प्रत्येक जिले में महिला मिस्त्रियों के संवर्ग, जिन्हें रानी मिस्त्री कहा जाता है, को प्रोत्साहित और प्रशिक्षित किया है। इस पहल के अंतर्गत सुनीता देवी जो कि रानी मिस्त्री हैं, जिन्हें अन्य रानी मिस्त्रियों का मास्टर प्रशिक्षक लगाया गया है। पिछले तीन वर्षों में आपने स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) के अंतर्गत 1600 से भी अधिक महिलाओं को मिस्त्रियों के रूप में प्रशिक्षित किया है। आपने इस अभियान के लिए अपनी स्वच्छाग्रही के रूप में नियुक्त किया गया। आपने स्थानीय स्व–सहायता समूहों का गठन करने और स्थानीय नेतृत्व का निर्माण करने में सहायता प्रदान की है।

सुनीता देवी जो कि एक गृहिणी, रानी मिस्त्री और परिवर्तन की अभिकर्ता हैं, महिलाओं के स्वास्थ्य और स्वच्छता के जवलंत मुद्दे से प्रेरित होकर सभी को 'स्वच्छ गांव' के दायरे में लाने के अभियान का नेतृत्व किया। इन सबसे कहीं अधिक आपने दूसरी महिलाओं को अपने अंतर्निहित कौशलों को पहचानने और अपने–अपने गांवों को खुले शौच से मुक्त करने में अपना योगदान देने के लिए प्रेरित किया।

गांवों की बेहतरी के लिए आपके योगदान से लोगों के व्यवहार में परिवर्तन की प्रक्रिया का शुभारंभ हुआ। आज आपको अपने जिले और राज्य में सर्वोत्तम स्तर के प्रशिक्षकों में गिना जाता है। आप अपने जिले में अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणास्रोत हैं और आपका गांव उत्कृष्टता केंद्र बन चुका है, जिसे अन्य गांवों की रानी मिस्त्रियां देखने के लिए आती हैं।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: eedwsd.latehar@gmail.com

Ms. Sunita Devi

Individual

Ms. Sunita Devi, Rani Mistri (Master Trainer) under the Swacch Bharat Mission- Grameen (SBM-G), in the last three years has trained over 1600 women as masons under the mission. Under the Swacch Bharat Mission (Grameen), access to toilets has been given priority using the correct technology-preferably, the twin pit toilet technology or other suitable technology given the concerned terrain, etc. Building toilets has usually been a role performed by masons- a profession traditionally limited to men, also known "Raj Mistris".

However, in some districts of Jharkhand, the women have been quite motivated and enthusiastic about becoming masons. Inspired by this and to meet the masonry requirements to build large scale individual household toilets across the state, a cadre of women masons, popularly known as Rani Mistris, have been encouraged and trained by the state government in each district. Under this initiative, Sunita Devi is a Rani Mistri who has also been engaged as a Master Trainer for other Rani Mistri. In the last three years, she has trained over 1600 women as masons under the Swachh Bharat Mission (Grameen). She offered her services to the campaign and was recruited as a Swachhagrahi. She has helped in the formation of local Self-Help Groups and build local leadership.

Inspired by the burning issue of women's health and sanitation, Sunita Devi, a housewife, a Rani Mistri and a change maker, led the campaign to bring everyone under the purview of SwachhGaon (Village). Most of all she encouraged other women to identify their inherent skills and contribute to making their villages open defecation free (ODF).

Her contribution to the villages set in motion a collective behaviour change process. Today Sunita is recognized as one of the best quality trainers in her district as well as State . She is a source of inspiration for other women in the district as well, and her village has become a centre of excellence for exposure visits for Rani Mistris from other villages as well.

For more information contact: eedwsd.latehar@gmail.com

nari shakti puraskar
Compassion, Ability, Courage
नारी शक्ति पुरस्कार
करुणा, क्षमता, साहस

सुश्री ट्विंकल कालिया
व्यक्तिगत

सुश्री ट्विंकल कालिया वस्तुतः नारी शक्ति का मर्म दर्शाती हैं। आप और आपके पति दिल्ली में एक दर्जन से अधिक एम्बुलेंस चलाते हैं और जरूरतमंद लोगों को मुफ्त एम्बुलेंस सेवा प्रदान करते हैं।

आपको उस समय मौत का नजदीकी से सामना करने का अनुभव हुआ था जब आप लीवर कैंसर से पीड़ित थीं। इस अनुभव ने आपके जीवन के प्रति दृष्टिकोण बदल दिया और आपने समाज की सेवा करने का फैसला किया। एंबुलेंस ने जीवन और मृत्यु के बीच अंतर बना दिया है। आप खुद एम्बुलेंस चलाती हैं और गरीबों को सेवाएं प्रदान करती हैं।

आपकी एम्बुलेंस सेवा के माध्यम से कई गर्भवती महिलाओं को सहायता प्रदान की गई है। यह उन बहुत से जीवन के लिए एक वरदान साबित हुआ है जिन्हें समय पर अस्पताल पहुँचाया गया। हमारे समाज की एक कड़वी सच्चाई यह है कि एम्बुलेंस सेवाएं आमतौर पर शवों या लावारिस शवों को ले जाने से इनकार कर देती हैं, तथापि सुश्री ट्विंकल की एम्बुलेंस सेवा इन कलंकों से ऊपर उठकर दाह संस्कार के शवों को अस्पतालों से श्मशान तक ले जाती हैं। आपकी यह पहल एक मजबूत संदेश देती है कि प्रत्येक जीवन मूल्यवान है और मायने रखता है।

अब तक एंबुलेंस सेवा के माध्यम से 4000 से अधिक लोगों की जान बचाई जा चुकी है। आपने हमारे समाज के प्रमुख मुद्दों में से एक को सुलझाने का प्रयास किया है। आपने जीवन की बुरी स्थितियों को बहुत करीब से अनुभव किया है और इसका अनुभव ही इस पहल के पीछे प्रेरक शक्ति थी। सुश्री ट्विंकल की एम्बुलेंस सेवा, इस समय समाज के लिए एक जरूरत है जो गरीबों और दलितों के लिए एक वरदान है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: sbshelp58712@gmail.com

nari shakti puraskar
Compassion, Ability, Courage
नारी शक्ति पुरस्कार
करुणा, क्षमता, साहस

Ms. Twinkle Kalia
Individual

Ms. Twinkle Kalia truly signifies the very essence of Nari Shakti. Twinkle and her husband run a dozen of ambulances in Delhi and provide free ambulance services to those in need.

Twinkle had faced near death experience when she was diagnosed with liver cancer. This experience changed her perspective to life and decided to serve the society. The ambulances have made the difference between life and death. Twinkle herself drives the ambulance and provides services to poor.

Several pregnant women have been assisted with Twinkle's ambulance service. It has proved to be a boon to many lives that were transported to the hospital in a timely manner. The harsh reality of our society is that Ambulance services usually refuse to carry dead bodies or unclaimed bodies. However, Twinkle's ambulance service is above these stigmas and carries bodies from hospitals to crematorium. Twinkle's initiative gives a strong message that each life is valuable and matters.

Till date over 4000 lives have been saved through Ambulance service. Twinkle has addressed one of the key issues in our society. She has experienced life threatening situations very closely and it was this experience which was the driving force behind this initiative. Twinkle's ambulance service is what the society needs at the moment which is a boon to the poor and downtrodden.

For more information contact: sbshelp58712@gmail.com

सुश्री उर्मि बासु

व्यक्तिगत

सुश्री उर्मि बासु असाधारण साहस वाली महिला हैं, जो कोलकाता के वेश्यावृत्ति वाले इलाके में यौन कर्मियों के बच्चों के जीवन में सुधार लाने के कार्य में संलग्न हैं। कोलकाता में 'न्यू लाइट' नामक अलाभकारी संगठन की स्थापना करके उर्मि बसु ने वेश्यावृत्ति वाले इलाके में यौन कर्मियों के बच्चों के लिए आशा की एक नई किरण जगाई है।

'न्यू लाइट' संगठन कोलकाता के कालीघाट नामक वेश्यावृत्ति वाले जिले के भीतरी भाग में एक मंदिर की छत से चलाया जा रहा है, जो सामुदायिक विकास के लिए व्यापक सेवाएं प्रदान कर रहा है। उर्मि बसु और उसकी टीम पिछले 15 वर्षों से यौन कर्मियों के उपेक्षित और प्रायः अपमानित बच्चों को शिक्षित करने और उन्हें बेहतर जीवन जीने के अवसर प्रदान करने के लिए एक मिशन के रूप में अथक प्रयास कर रहा है।

इस परियोजना के अंतर्गत यौन कर्मियों के बच्चों को विशेष रूप से शाम के समय, जब गलियां सर्वाधिक खतरनाक बन जाती हैं और जब उनकी माताएं काम में लगी होती हैं, सुरक्षित स्थान मुहैया कराया जाता है। यौन कर्मियों के बच्चे यौन व्यापार में प्रवेश न करें, इसके लिए उर्मि बसु ने हिंसा से प्रभावित बच्चों के लिए सुरक्षित स्थान उपलब्ध कराए हैं और शिक्षा तथा जीवन कौशल प्रशिक्षण के माध्यम से जेण्डर समानता और सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया है।

'न्यू लाइट' ने पोषाहारीय सहायता प्रदान करने तथा आपात सहायता, टीकाकरण, चिरकालिक बीमारियों और जीवन शैली से जुड़े रोगों के उपचार जैसी स्वास्थ्य देखरेख सेवाओं तक पहुंच को सुगम बनाने में भी प्रमुख भूमिका निभाई है। यह संगठन पिछले एक दशक से भी अधिक समय से सम्पूर्ण यौन कर्मी समुदाय को व्यापक स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान कर रहा है।

'न्यू लाइट' यौन कर्मियों के बच्चों को सहायता प्रदान करने के अलावा महिलाओं को आवासीय सुविधाओं और देखरेख, उपचारात्मक शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण तथा आय सृजन के अवसर, लिंग आधारित हिंसा के विरूद्ध कानूनी सहायता और समर्थन, सामुदायिक चिकित्सालयों, मनो–सामाजिक परामर्श आदि जैसी सेवाएं भी मुहैया कराता है।

'न्यू लाइट' की बुनियादी स्तर पर कार्य करने की प्रकृति दूसरों की मदद करने के बारे में उर्मि के दृढ़ संकल्प को रेखाकिंत करती है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: basu.urmi@gmail.com, info@newlightindia.org

Ms. Urmi Basu

Individual

Urmi Basu, a woman of extraordinary courage and compassion has been instrumental in changing lives of children of sex workers in the red- light area of Kolkata. By laying foundation of 'New Light', a non profit organization in Kolkata, Urmi Basu has given a new ray of hope to the children of sex workers in the red light area.

New Light operates from the terrace of a temple deep inside the red-light district of Kalighat, Kolkata and offers comprehensive community development services. For the last fifteen years, Urmi Basu and her team have been working relentlessly in a mission to educate and provide better lives to the ignored, neglected and often humiliated children of sex workers.

The project provides the children of sex workers a safe haven, particularly in the evening hours when streets are the most dangerous and the mothers are working. To prevent children of sex workers from entering the sex trade, Urmi Basu has created safe spaces for children affected by violence and has promoted gender equality and empowerment through education and life- skills training.

New Light has also been central in providing nutritional support and facilitating access to healthcare services like emergency support, immunization, treatment for chronic illnesses and lifestyle diseases. It has been providing comprehensive healthcare to the entire sex workers community for over more than a decade.

In addition to providing support to the children of sex-workers, 'New Light' offers services like residential facilities and care, remedial education, vocational courses and income generation opportunities for women, legal aid and advocacy against gender based violence, community clinics, psycho-social counselling etc.

It is the grass root nature of New Light that best underscores Urmi's conviction about helping others.

For more information contact: basu.urmi@gmail.com, info@newlightindia.org

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

Sakhi
One Stop Centre
सखी वन स्टॉप सेंटर

वन स्टॉप सेंटर/आपकी सखी आशा ज्योति केंद्र

संस्थागत

'सखी' नाम से लोकप्रिय लखनऊ में स्थित वन स्टॉप सैंटर (ओएससी) है जो कि हिंसा से प्रभावित महिलाओं को एक छत के नीचे चौबीसों घंटे समेकित सेवाएं जैसे कि एफआईआर पंजीकरण, विधिक सहायता एवं कानूनी परामर्श, चिकित्सा सहायता, सामाजिक–मनोवैज्ञानिक परामर्श, अस्थायी आश्रय तथा रैस्क्यू की सुविधा के साथ महिला हैल्पलाइन 181 जैसी सेवाएं प्रदान करता है।

इसके अलावा, महिला हैल्पलाइन 181 के टेली काउंसलर वन स्टॉप सैंटर पर भी तैनात हैं तथा हिंसा से प्रभावित महिलाओं को टेली काउंसलिंग प्रदान करते हैं। इससे विपदाग्रस्त महिलाओं को समन्वित सहायता प्रदान करना संभव होता है तथा महिलाओं को प्रदान की जाने वाली सेवाओं को गुणवत्ता का सुनिश्चय होता है। इस समन्वित सहायता के फलस्वरूप हर रोज लखनऊ की हजारों महिलाएं ओएससी से सेवाएं प्राप्त करने में समर्थ होती हैं तथा आज तक की स्थिति के अनुसार ओएससी लखनऊ में 16162 मामले दर्ज किए गए हैं।

ओएससी लखनऊ अनेक मुद्दों पर कार्रवाई करता है तथा लखनऊ में जागरुकता फैलाने की गतिविधियों में बड़े पैमाने पर शामिल है। लखनऊ के विभिन्न भागों से सफलता की अनेक कहानियां सामने आई हैं तथा उनको समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं द्वारा व्यापक रूप से शामिल किया गया है। महिलाएं राज्य एवं केंद्रीय स्तर पर महिला कल्याण की अनेक योजनाओं से भी जुड़ी हैं। ओएससी लखनऊ महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए तथा वित्तीय दृष्टि से उनको आश्वस्त करने के लिए सीएसआर पहलों के सहायता से कौशल विकास की अनेक गतिविधियों का भी संचालन करता है।

ओएससी लखनऊ का उद्देश्यों महिलाओं के लिए सुरक्षित स्थानों का सृजन करना है जहां वे स्वच्छंद रूप से आ जा सकें और अपने सरोकारों को व्यक्त कर सकें। यह ओएससी में सेवाएं प्रदान करने वाली महिलाओं में विश्व एवं भरोसा का माहौल सृजित करता है। ओएससी में प्रत्येक प्रकरण को अनोखे प्रकरण के रूप में लिया जाता है तथा ओएससी लखनऊ का स्टाफ महिलाओं के लिए न्याय का सुनिश्चय करने की दिशा में अथक रूप से कार्य कर रहा है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: dmluc@nic.in

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

One Stop Center/Apaki Sakhi Asha Jyoti Kendra

Institutional

Popularly known as the Aapki Sakhi Asha Jyoti Kendra, One Stop Centre (OSC) Lucknow facilitates 24x7 integrated services to women affected by violence under one roof such as registering FIRs, providing legal aid and legal counselling, medical aid, psycho-social counselling, temporary shelter and 181 women helpline facility with rescue van support.

Further tele-counsellors of 181 Women Helpline are also stationed at the One Stop Centre and provide telecounselling support to women affected by violence. This facilitates coordinated assistance to the distressed women and ensures quality services to women. As a result of this coordinated assistance each day several thousand women across Lucknow are able to avail services at OSC and as on date over 16162 cases have been registered at OSC Lucknow.

OSC Lucknow caters to a wide range of issues and is extensively engaged in awareness generation activities across Lucknow. Several success stories emerge from different parts of Lucknow and is widely covered by newspapers and magazines. Women are also linked to several women welfare schemes at the State and the Central Level. OSC Lucknow also undertakes several skill development activities with the support CSR initiatives to empower women and make them financially secure.

OSC Lucknow aims at creating safe spaces for women where they can freely walk in and express their concerns. It creates an atmosphere of trust and confidence among women availing the services at the OSC. Each case at the OSC is treated as unique one and the staff at OSC Lucknow is working relentlessly towards ensuring justice to women.

For more information contact: dmluc@nic.in

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

Qasab

कसाब–कच्छ क्राफ्टस वुमेन प्रोडयूसर कं. लि.

संस्थागत

nari shakti puraskar
Compassion, Ability, Courage
नारी शक्ति पुरस्कार
करुणा, क्षमता, साहस

कच्छ भाषा में कसाब का अर्थ है शिल्प कौशल। वर्ष 1997 में शुरू हुई पहल कसाब का मिशन ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाना, स्थानीय नेतृत्व को बढ़ावा देना और महिलाओं को आजीविका के साधन उपलब्ध कराना था। कसाब ने न केवल कच्छ के दूरदराज के इलाकों में कढ़ाई कारीगरों के लिए स्थायी आजीविका के अवसर पैदा किए, बल्कि उनकी रचनात्मकता को व्यक्त करने के लिए एक मंच भी प्रदान किया।

जो महिलाएं पहले अपने सुंदर दस्तकारी उत्पादों को कम कीमत पर बिचौलियों को बेचती थीं, वे अब एक समूह का हिस्सा थीं, जहां उन्होंने वो मांगा जो उनके लिए उचित था। आज, कसाब एक सामूहिक, सामाजिक–सांस्कृतिक उद्यम है, जिसमें कच्छ के शुष्क इलाके वाले 62 गांवों में रह रहे 11 जातीय समुदायों के 1,200 ग्रामीण मास्टर शिल्पकार शामिल हैं।

कसाब को प्रामाणिक कच्छ कढ़ाई, एप्लीक और पैचवर्क उत्पादों की उत्कृष्ट गुणवत्ता के लिए जाना जाता है। कशीदाकारी के वाणिज्यीकरण के पहले कुछ दशकों में, शिल्प को सामान्य कच्छ की कढ़ाई या सिर्फ शीशे के काम' के रूप में जाना जाता था, जबकि कच्छ में कढ़ाई का काम करने वाले समुदायों में से प्रत्येक की अपनी अलग शैली और समृद्ध रूपांकन थे। कसाब पहल का लक्ष्य प्रत्येक संजाति समूह की इस विशिष्टता को कलात्मक कार्य के माध्यम से उनकी अनूठी कढ़ाई शैली को उजागर करके संरक्षित करना है ताकि इसे केवल जेनेरिक कच्छ की कढ़ाई के रूप में ही संदर्भित न किया जाए। कसाब के उत्पाद, हरिजन मेघवार, कच्छ राबरी, सोढ़ा राजपूत, मुतवास, धनेटा जाट और सिंधी मेमन की पारंपरिक कढ़ाई शैली को दर्शाते हैं। उत्पादों की कीमतें स्वयं ग्रामीण महिला शिल्पकार प्रतिस्पर्धा और निष्पक्षता के आधार पर निर्धारित करते हैं। कसाब उत्पादों के प्रतिफल सीधे महिला शिल्पकार को मिलते हैं और अधिशेष की राशि को पहल के विकास गतिविधियों में निवेश किया जाता है।

कसाब–कच्छ क्राफ्टसमैन प्रोडयूसर कं. लि. को 15वीं फेडरेशन ऑफ गुजरात इंडस्ट्रीज, 2018 में उनके काम के लिए पहचान मिली है। कसाब ने ग्रामीण शिल्पकार और उनकी शिल्पकारी को वस्तुतः मुक्त किया है। इसने महिलाओं को सामूहिक रूप से संगठित होने और आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक नेतृत्व करने में सक्षम बनाया है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: **qasab.kmvs@gmail.com**

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

Qasab

Qasab - Kutch Craftswomen Producer Co. Ltd.

Institutional

nari shakti puraskar
Compassion, Ability, Courage
नारी शक्ति पुरस्कार
करुणा, क्षमता, साहस

Qasab in Kutchi means craft skill. Empowering of rural women, fostering local leadership and providing women with livelihood means was the mission with which 'Qasab' initiative came into being in 1997. Qasab not only created a sustainable livelihood opportunities for embroidery craftswomen in the remote areas of Kutch, but also become a platform for them to express their creativity.

Women who earlier sold their beautiful handcrafted products to middlemen at low prices were now part of a collective where they demanded what they deserved. Today, Qasab is a collective, socio-cultural enterprise comprising 1,200 rural master craftswomen from 11 ethnic communities spread across 62 villages in the arid interiors of Kutch.

Qasab is known for its outstanding quality of authentic Kutch embroidery, appliqué and patchwork products. In the first few decades of commercialization of embroideries, the craft had been referred to as generic Kutchi Embroidery or just ` mirror work whereas, each of the communities doing embroidery work in Kutch had their distinct styles & rich motifs. The Qasab initiative aimed at preserving this uniqueness of each ethnic group by highlighting their unique embroidery styles through the artistic work so that it is not just referred to as generic Kutchi embroidery. The Qasab products reflect the traditional embroidery styles of Harijan Meghwars, Kutchhi Rabaris, Sodha Rajputs, Mutwas, Dhaneta Jats, and Sindhi Memon. The prices of the products are determined by the rural craftswomen themselves as being competitive and fair. The returns from QASAB products go to the craftswomen and any surplus is re invested in the development activities of the initiative.

Qasab Kutch Craftswomen Producer Company Ltd has been recognised for their work at 15th Federation of Gujarat Industries, 2018. Qasab has truly emancipated the rural craftswomen and their craftsmanship. It has enabled women to mobilize and organize themselves into collectives and take economic, political, social and cultural leadership.

For more information contact: **qasab.kmvs@gmail.com**

समाज कल्याण एवं पौष्टिक आहार कार्यक्रम विभाग

संस्थागत

माननीय प्रधान मंत्री द्वारा 22.01.2015 को बेटी बचाओ बेटी पढाओ (बीबीबीपी) का शुभारंभ किया गया। सरकार के इस प्रमुख कार्यक्रम का उद्देश्य घटते हुए बाल लिंग अनुपात और पूरे जीवन–क्रम में महिला सशक्तीकरण के मुद्दे का समाधान करना है। इस स्कीम का उद्देश्य जेंडर पक्षपात आधारित लिंग चयनित विलोपन की रोकथाम करना है ताकि बालिकाओं का अस्तित्व, सुरक्षा उनकी शिक्षा और भागीदारी सुनिश्चित हो सके।

यह स्कीम 640 जिलों में क्रियान्वित की जा रही है, जिसमें 405 जिले बहु–क्षेत्रक कार्रवाई के तहत आते हैं और शेष 235 जिले मीडिया, एडवोकसी और आउटरीच के अंतर्गत आते हैं। सामाजिक कल्याण और पौष्टिक आहार कार्यक्रम विभाग, तमिलनाडु राज्य इस संबंध में विशेष रूप से अच्छा प्रदर्शन करता रहा है। बीबीबीपी स्कीम का विस्तार तमिलनाडु के 31 जिलों में किया गया है, जिसमें 11 जिले बहु–क्षेत्रक कार्रवाई के तहत और शेष 21 मीडिया, एडवोकसी और आउटरीच गतिविधियों के अंतर्गत आते हैं।

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय की स्वास्थ्य प्रबंधन सूचना प्रणाली (एचएमआइएस) के अनुसार 917 (अप्रैल से मार्च 2017–18 तक जनवरी, 2018 तक) की तुलना में तमिलनाडु राज्य ने 943 (अप्रैल से मार्च 2014–15) जन्म के समय लिंगानुपात में सुधार का रुझान दिखाया है। राज्य ने राज्य स्तर पर विभागों के साथ अभिसरण में विभिन्न जागरूकता सृजन गतिविधियों की शुरुआत की है और योजना के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए जिलों को सहायता प्रदान की है।

विभाग, अन्य संबंधित विभागों, सीएसओ और राज्य स्तर पर बालिकाओं के कल्याण के लिए कई अन्य राज्य विशिष्ट योजनाओं के साथ अभिसरण में बहुत स्पष्ट परिभाषित रणनीतियों सहित काम करता है। स्वःसहायता समूहों, जिला प्रशासकों और राज्य अधिकारियों और राज्य पुलिस अधिकारियों के लिए लिंग संवेदीकरण प्रशिक्षण हेतु जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। विभाग विभिन्न पहलों के माध्यम से जागरूकता पैदा करने और जमीनी स्तर से बदलाव लाने के लिए समुदाय के साथ मिलकर काम कर रहा है, जिससे बालिकाओं के महत्व के लिए सकारात्मक वातावरण का निर्माण हो।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: swsec@pn.gov.in

Social Welfare and Nutritious Meal Programme Department

Institutional

Beti Bachao Beti Padhao (BBBP) was launched by the Hon'ble Prime Minister on 22.01.2015. as one of the flagship programmes of the Government to address the declining Child Sex Ratio and related issues of empowerment of women on a life-cycle continuum. The objective of the scheme is to prevent gender biased sex selective elimination, ensuring survival and protection of the girl child and ensuring education and participation of the girl child.

The Scheme is being implemented in 640 districts wherein 405 districts are covered under multi-sectoral action and remaining 235 districts are covered under Media, Advocacy & Outreach. The Social Welfare and Nutritious Meal Programme Department, State of Tamil Nadu has been performing particularly well in this regard. The BBBP Scheme has expanded across 31 districts in Tamil Nadu wherein 11 districts are covered under multi-sectoral action and remaining 21 are covered under media, advocacy & outreach activities.

State of Tamil Nadu has shown improving trend in Sex Ratio at birth standing at 943 (April to March 2017-18 till January, 2018) as compared to 917 (April to March 2014-15) as per Health Management Information System (HMIS) of Ministry of Health and Family Welfare. The State has initiated various awareness generation activities in convergence with the departments at State level and has provided support to districts for effective implementation of Scheme.

The Department works in convergence with the other concerned Departments, CSOs and also with various other State specific schemes for welfare of the girl child at State level with very clear defined strategies. Awareness programmes were organised for self-help groups, district administrators and state officers, and gender sensitisation training for the State police officers. Department has been closely working with the community for creating awareness and bringing change from ground levels through various initiatives, thereby, creating positive environment for value of girl child.

For more information contact: swsec@pn.gov.in